



श्री वीतरागायनमः

जैनं तत्त्व प्रकाश

॥ अथ श्रीनमोष्कार महामन्त्र ॥

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमोआयस्सिआयं

णमो उवञ्जायाणं, णमो लोए, सब्ब साहुणं

एसो पंचणमोष्कारो सब्ब पावप्पणासगो मंगलाणं

च सब्बेसि पठमं ह्वइ

मंगलं ॥ १ ॥

अथ सबइया घनासरी चालरा लिख्यते॥

बोधे आरे केरा वर्ष तीन भाड़ी आठ महिना,

वाकी रखा जदवीर मुगत पधान्या है ।

रीछे जिन शासनमें मोटा मुनिराज थया,

आप तिन्या संसार थी, घणा जीव तान्या है

सम्बत अठारे पनरंके साल, चेत सुदि नवम,

शुक्रवार दिन निहव नेकाल्या है ।

द्वेष करी देव गुरु धर्मतीमें भेद करी,

खोटो मत झाल्यो सठा ज्यांनें गुरु धान्या है
सवइयो सवायो कीनो घनासरी नामदीनो,

कृपा राम कहै खेवो पार दया पाल्यां हैं ॥१॥

चौवीसमा महावीर देव ज्यांनें चूका कहै,

ज्यांके नाम सेती माथो मुण्डी माग खावै है

गुरु गीतारथ दया देखी काढ्यो संसार थी,

ज्यांकी निन्द्याकर सठ जनम गमावै है

जीवके वचावै मांहे पाप कहै दश आठ,

कां करा मेलीनें वोघा लोकानें वहकावै है

देव गुरु धर्म तीन, तीनांमें वतावै भिन्न,

सिद्ध पावडेमें कह्यो न्याय नर्क जावै है

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

कृपाराम कहै दया पुन्यवान पावै है ॥२॥

सात निहव आगे हूवा उवाईमें जिन कह्या,

आठमो निहव सिद्ध पावडियेमें चाल्यो है

वाणियेको सुत ग्राम कंटालेको वासी गुरु,

गीतारथ दया देखी दुखसों निकाल्यो है

अविनीत हुवो गुरांकर दियो जुवो, मोह कर्म

उदय हुवो सठ ग्योटो मय झाल्यो है ।

चूका कहै देव सत गुरांमें बतावे दोष,

जीव वचायां पाप कैंवें, बोले जिन झाल्यो है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

कृपाराम दया धर्म पुन्यवान झाल्यो है ॥३॥

जीव दया सुत्रां माहि ठाम ठाम कही जिन,

जीवके वचायां पाप फटेही न जाणी है ।

इशमें अंगरे मांह ज्ञाती दीनो फुरमाय,

सव जीव दया काज कही जिन वाणी है ।

सूत्र आगम टीकाचूर्णी पयन्ना मांह,

जिहां तिहां जोवो जीव दया ही बखाणी है ।

दया रुचै कोई पुन्यवानरं घट मांह,

निहव कसाई मांस खावै जिणां ताणी है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

ज्ञानीका वचन सत्य हिरदैमें आणी है ॥४॥

श्रेणिक राजारे सुत हाथी भव दया पाली,

मगरथ राजा दया काज धायो मरणो ।

धम रुचि दया धार कर गया खेवो पार,
 श्रेणिक पड़हो वजायो सूत्रोंमें निरणो ।
 नेम जिन दया पाली छोड़ दी राजुल नारी,
 मेतारज दयापाली मेट दियो मरणो ।
 तेवीसमां जिनराय तापसके पासे जाय,
 जीवाने वचाय दियो नवकारको सरणो ।
 सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,
 जीव दया धर्म पालो जोथे चाहो तिरणो ॥५॥
 आज्ञामें आलस मत करो जिन वयण सुणी,
 आज्ञा बाहिर उद्यमतूं कदे मति कीजिये ।
 आज्ञा तीन प्रकार केरी कही जिनवर ज्ञान,
 समकित चारित्र चित्त दीजिये ।
 धर्म दोय प्रकार सूत्र चारित्र सार,
 मिथ्यात्वीरी करणी कहो किण मांहि लीजिये ।
 आहार तणो इधकार उत्तराध्यन मंझार,
 छकारण छोडिये छकारण कर लीजिये ।
 सबइयो सवायो कीनो घनासरी नामदीनो,
 जिन मग्न नै नै नन्ननाये गहीजिये ॥६॥

तिहव निकल इण भांत अधिकाइ कीनी,
 आरज्यानें पास बैठी राखे सारो दित्ररे ।
 छेद उत्तराध्ययन माहिं ज्ञानी दीनो फुरमाय,
 वाडमाहें दोष नहीं वस रहे मन रे ।
 थाप रूप दोष नहीं लगावां इम कही जुदो ।
 क्षेत्रवताय नित्तरोज बहिरं अन्तरे ।
 दया दान पूछ्यां कपटाइ सहित जुवाव देवें,
 जहर जहर वटकेसुं मिल्या अन्यो अन्त्यरे ।
 सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,
 कृपाराम दया धर्म धारे सोई धन्य रे ॥७॥
 श्रावकरो खाणो पीणो गहणो अवृत कहै,
 उवाइसुत्र सुयगडांगजी वतावै है ।
 गहणा कपडाने आवृत कहै ज्याने कहणो,
 गृही लिंगी केवल पाय मुगत क्यों जावै है ।
 श्रावकने तीर्थ सुभ्रती कख्या जिन मुख्य,
 अराधक सेतीकी अवृत वधावै है ।
 व्रत अव्रत पर नामा केरी कही जिन,
 चौफरसी पुद्गल नजर न आवे है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

निहव कपट कर बोधाने वहकावै है ॥८॥

पडिमा धारी श्रावकने दान दियां पाप कहै ।

किसो पाप हुवे कहो निहवानें कैवणो ॥

तीन करण तीन जोग पाप रातो त्याग हुवा ।

जिनजी वतायो पडिमामें माग लेवणों ।

निहव कपट करी बोधा आगे इम कहै ।

साधूके जो आहार बचे वानें क्यो नही देवणो ॥

कल्प संभोग मिल्यां विना लेवे देवे नहीं ।

कपट क्या करो सठ कित रोक रैवणो ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

पारख्यातो करो बहते लारे नहीं वैवणो ॥ ९ ॥

श्रावकरे तीन करण तीन जोग त्याग हुआ ।

भगवती सूत्रमांहे वीरजी वतायो है ।

अंबडजी श्रावकरा सातसे ही शिष्यलारे ।

तीन करण तीन जोग पाप वोसरायो है ॥

श्रावकने दशा श्रुत स्कन्धमें श्रमणा भूत कयो ।

उवाईमें जिन सुसाह व्रलायो है ॥

ज्ञाताजी सूत्र मांह ज्ञानी दियो पुरमाय ।

श्रावकनी समाप्रत श्रावक नाम पायो है ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

श्रावकने जहर बटको कहणो फटे आयो है ॥१७॥

कवाड़ देहेडी जिणमांह नहो साधपणो ।

उत्तराध्ययन अध्ययन पेंतीसमां वतावे है ॥

जिहां नहो कवाड़ देहेडी पहवो नाम जिहां ।

मनोहर इत्यादिक रखां दोष थावे है ॥

बृहदकल्प मांह रहणो साधुने अभङ्ग दुवार ।

आरज्यांने रहणो जठे पडदो बंधावे है ॥

गोचरीकी पटी करो नाम ले निखंधे ज्यांने ।

कहणो गोचरीमें साधु आरज्यांजी जावे है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

कवाड़ निखेधीचटा कवाड़या जमावे है ॥ ११ ॥

भगवती शतक पनरमें कैरो नाम लेई ।

चौवीसमां महावीर ज्यांने चूका कैवे है ॥

अणुकम्पा करी जिन आपरो वचायो शिक्ष ।

अछता ओंगण बोली माथे आल देवे है ॥

समणा समणी कोई नदी मांहेँ बहता होवै ।

आज्ञाने उल्लङ्घ साधु आप काढ़ लेवे है ॥

अनुकम्पा कीजै जिनपारको मिटायो दुःख ।

उत्तराध्ययन अध्ययन पनरमें जँवै है ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

ज्यांको खेवो पार जिन वचनामेंरैवै है ॥ १२ ॥

कालादिक वार करो मरण बतायो वीर ।

सोमल मरण जिन नेमजी बतायो है ॥

तिल छोड़ मांहेँ तिल वीरजी बताया अर ।

मरण गोसालेकेरो वीरजी जनायो है ॥

द्वार कारो दाहनेम जिण भाख्योंसेँ मुख ।

नाग श्रीरी हीला निन्द्या ज्ञाता मांही आयो है ॥

महा शतक श्रावक रेवतीको मरण कह्यो ।

गौतमजी मूंकी जिन प्रायच्छित्त दिरायो है ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

आगम विहारी देख्यो जिम फुरमायो है ॥ १३ ॥

पुन्य पाप आज्ञामें नहीं आज्ञावार नहीं ।

छन्दवारो कियो तेरे दुवारमें युंगावै है ॥

धनमें नो ५ गम लोकां ~ १ कतै केम ।

आज्ञा माहें पुन्य आज्ञा बाहिर पाप थावे हें ।

ज्वाह सूत्र माहें ज्ञानी दीनो फुरमाय ।

आज्ञा बाहिर पुन्य बंधे देवतामें जावे हें ॥

गोसालो जमाली जाण तापसादि तज प्रण ।

देव हुवें आराधक पद नहिं पावें हें ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

आज्ञाका अराधक सुख मुगतीको पावें हें ॥ १४ ॥

साधु आरज्यारें महाव्रत नववाड माहें ।

ओछे अध केरो पाठ कटेही न आयो हें ॥

आरज्यांनै पहलो व्रत भांग चोथो राखणेको ।

वीतराग देव ऐसो धर्म न वतायो हें ॥

आरज्यांनै कवाड देवण खोलणेको नाम ।

साधु विनां न्यारो सठ मूढे सुं उठायो हें ॥

कवाड देवण खोलणेको नाम आयो जठे ।

साधु आरज्यारो पाठ भेलोइ बोलायो हें ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नामदीनो ।

बृहत्कल्पमें आरज्यांनै पडदो बंधायो हें ॥ १५ ॥

थाप दोष लग्गावे जिणांमिं नहीं साधपणो ।

कपट सुं बोले सठ ज्यानें इम कैवणो ॥

आडम्बर काज इण भांत पच्चक्खाण देवे ।

दरशन विना थे आश्रव नहीं सेवणो ॥

केई गांम जावै इम सोगन करावै ।

दुपच्चक्खाण उपदेश साधूने नहीं देवणो ॥

दरशण आवे केई आरम्भ करावे आय ।

भाव नाही भावे यूं साधूनें नहीं लेवणो ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

पारख्या तो करो वहते लारे नहीं वैवणो ॥ १६ ॥

राय प्रसेणी सै परदेशी राजा मुनीपासे,

समझ्यानें व्रत लिया पीछे दान दियो है ।

आरम्भ सहित दानादिक प्रश्न पूछै,

सुयगडांग मांहै मुनिराज मून लियो है ।

दशमें अङ्गमें दान देवणो निषेधे जैनें,

वीतरागदेव झूठा बोलो चोर कह्यो है ।

दान दया सूत्रां मांहि ठाम ठाम कही जिन,

दान दया निषेधे जिणको फूटो हियो है ।

सवइयो सावायो कीनो घनासरी नाम दीनो;

दान दया रसकेई पुन्यवान पियो है ॥१७॥

केसी समणनें चित्र प्रधान कइयो,

परदेशी धर्म सुण्यां पणी दया पालसी ।

समण भिक्षारी सुख डंड कर थोड़ो लेसी,

दोपड़ चोपड़ घणा जीवानें डवारसी ।

आगम विहारी चित्र परधान सेती कइयो,

जाके हाथे धर्म आवे चार बोल धारसी ।

उपायसुं राजानें प्रधान लायो मुनिपासे,

वाणी सुणी राजा जाण्यो येही गुरु तारसी ।

सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

राजनें असार जाण्यो देखी ज्ञान आरसी ॥१८॥

अनन्त चौबीसी सब दान दे संजमलीधो,

देवे देसी अनन्ती चौबीसी जिन कयो है ।

दान दियो वीर ज्यानें परीसह उपना,

कहै सठ ज्याने कइयो दान मली जिन दियो है ।

पहर छदमस्त रही केवल ज्ञान लही,

आठू ही करम दही शिव सुख लियो है ।

चौदह प्रकार दान पड़ी लाभ कयो जिन,

नव भांत पुन्य न्यारो समुच्चयमें रयो है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

निहव गाडर जेम भइये लारे भइयो है ॥१९॥

वालकनीं बोली बोल बारी शुद्ध नहीं जिम,

निन्हवने वेस्या भांड तीनुं लज्या रहितरे ।

भांड बोले विकल वेस्याके नहीं शील शर्मा,

निन्हव कहै चूका देव गुरुमांहे केहतरै ।

चोरादिक सुतने सिखावै चोरी तरवानो,

जिम निहवाके दया रहित बाण देतरै ।

मूजी पणो कपटपन दया रहित हुवै कुसङ्ग,

निन्हवाको मत झाले एता बोले सहितरे ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

निन्हव कोयल जिम नहीं हुवै स्वेतरै ॥२०॥

अभिप्रहो धारी मुनिराज काया वोसराई,

आगको परी सहो हुवे तोही नहीं निकलणो ।

कोई काढ़वाने आय मुनीतणोतन सहाय,

सागारी निकाल वंछै उनींको उवरणो ।

जीवको वचावणो निशीथ मांहे दूजे पद,

वारमे सतरमें उद्देसे मांहे निरणो ।

ठाणांग मांहे कलह मिटायां कोलाभ फलो,

जीवणो वंछणो कसो भगवतीमें वरणो ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

जीको खेवो पार दया धरमको सरणो ॥२१॥

कपट करीने सठ सुत्रोंको नाम लेई,

जीवणो मरणो नहीं वंछणो वतायो है ।

आहारादिक लाय धाळी तरे पोखे शरीरने,

ढांढादिक देखी झटवेस्तुं टल जावे है ।

इम कहां कहे हमे संजम जीवण वछा

कपट की फही जड़ आगे पलटावे है ।

कोई अनारज आय साधाने परी सहो देवे

श्रावाक वचावे जीनों पापकिम थावे है !

सवइवो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

संधारेको नाम गोपी बोधाने वहकावे है ॥२२॥

साधुने छकारणां सुं आहार करणो छोड़नों कस्यो

उत्तराध्ययन अध्ययन छत्रीसमें वखाणिये ।

आहार करवाको न्याय ज्ञानी दिया फुरमाय

ज्ञाता अध्ययन दुजेअठारेमें जाणिये ।

दशमी कालक वत्तीस बंध आजीवकानो

आहार कन्या धर्म कैवे सूत्र अणजानिये ।

धर्मक्षयोपशम भाव माहे कह्यो जिनमुख

आहारादिक उदय भाव हिरदेमें आणिये

सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

ममता उत्तारी जीयां शिव सुख माणिये ॥ २३॥

दुजे अंग जिन कह्यो प्राक्रमनो इधकार

अज्ञानीको अशुद्ध ज्ञानीको शुद्ध भाखीयो

तेवीशमी गाथा पद चौथेमाहे टीकावाले

पुन्य बंधकयो निर्जराको नहीं दाखियो ।

सुयगडागमें कह्यो मिथ्या कर मास मास

संसारमें रुले कपटाइ सत्य राखीयो ।

निहव कपटक बोधां आगे इमकहे

मिथ्यात्वी आज्ञाके वारे करणीमें नाखियो

सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

मिथ्यात्वी मिथ्यात एक अनुयोगद्वार साखियो ॥२४॥

सूत्र सिद्धान्त सार चाहे हृदयमें धार

निहवांको मत जाणो झूठ कपटाई हैं ।

छोड़ निहवांको संग हान रूप लागो रंग

दयादान रुचि जांफी यही ही पुन्याई है ।

गुरु गीतारथ भेटी मिथ्यामत दियो भेटी

क्षमाको सागर भेटया सुखदाई है ।

छत्ती ऋद्धि छिटकाय संजमसुं मनलाय

सुगणा मगन मुनि बड़ा गुरु भाई है ।

सवइवो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

कृपा राम दयावान कीरत सवाई है ॥२५॥

उगणीसे साल वत्तीस सवइया कीना

छत्रीस सुणमति कीजो रीस हृदमें धारजो

चारबोले नरके जाय कछो ठाणा अंगमांय

ओरही सिद्धान्त सुण हृदय विचारजो

जीवके वचाया मांही झानी पाप कछो नांही

अज्ञानीके वचेनांने दूराइं निवार जो ।

अनन्ते चौवीसे जिनधमं कछो भिन्न भिन्न

इम नहीं कछो मत जीवाने उवार जो ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

कृपाराम कहै जीव दया नित पालजो ॥२६॥

* इति *

अथ कुराडलिया लिख्यते ।

गृहस्थीके घर साधने, वैठण वरज्यो वीर ।
 कार लोप वैठे कदा, वधे पापकी सीर ॥
 वधे पापकी सीर, भ्रष्ट संजम सुं भाख्यो ।
 दशमी काल अध्ययन, छट्टेमें जिनवर दाख्यो ॥
 सुद्ध संजम आराधतां, पहुंचे भवजल तीर ।
 गृहस्थीके घर साधने, वैठण वरज्यो वीर ॥ १ ॥
 जरा रोग तपस्या करी, दुरबल थयो शरीर ।
 तिण कारण वैठणतणी, आज्ञा दी महावीर ॥
 आज्ञा दी महावीर, मान तज सूत्र देखो ।
 विन कारण नहीं कछो, वैठणो सूत्र पेखो ॥
 मदवावी से जिण तणा, कल्पातीत गुण धीर ।
 जरा रोग तपस्या करी, दुरबल थयो शरीर
 तिण कारण वैठण तणी, आज्ञा दी महावीर ॥२॥
 निन्हव काढी भावना, बोला बांने आय
 लीधा झोली पातरा, लारे चाल्या जाय
 लारे चाल्या जाय, पूठ दो नारी ऊठी
 पूठ्यांकहीं निरदोष, कपटसूं वोले झूठी

रसनारा गृद्धी थका, जिहां लावे जिहां स्याग
निन्हव फाडी भावना, घोला घाने भाग ॥३॥
दोष बतावे पारका, पोते घोर अंधार
रोगान सपेतो हींगल, चित्राम बहुत प्रकार
चित्राम बहुत प्रकार, थाप घोचा भरमाघे
पूख्यां नहीं दे जवाघ, नहीं सिद्धान्त बतावे
वोघा गुर चेला मिल्या, नहीं पूछे निग्धार
दोष बतावे पारका, पोते घोर अंधार ॥४॥
गृहस्थीके घर जायनें; निन्हव कथा सुणाय
बृहत्कल्पमें वरजियो, तीजे उद्देशामाय
तीजे उद्देशे मांह एक गाथाको भाख्यो
वहां नहीं विस्तार वही कारण सुं दाख्यो
कथा भट्ट ज्यूं मांडियो, नहीं सूत्रको न्याय
बड़े घरांमें जायने, निन्हव कथा सुणाय ॥५॥
निन्हव महा सत्यांकहें, बैठी राखे पास
उत्तराध्ययनमें जिन कथो, होवे शील विनाश
होवे शील विनाश, लोकमें अपजस थावे
विन भायां वह पास राखता लाज न आवै

बोधा गुरु चैला मिल्या, नहीं पृछनें त्रास
निहव कैवे महा सत्यां, वैठी राखे पास ॥६॥

जिन कल्पीनें वरजिया, चार बोल जिन आप
निहव तीन छिपायनें देवै वाड़ उथाप
देवै वाड उथाप, कपट बोधा भरमावै
समझ्या करै पिछान, अजाण्यां गोता खावै
निहव करता कपट सूं, एक बोल उत्थाप
जिन कल्पीने वरजिया, चार बोल जिन आप ॥७॥

जङ्गलमें लै आतापना, नहिं समणी आचार
उपासरे मै रैवणो, कपड़ो बांधी वार
कपड़ो बांधी वार, वृहत्कल्पमें आयो
पांचमें उद्देशे माहिं, श्रीमुख आप बतायो
कवाड़ जड़ वोना कह्यो, लो हिरदैमें धार
आरज्यांने रहवणो, कपड़ो बांधी वार ॥८॥

महा सत्यांनाम धरायनें, संजाव पटली देव
दो झोल्यां ले हाथमें, धव धव करती वेव
धव धव करती वेव सीखले भेला जावे
साधू स्वांग वणाय, जिणांको लायो खावै

व्यवहार सूत्रमें वरजियो, चिन कारण नहिं लेव
 महा सत्यां नाम धरायने, नंजाव पटली देव ॥९॥
 निहवाकूं पहुंचाइवा, गृहस्थी जावें लार
 आगे जाय त्यारी करे, भोजन बहुत प्रकार
 भोजन वहीत प्रकार, त्यार कर भावना भावें
 बोलावाने जाय, तुरत पातर लें आवें
 रसनारा गृद्धि थका, जिहां लोवें जिहां खाय ।
 निहवाकूं पोहचायवा, गृहस्थी लारें जाय ॥१०॥
 भट्टारक भ्रामर कहै, जती खमासण बोल ।
 निहव कै वै भावना, ये तीनों सम तोल ।
 ये तीनूं सम तोल, बुलायां तीनूं जावें ।
 निहव साध केवाय सांग लेइ भेख लजावें ।
 बोधा गुरु चेला मिला, नहिं आचारको तोल ।
 भट्टारक भ्रामर कहै, जती खमासण बोल ॥११॥
 गोसालांने देखिया, अन्यमत वध्या अनेक ।
 जमालीने क्योँ दियो ज्ञानी प्रत्यक्ष देख ।
 ज्ञानी प्रत्यक्ष देख, तिलांको छोड़ बतायो ।
 बोधाने इम कहै, इणीमें सब गुण थायो ।

जिन सोमल ब्राह्मण तणो, मरणो कह्यो विशेष ।
 जो जो कारण जिन कह्या, आगम ज्ञानी देख ॥१२॥
 आहार देवै भावसूं, थानै पासे आण ।
 रजी-आदिक देखनें, देवै फूंक अजाण ।
 देवे फूंक अजाण, देख पाछा विर जावो ।
 आडा फिर कहैं लो, तुरत अशुद्ध बतावो ।
 मारगादि करे कारणे, बतलाओ बहु बार ।
 था कारण हिंसा हुई, केम रहे आचार ॥१३॥
 काठा बंधन बाधिया, भात करी अंतराय ।
 इत्यादि करियां कह्या, अतीचार जिनराय ।
 अतीचार जिन राय, भात अधिके रोदीयो ।
 गाढ़ा बन्धन देख, तेह ढीला कर लीयो ।
 अतीचार लागो किसो, थे निखधो किस न्याय ।
 काठा बन्धन बांधिया, भात करी अन्तराय ॥१४॥
 कह्यो लगाणे पातरे, तीन पसल्ली तेल ।
 चंदरस देनो किहां, कह्यो कहो मानकूं मेल ।
 कहो मानकूं मेल, रात राखन किहां आयो ।
 दशमी काल अध्ययन छठे; गृहस्थी समो बतायो ।

निहव घोघा आगले, यूंही चलावे फेंल ।
 कण्ठो लग्गणो पातरे, तीन पसल्ली तेल ॥१५॥
 जनम गांठ आदिक करी, मद्योच्छ्रव मांड्यो धूड ।
 निहव साध फेहवाय कर, करे जमारो धूड ।
 करे जमारो धूड, वीरने चूका भाखे ।
 पोताको निरदोप, पणों घोघाने दाखे ।
 झूठ कपट निहव तणो, जांगी रह ज्यो दूर ।
 जनम गांठ आदिक करी; मद्योच्छ्रवमांड्यो धूड ॥१६॥
 वारी पाणी आहारकी, वांधी भर भर लाय ।
 निहव साधकेवायने, आधा कर्मी खाय ।
 आधा कर्मी खाय, हियेमें इतनी आणे ।
 निरदोपण लें आहार, जिणांसु झूठी ताणे ।
 रसनारा गृद्धी थका, आहारादिकने जाय ।
 वारी पाणी आहारकी, वांधी भर भर लाय ॥१७॥
 वाहर दिशा अरु गोचरी, गृहस्थी राखें लार ।
 आचारांग निशीथमें, वरज्यो ते दिलधार ।
 वरज्यो ते दिलधार, तइयादिक माहे वैहरें ।
 जो सूत्र मांहि निपेध, करे ते आपणे महरें ।

वोघा गुरु चेला मिला, नहिं पूछे निरधार ।
 बाहर दिशा अरु गोचरी, गृहस्थी राखै लार ॥१८॥
 करे जाब तो घर तणो, खोली देखो चीत ।
 लेख करावे हाजरी, या तो कूडी रीत ।
 आतो कूडी रीत, केम परतीत न आवै ।
 जो हीवे परतीत नित्त क्यूं लेख करावै ।
 आगे जिन कीधी नहीं, नहीं वताई रीत ।
 करे जाबतो घरतणो, खोली देखो चीत ॥ १९ ॥
 आधा कर्मी आहारको, परतिख दीसे दोष ।
 हिया फूट भेला हुवै, पूजै वोघा लोक ॥
 पूजै वोघा लोक, हिये एती नहिं आणे ।
 निरदोषण जल आहार, किणी तरे लेतो जाणे ॥
 मीठो पाणी राखनो, आहारादिक दै लोक ।
 आधा कर्मी आहारको, परतक्ष दीषै दोष ॥ २० ॥
 वोघाने भर मायवा, निह मांडी जार ।
 कह कोडी कह कांकरा, पाटी रीगट कार ॥
 पाटी रीगट कार, लेख अंधाही वचावे ।
 जो देखणनें जाय, राग रंग करीं रिझावै ॥

अण समझो भग्नी पड़े, नमस्तु करे विचार ।

बोधानें भरमायवा, निहय माड़ी जात ॥ २१ ॥

बिन कारण नहिं सुधपणो, निप्रंथी साथ विदार ।

तुच्छ पलेवण नहिं गत्यणो, नही उद्देशादिक आहार

नहीं उद्देशादिक आहार, भलोकर भूं होगेर ।

दोय बड़ी दिन रखां, ज्जागदिकनें पलिंये ॥

साथ आरज्यां साथ रहे, नहीं निशीन अगिहार ।

बिन कारण नहीं सुधपणो, निप्रंथी साथ विदार ॥२२॥

नित लावै जो एकण घरनें, वारामें एक आहार जी ।

दशमी कालिक तीजेमें कणो, साथु नहीं अणाचारजी

गाथा ॥

श्रीवीर जिनन्द अनुकम्पा कीधी, फोरी, लविध गोसालो

बचायो ।

छलेइया छद्मस्थके होती, मोह कर्मवत्त गगन आयो ॥१॥

जीव उठाय छायां मेले तो, जाय महाप्रत पांचू ही

भागी या गाथा १९ मी बोल ४९ मा ॥

ब्राहमन जिमायां तमतमा पाँहचावै साख उत्तराध्य-

यन १४ में संजतीरी बचाबच्च लागियां अणुकम्पा साथ

करे ३, पहला महाव्रत पूरा पड़िया आडा जडै किवाड
जी, कूंटा आगल होडा अटकावे, ते निश्चय नहीं अणा-
गारजी १ निह्वारा लेख है ।

॥ जवाब ॥

मोलमें जो दाम देई, जोर सुं बचायो कोई

उपदेश दै समझाय जीव बचावियो

कारण चारमें सुं एक कारज कियो

किणमांहे नफो किण मांहे दोष थावियो

इम कहां कहै एक उपदेश माहीं धर्म

तीन मांहे पाप इम उत्तर बतावियो

इम कहे ज्यानें केणो कारणमें पाप हैंके

कारजमें पाप हेके दोनों मांहे आवियो

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

उपदेश आसरो ले बोधानें बहकावियो ॥२७॥

भगवती शतक पहले उद्देसे दूजामें कह्यो

साधुजीमें तीन भली लेश्याका उचारजी

आचारांग श्रुत स्कन्द दूजे अध्ययन पनरमें

भली लेश्या आयां जिन हुवै अणगारजी

भगवती शतक नवमे उद्देशे इगतीसमाहें

भली तीन लेस्या आगममें अधिकारजी
ठाणा अंगठाणे तीजे दूजे उद्देशेमें घणा

पन्नवणापद उत्तराध्ययन विस्तार जी
सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

लेस्याका लक्षण सुण हिरदं विचारजी ॥२८॥

गोसालाने वीरजी वचायो जी सुं चूका केवै

कुहेत लावै सठ झूठा देवै आलजी

निहव कपट कर बोधा आगे इम कहै

उवार्यां हो लाभ क्यों नीराख्या अणगारजी
इम कहै ज्यांने केणो केवली त्रिकाल जाणे

सावत्थी क्यों आया कर जावता विहारजी
आउखो निमित्त आयो जांणी लियो जिनराज

मेल्या नहीं दूर वज्यां राखियो व्यवहारजी
सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

वीरजीने चूका कहै डूवा कालीधार जी ॥२९॥

निशीथ उद्देशे ग्यारमांमें वीर भांगा चार कद्या

साधु ओर आरज्यांने भेला नहीं रैवणो

व्यवहार उद्देशे पांचमांमें साधु छतां मुनिः

आरज्यां कै पास वचन प्रायश्चित्त नही लेवणो
निशीथ उद्देशे चौथे साधु संज्ञा कियां बिना

आरज्यां रे उपासरे प्रवेश न कैवणो
साधु आरज्यांने एक उपासरे आहारादिक मने

बृहत कल्पमें उद्देशे तीजे केवणो
सवइयो सवायो कीनो घणासरी नाम दीनो

कारण सु आहारादिक लेवणो न देवणो ॥३०॥
निह्व कपट कर बोधाने बतावे पाठ

साधु आरज्यांने भेलो भोगणोनै रैवणो
व्यवहार उद्देशे सातमांमें एसो पाठ नाही दीखै

कठे किम वोलो पाठ देखावो यूं कैवणो
उत्तराध्ययन सोलमें अध्ययन तीजी वाडमां है

स्त्री बैठे घड़ी दोय जर्हा नहीं ठैवणो
उत्तराध्ययन निशीथ व्यवहार बृहत्कल्प आदि

स्त्रीको परचो वरज्यो पाठ देख लेवणो
सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

स्त्रीको कर फरसे ज्यांने डंड काई कैवणो ॥३१॥

अचित्त द्रव्यादिक संती कोई पुन्यवान आप

आपको तो पाप टारे दूजाको टरायो है

अशुभ योग आश्रव मांहे लियो कसो

शुभ योग संवरमें ईमें किरियो पायो है

सनतकुमार तीजे देवलोक ऋद्धि पाई

चारों ही तीरथने सुख शाता उपजायो है

नेमि जिन वागमें विराज्या तिण अवसर

किसन सहाय दे संजम दिरायो है

सबइया सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

ज्ञाता अन्तगड मांहे एसो पाठ आयो है ॥३२॥

अनुकम्पा निरवद्य सावद्य कहीने सठ,

पोगलांके घट्ट घोचों झूठो ही फसायो है ॥

अनुकम्पा निरवद्य सावद्य हुंवाथी सठ.

धरम दलाली मांहे पिण फेर थायो है

नन्दिपेण उपदेश देइनें दीक्षा दराई

चित्र परदेशी केशी स्वामि समजायो है

कोई मुख जयणा करी मारग बतायो शुद्ध

कोई अजयणासुं मारग दिखायो हैं

सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

मारग सावद्य निरवद्य किम थायो है ॥३३॥

भगवती सतक सोलमें उद्देशे छठा मांही ,

रतनांकी माला जोड़ा देख्यो जगन्नाथजी ।

चोथा सुपनारे मांहे छोटी बड़ी कही नहीं,

झूठी ढाला जोड़सठ बोधाने बहुकातजी ।

समकित रतन आवश्यकमें जिन कह्यो ,

सम्यक्त रत्न ज्ञाता सूत्र मांहे बातजी ।

सम्यक्त रत्न लै दौई धर्म सम कह्या,

व्रत रतनाको जो बहुत पखपातजी ।

सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

समकित पायां निश्चै मुगतीमें जातजी ॥३४॥

अन्न वखादिक दियां अव्रत सेवाइ कहे,

अव्रत तो दीधी लीधी आवै नहिपारकी ।

निहवाके श्रद्धाएम अव्रतअरूपी जीव,

खावै देवै पुद्गलरूपी बात ये विचारकी ।

भगवती शतक पहले उद्देशे नवमेमें कह्यो,

अव्रतकी क्रिया क्षत्री राजा रङ्ग सारखी ।

चोरादिक वित्त ग्रहो आकुल व्याकुल थयो,

थोड़ी क्रिया लाधां या है वाणी अणगारकी
सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

पारखातो करो सठ खवर न पारकी ॥ ३५ ॥

मूल दृष्टान्त कुण आत्माजीव अरूपी,

निरवद्य भाव द्रव्य गुण पर्यायी है
द्रव्यादि अज्ञान ज्ञान तलावतेमें कियो,

हिंसाव निहवाकी आसुणो कपटाई है
मूल नव नाम कहेय दूजो दृष्टान्त देय,

आश्रव जीव एक जुगल मिलाई है
तलावने नालो एक उत्तर यूं देणो देख,

पुद्गल तलाव नालो एक कहवाई है
सवइयो सवायों कीनो घनासरी नाम दीनो,

यूं नाम हवेलीको उत्तर देखाई है ॥ ३६ ॥
तीन करण तीन योग अठारे पापरा,

त्याग किया वर्णना गिणती भगवतीमें जाणीयो
तीन करण तीन योग अठारे पापरा त्याग किया,

अंबडजीका चेला उवाई पिछाणीयो

तीन करण तीन योग अठारे पापरा त्याग किया;

आनन्दादि श्रावग उपासक दसा जाणियो ।

तीन करण तीन योग अठारा पापरा,

त्याग किया संखादिक भगवती माहिजिन वाणियो ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

अब्रतरी किसी देखो तेज पखताणियो ॥ ३७ ॥

श्रावकरो खाणो पीणो कपड़ो आदि सवाने,

अब्रतमें गिणेज्यानें इण भांत कैवणो ।

राख्यां पाप दियां पाप भलो जाणै तैमैं पाप,

तीना मांहे जिन साधूनें क्या सेवणो ।

कोई तो आगेड़ा लेवै कोई पाड़ीहारा सेवै,

इत्यादि पाप केवो थाने कलपे नहीं रैवणो ।

भगवती सतक वारमें उहेसे पांचमामें,

पापनें चोफरसी कह्यो पाठ देख लेवणो ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

पारख्या तो करो वहते लारे नहीं वैवणो ॥ ३८ ॥

भगवती सतक वीसमें उहेसे आठमामें,

श्रावकने तीरथमें लीनों या जिन वाणी है ।

पालतजी श्रावकने महात्मा कया,

जिन सीक्ष कया उत्राध्ययन इफीसमें जाणी है ॥

धम्मिया धम्माणुया धर्म इष्ट आद देई,

सुसीला सुव्वया गुण उवाई पिछाणी है ।

सुयगडांग मांहे धर्माधर्म पक्ष दोय,

तीहां धर्म पक्षमां है साधु श्रावक दो आणी है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

साधुनें श्रावक गुण व्रतांसुं बखाणी है ॥ ३९ ॥

दशमी कालिक छठे अध्ययन आठमी गाथा

अठारे थानक जुदा जुदा किया जाणजी ।

सोलमा थानक मांहे गृहस्थी घर बैठे ताकूं,

अनाचार मिथ्यात अब्रह्म प्राण हाणजी ।

आधा कर्मी दोष थाय जाचकादि अन्तराय,

क्रोधवधे अपूठी कूशील व्रतहाणजी ।

इत्यादिक दोष घणा बैठा कया तीन जणा,

तपसी जरानें रोगादी हुसुर ठाणजी ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

दशमी कालिक देखो तज पखताणजी ॥ ४० ॥

बृहत्कल्प कछो तीजे उहेसे अन्तर घर मांही,
 सतरे बोल करना बीतराग पालीया ।
 अन्तर घरको खोटी अर्थ करीनें निहव सठ,
 रसोडादिक घर कह वोघांने बहका लिया ।
 अन्तर घरमें तपसीनें जरा रोगीयां ने,
 सतरे बोल करणा कछा ईंमें आगे चालीया ।
 दशमी कालिक सुयगडांग बृहत्कल्प,
 ओर सुत्रांमें वरज्यो पिण देखे नहीं वालीया ।
 सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,
 अज्ञानमें खूताजिणा अज्ञानी सरणा लिया ॥ ४१ ॥
 छठे गुण ठाणे मनपर जव कषाय कुशील,
 छदमस्त रागसहित करी चूका कैवै है ।
 चारित्र नियंठा योग हेतु आदिक केता पावै,
 भवकेता करे संसारमें केता रैवै है ।
 लारे पांचे ते तो भगवन्तमें बताओ सब,
 इम पूछ्यां मूढ सफा जुवाव नहीं देवै है ।
 भगवन्त जीव दया ऊपरें अध्ययन देख,
 परिक्षा तो करे नांहीं बहतां लारे वैवै है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

कल्पानीत जिनकी बराबरी लैवै है ॥ ४२ ॥

जानु परिमाणे नदी उतरे धर्म कहै,

पाणी संघट्टासुं आहार देखी टल जावै हैं ।

कमाड निखेधी अने किवाडियां जडावैमठ,

जिनके ऊपर एसी कुजुगन मिलावै है ।

लड़की वापकी कैंई गर्भवन्तीको नाम लेय,

पट्मासबध्यां उट्ट्यां बेटां दोप धावै है ।

इम कहै ज्याने केगो याको परमाण किसो,

किवाड किमाड़ी केता हाथको कहवावै है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

निहव कपट करी बोघाने बहकावै है ॥ ४३ ॥

इसाभद्र श्रावकाने श्रावकां वन्दनाकीनी,

भगवन्त अरु वरु जिन नहीं पालिया ।

पोष्कलीजी संखजीरी हवेलीमें आया,

जिहां उपलाजी वन्दनाकीनी आसणादिदियालिया ।

संखजीने पुष्कलीजी पोसामांह वन्दना कीनी

कह्यो चालो आहार करो संखजी नहीं हालिया ।

भगवतीमें बहुभात्र ज्ञानी दिया फुरमाय,

बन्दना करी लियां पछे अपराध खमालिया ।

सवईयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

अंबडने सिष्यां बन्दना कीनी उत्राईमें चालिया ॥४४॥

उतराध्ययन अध्ययन छांवीसमें छकारणसुं,

आहार करणो कइयो नाम न्यारां न्यारा धारजी ।

वेदना वेयावच्च चैत्य इरज्यांने,

संजमठाए जीतवनें अर्थ छठी धर्मनो विस्तारजी ।

छकारण छोडना वतायो वीतराग देव,

ज्यांरा न्यारा २ नाम करत उचारजी ।

रोग परीषह जीव दया ब्रह्मचर्य अर्थ,

तपहेत शरीर त्याग कर दे संथारजी ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

खाणेमें धर्म हो तो क्यो तजे अणगारजी ॥ ४५ ॥

॥ इति ऋषि कृपारामजी कृत सवाइया सम्पूर्णम् ॥

गौ साताकी पुकार

- सुणो सुणो अंग्रेज बधादुर, गड अरजा करती ।
 मुझ में क्या तकसीर आज में, बंधनाक भरती ॥१॥
- मेरा दूध सब दुनिया पीवे, में जगकी माता ।
 ऐसी बात विचार देख, क्यों मुझको मरवाता ॥२॥
- नर दुनियामें ज्ञान जो पाया, नजर नहीं आता ।
 मुझे मारकर पाप न जाणे, क्या गुरू सिखलाता ॥३॥
- वेदरदी तू दरद न जाणे, जुलूम हुआ जाता ।
 महं अनारज कसाइयांसें, मुझको मरवाता ॥४॥
- सभी समझके देखो साहिव, गऊ बहुत डरती ।
 गरीब और लाचार दीन में, दूध पिलाके सुख करती ॥५॥
- मेरा दुख में कहूं किसी पै, कौण सुणें अरजी ।
 ज्ञानी होय तो ज्ञानसे समझे, और सभी गरजी ॥६॥
- दूध पिलाती पुत्र जनमती, दुनिया पालन कूं ।
 जर्मोदारका करूं गुजारा, हासिल राजा कूं ॥७॥
- वैद्यक ग्रंथ पढ़ा जो पूरा, मेरी कदर जाणें ।
 शोथ संग्रहणी अजीर्ण खोवे, मेरी छाछ स्याणें ॥८॥
- रक्त पित्त दही सिखरन सेती, अतीसार जावै ।

नेत्र रोग सब और रतोंधी, घीसैं नास पावैं ॥१॥
 सभी रोगपर दवा घृतकी, दवा संग बणती ।
 वादी पित्त सब रोग मिटावे, ऐसा मैं सुणती ॥१०॥
 दवा शुद्ध गोबरसैं केई, गोमूत्र सैं होती ।
 पांडू शोथ गोमूत्रसे मिटता, जहर केई खोती ॥११॥
 दूध दही घृत छाछ विगर नर, किसीकै नहीं सरता ।
 मुझसैं पलै और मुझको मारै ऐसा जुलुम करता ॥१२॥
 दूध दही घृत घरमें वरतै, छाछज वैटन कूं ।
 इतने सुख मेरे संघ रहते, लष्ट पुष्ट तन कूं ॥१३॥
 गाड़ी रथके पुत्र जोतते, खेती करनन कूं ।
 ईंधन और घरकी करै शोभा, गोबर नीपन कूं ॥१४॥
 नृपतीके शिर चमर ढोलावै, शोभा बहुत करती ।
 मैं अबला लाचार होयकर, सरणा हिए धरती ॥१५॥
 ॥ इति गौअरजी पदं ॥

॥ अथ साधु करणी, शिजा ढाल ॥

खुशामदी करै दातारनी रमावै वाल, जाणै आहां
 आपे आछी तरै, बांधे पेटनी पाल, ओ मारग नहीं सां
 रो (आंकड़ी) वेटा वहू मां वापना, असत्रीनै भरता

सासू वहू सगातगा, कहै सगाचार ॥ ओं० ॥ २ ॥ लाभ
 अलाभ भाखे बले, ज्योतिपने जोय । जनम मरण वताय
 दै, दोष तीसरो होय ॥ ओं० ॥ ३ ॥ जात जगावे आ-
 परी, दीन दया मणो थाय । आहारन आवे पातरै,
 मूढो दै कुमलाय ॥ ओं० ॥ ४ ॥ ओपध भैपज, करे बले
 देवै सराप । क्रोध करी लड़ विध लिये, ज्ञानी कश्यो पाप ॥
 ओं० ॥ ५ ॥ मान माया लोभकरी, हूवा दोषण दश ।
 पहिला पछेनें साथे करै घणोजस ॥ आं ॥ ६ ॥ चारण दै
 विरदावली, भोजगने भाट । अणदीधां ओगुण करै, थो-
 थो वैठो पाट ॥ ओं ॥ ७ ॥ विद्या फोर कामण करै, बलै
 मन्त्रने चूर्न । संजोग मेले सर्वथा, इसड़ा करै खून ॥ ओं
 ॥ ८ ॥ उसासणारा दोषए गलावे गर्भ । उत्तम ए नहीं
 आदरै, साधू टाले सर्व ॥ ओं० ॥ ९ ॥ रसनाना लंपटी
 थका, मेलै आहार संजोग, आछो मिलियां राजी हुवे
 भूंडो मिलियां सोग ॥ ओं० ॥ १० ॥ ताक २ जावे गोचरी
 लावे ताजा माल । उवास व्रत करै नहीं कुन्दा वन रखा
 लाल ॥ ओं० ॥ ११ ॥ रसनारा गिरधी थका, आरामें जाय ।
 लघुता लागे लोकमें; निंदा धर्मनी थाय ॥ ओं० ॥ १२ ॥ उण

दिन जाय सकै नहीं, रहै रातरा ध्यान । प्रभाते जावे
 तेडीयो, स्युं पायो ज्ञान ॥ओं०॥१३॥ भारी आहार भली
 तरे, खावे ठंढोठार । भागेवाड तोल्याथका, पीछै हुनै
 भांड ॥ओं०॥१४॥ वेसवार भला घालिया, भलो दीयो
 वधार । तीवण आछी तरे कियो, बले कहै छमकार ॥
 ओं०॥१५॥ चावल दालमें घी घणो सरायने खाय । चा-
 रित्रने करै कोयलो, कइयो सूत्र मांय ॥ओं०॥१६॥ नि-
 रसो आहार तीवण बले, नहीं मिरचने लूण । चारित्रमें
 निकले धुओं, खावे माथो धूण ॥ओं०॥१७॥ एकण घर-
 सुं बहरता, दश दश जणनो आहार । बाई असन करै
 मोकलो, भावना भावै तिवार ॥ओं०॥१८॥ कोई पंथी
 पूछे क्युं खड़ा, देखुं साधारी वाट । रस गिरधाने वो जाय
 कहे, दोड्या जाय गहगाट ॥ओं०॥१९॥ माटे पाणी मा-
 यने, नाखै म्ठी राख, बहरावणरे कारणै, बहरे साधपणो
 नाख ॥ओं०॥२०॥ आधा करमी आहार लै, वाजै मोटा
 साध । जिन पंथने तेरे तीन कियो, सेवै सुख अगाध ॥
 ओं०॥२१॥ लाखां कीडारी घातसुं, वणै रेशमी वस्त्र ।
 सो पहिरे निरदई थका, वाजै पूज पवित्र ॥ओं०॥२२॥

दूसरे गाम पोहचाइवा, जावै गृहस्थी लार । भाव भेल
 आरम्भ करै, वहरी खावै वो आहार ॥ओं०॥२३॥ जा-
 गा नीपावे आपणी, कवलू दंभै फिराय । आमना जतावे
 आपरी, साधपणो उठ जाय ॥ओं०॥२४॥ वस्त्र पात्र था-
 नक बलै, अतै चौथो आहार । साधू जो सृष्टता भोगवै
 ज्यांरी हू बलिहार ॥ओं०॥२५॥ आरजा जीमावे हाथसुं
 वांटकर देवै आहार । पासै बैठी रहै आरज्या, चौथो
 घत गयो हार ॥ओं०॥२६॥ सुगडांग सूत्रमें कश्यो, तिरै-
 सो तारणहार । डूवे जिकै किम तारसी, जोवो हिरद
 विचार ॥ओं०॥२७॥

॥ इति पदं ॥



श्रीवीतरागाय नमः

श्री सुखविपाक-सूत्रम्

॥ अहं ॥

तेषां कालेषां तेषां समेषां रायगिहे
णायरे गुणसिलए चेइए सोहम्मे समो-
सठे जंबू जाव पज्जुवासमाणे एवं
वयासी—जइणां भंते ! समणेषां भग-
वया महावीरेणां जाव संपत्ते णां दुहविवा-
गाणां अयमट्ठे पणणात्ते सुहविवागाणां
भंते ! समणेषां भगवया महावीरेणां
जाव संपत्ते णां के अट्ठे पणणात्ते ? तते-
णां से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं
एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! समणेषां

भगवया महावीरेणां जाव संपत्तेणां
 सुहविवागाणां दस अज्भयणा पशान्ता ।
 तंजहा-सुवाहू १ भदनंदीय २, सुजाए
 य ३, सुवासवे ४, तहेव जिणदासे ५,
 धणपती य ६, महव्वले ७॥१॥ भदनंदी
 ८, महचंदे ९ वरदत्ते १० ॥

जइणां भंते ! समणेणां जावसंपत्तेणां
 सुहविवागाणां दस अज्भयणा पशान्ता
 पढमस्स णां भंते ! अज्भयणास्स सुह-
 विवागाणां जाव के अट्टे पशान्ते ?
 तते णां से सुहस्से अणगारे जंबू अण-
 गारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू !
 तेणां कालेणां तेणां समएणां हत्थिसीसे
 णामं णयरे होत्था दिड्ढित्थिमियस-

मिद्धे, तस्स णं हत्थिसीसस्स णगरस्स
 बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं
 पुप्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वो
 उय० तत्थणं कयवण माल पिणस्स ज-
 क्खस्स जक्खवाययणे होत्था दिव्वे०
 तत्थणं हत्थिसीसे णथरे अदीणसत्तू
 णामं राया होत्था महया० वरणाओ,
 तस्स णं अदीणसत्तुस्स रणणे धारि-
 णीपामुक्खं देवीसहस्सं ओरोहेयावि-
 होत्था । तत्तेणं सा धारिणी देवी अ-
 रणया कयाइ तंसि तारिसगंसि वास
 घरंसि जाव सीहं सुमिणे पासइ जहा
 मेहस्स जम्भणं तहा भाणियव्वं । सु-
 वान्कुमारे जाव अलं भोग समत्थे यावि

जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच
पासायवडिंसगसयाइ' करावेति, अब्भु-
ग्गय० भवणां एवं जहामहावलस्स रणणो,
णवरं पुष्फचूलापामोक्खाणां पंचरहं
रायवरकरणयसयाणां एगदिवसेणां
पाणिं गिरहावेति तहेव पंचसइओ
दाओ जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्ट-
माणेहिं मुइ'गमत्थएहिं जाव विहरइ ।
तेणां कालेणां तेणां समएणां समणे भगवं
महावीरे समोसडे. परिस्ता निग्गया,
अदीणसत्तू जहाकूणिओ तहेव निग्गओ
सुवाहू वि-जहा जमाली तहो रहेणां नि-
ग्गए जाव धम्मो कहिओ राया परिस्ता
पडिगया । तएणां से सुवाहुकुमारे सम-

णस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए
 धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ट तुट्ट० उट्टाए
 उट्टेति जाव एवं वयासि-सदहामिणं
 भंते । णिग्गंथं पावयणं० जहाणं देवा-
 णप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर जाव
 सत्थवाहप्पभिइओ मुंडे भवित्ता अगा-
 राओ अणगारियं पठ्वइया नो खलु
 अहणणं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता
 अगाराओ अणगारियं पठ्वइत्तए अ-
 हणणं देवाणप्पियाणं अंतिए पंचाणूठव-
 इयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं
 गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि, अहासुहं
 देवाणुप्पिया । मां पडिवंधं करेह । त-
 ण्णसे सुवाहुकुमारे ससणस्स भगवओ

महावीरस्त अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्त-
सिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं
पडिवज्जति पडिवज्जिता तसेव चाउग्घटं
आसरहं दुरुहति जामेव दिसं पाउव्वभूए
तामेवदिसं पडिगए । ते णं कालेणं
तेणं समएणं समणस्स भगवओ महा-
वीरस्त जट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं
अणगारे जाव एवं वयासी-अहो णं
भंते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते २
पिए २ मणुणणे २ मणाम्हे २ सोमे सु-
भगे पियदंसणे सुरूवे बहुजणस्सवियणं
भंते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे ५ सोमे ४
साहुजणस्सवियणं भंते ! सुवाहुकु-
मारे इट्ठे ५ जाव सुरूवे । सुवाहुणा

भंते ! कुमारेणं इमा एयाहूवा उराला
 माणुस्सरिद्धी किराणा लद्धा ? किराणा
 पत्ता ? किराणा अभिसमन्नागया ? के
 वा एस आसी पुठ्वभवे ? एवं खलु
 गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं
 इहेव जंबुहीवे दीवे भारहे वासे हत्थि-
 णाउरे णामं णागरे होत्था रिद्धित्थि-
 मिय समिद्धे तत्थाण हत्थिणाउरे
 णागरे सुमुहे नामं गाहावई परि-
 वसइ अड्ढे० तेणं कालेणं तेणं समए
 णं धम्मघोसा णामं थेरा जाति सं-
 पन्ता जाव पंचहिं समणासएहिं सद्धि-
 संपरिवुडा पुठ्वाणुपुठ्विं चरमाणा गामा
 णुगामं दूइज्जमाणा जेणोव हत्थिणाउरे

णगरे जेणेव सहस्संभवगो उज्जागो ते-
 णेव उवागच्छइ उवागच्छिता अहाप-
 डिख्वं उग्गहं उग्गिहिहत्ता संजमेणं त-
 वसा अप्पाणं भवेमाणा विहरंति । ते-
 णं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं
 थेराणं अन्तेवासी सुदत्ते णासं अण-
 गारे उशले जाव लेस्से मासं भासेणं
 खममाणे विहरति । तए णं से सुदत्ते
 अणगारे मासखमणणारणगंसि पढ-
 माये पोरिसीये सज्जायं करेति जहा
 गोयमसामी तहेव धम्मघोसे (सुधम्मं)
 थेरे आपुच्छति जाव अडमाणोउच्च-
 नीय मक्खिमाइं कुलाइं सुमुहस्स गाहा-
 वतिस्स गेहे अणुप्पविट्ठे तएणं से

सुमुहे गाहावती सुदत्तं अणगारं एज-
 माणं पासनि २ ता हट्टुत्तुट्टे चितमाणं
 दिया आसणातो अब्भुट्टेति २ ता
 पायपीढाओ पच्चोरुहति २ ता पाउ-
 याओ ओमुयति २ ता एगसाडियं उ-
 त्तरासंगं करेति २ ता सुदत्तं अणगारं
 सत्तट्टु पयाइ अणु गच्छति २ ता ति-
 वल्लुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ ता
 वंदति णमंसति २ ता जेणोव भत्तघरे
 तेणोव उवागच्छति २ ता सयहत्थेणं
 विउलेणं असणपाणखाइस साइमेणं
 पडिलाभेस्सामीति तुट्टे पडिलाभे मा-
 गोवि तुट्टे पडिलाभिण्वि तुट्टे । तते
 णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं

द्वसुद्धेरां दायगसुद्धेरां पडिगाहग-
सुद्धेरां तिविहेरां तिकरणसुद्धेरां सुदत्ते
अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे
परिक्कीकए मणुस्साउए निवद्धे गेहंसि
य से इमाइ पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं
तंजहा-वसुहारा बुट्ठा १ दसद्धवन्ने कु-
सुमे निवातिते २ चेलुक्खेवे कए ३
आहयाओ देवदुदुहीओ ४ अंतरावि-
यणां आगासंसि अहो दाण महोदाण
घुट्ठे य ५ । हत्थिणाउरे नयरे सिंघा-
डग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स
एवमाइक्खइ ४-धराणां देवाणा प्पिया !
सुमुहे गाहावई सुकथपुन्ने कथलक्खणा
सत्तद्धेरां मणुस्सजस्से सकथरिद्धी य

जाव तं धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई । तत्तेणंसे
सुमुहे गाहावई वहूइं वाससयाइं आउयं पालइत्ता काल-
मासे कालं किच्चा इहेव हत्थि- सीसे णगरे अदीण-
सत्तुस्स रत्तो धारिणीएदेवीए कुच्चिंसि पुत्तताए उव-
वन्ने । ततेणं साधारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजा-
गरा ओहीरमाणी २ सीहं पासति सेसं तं चेव जाव उप्पिं
पासाए विहरति तं एयं खलु गोयमा । सुवाहुणा इमा
एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । पभू
णं भंते ! सुवाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता
अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? हंता पभू । तते णं
से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २
त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति । तते णं
से समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइं हत्थिसीसाओ
णगराओ पुप्फकरंडाओ उज्जाणाओ कयवणमालपियस्स
जक्खस्स जक्खायणाओ पडिणिक्खमति २ त्ता वहिया
जणवयविहारं विहरति । तते णं से सुवाहुकुमारे समणो
वासये जाते अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विह-
रति । तते णं से सुवाहुकुमारे अन्नया कयाइं चाउइस-
ठ्ठमुद्धिपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवाग-

च्छति २ ता पोसहसालं पमज्जति २ ता उधारापासवण-
 भूमिं पडिलेहति २ ता द्दव्वम संधारं संधरेह २ ता द्दव्वम-
 संधारं दुरुहइ २ ता अट्टमभत्तं पगिणहइ २ ता पोसह-
 सालाए पोसहिए अट्टमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे
 विहरति । तए णं तरस्स सुवाहुरस्स कुमारस्स पुव्वर-
 तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमे
 एयारूवे अज्झत्थिए चिंतीए पत्थीए मणोगए संकप्पे
 समुप्पन्ने धण्णा णं ते गामागर णगर जाव सन्निवेसा
 जत्थणं समणे भगवं महावीरं जाव विहरति, धन्नाए
 तेराईसरतलवर० जेणं समणस्स भगवओ महावीरस्स
 अंतिए मुंडा जाव पव्वयंति, धन्ना णं ते राईसरतलवर०
 जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणु
 व्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जंति, धन्ना णं ते राईसर-
 जाव जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्म
 सुणेंति तं जत्तिणं समणे भगवं महावीरे पुव्व्वाणु पुव्वि
 चरमाणे गामा णुगामं दूइज्जमाणे इहमा गच्छिज्जा जाव
 विहरिज्जा ततेणं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स
 अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा । ततेणं समणे भगव

महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं
जाव वियाणित्ता पुंवाणुपुंविं चरमाणे गामाणुं गामं दूइ-
ज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णगरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे
जेणेव कयवणमालपियरस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव
उवागच्छइ २ ता अहापडिरूवं उगहं उगिण्हित्ता संजमेणं
तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति परिसा राया निग्गया
ततेणं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया जहा पढमं तहा
निग्गओ धम्मो कहिओ परिसा राया पडगिया । तते णं
से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए
धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ट तुट्ट जहा मेहे तहा अम्मापियरो
आपुच्छति; णिक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाते
ईरियासमिए जाव वंभयारी, ततेणं से सुबाहु अणगारे
समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए
सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ ता बहूहिं
चउत्थल्लठ्ठमं तवोविहाणेहिं अप्पाणं भावित्ता बहूइं
वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए
अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलो-
इयपडिक्कंते समाहिपते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मो

कप्पे देवत्ताए उववन्ने, से णं ततो देवलोगाओ आउक्ख-
 एणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं
 विग्गहं लभिहिति २ ता केवलं वोहिं वुज्झिहिति २ ता
 तहारूवाणं धेराणं अंतिए मुंडे जाव पव्वइस्सति, से णं
 तत्थ वहूइं वासाइं सामण्णं परियागं पाउणिहिति आलो-
 इयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालं करिहिति सणंजुमारे कप्पे
 देवत्ताए उववज्झिहिति, से णं तओ देवलोगाओ माणुस्सं
 पव्वज्जा वंभलोए ततो माणुस्सं महासुक्के ततो माणुस्सं
 आणते देवे ततो माणुस्सं ततो आरणे देवे ततो माणुस्सं
 सब्बट्ठसिद्धे, से णं ततो अणंतरं उव्वट्ठित्ता महाविदेहे
 वासे जाव अड्ढाइं जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति वुज्झि-
 हिति मुच्चिहिति परीनिव्वाहिति सब्बट्ठुक्खाण मन्तं करे-
 हिति एवं खलु जं वू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहवि-
 वागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ॥ पढमं
 अज्झयणं समत्तं ॥१॥

वित्तियस्स णं उक्खेवो—एवं खलु जम्वू ! तेणं का-
 लेणं तेणं समएणं उसभपुरे णगरे थूभकरंड उज्जाणे धन्नो
 जक्खो धणावहो राया सरस्सई देवी सुमिणदंसणं कहणं

जम्मणं बालत्तणं कलाओ य जुव्वणे पाणिगहणं दाओ
 पासाद० भोगाय जहा सुवाहुस्स, नवरं भहनंदी कुमारे
 सिरिदेवी पामोक्खा णं पञ्चसया सामी समोसरणं साव
 गधम्मं पुव्वभवपुच्छा महाविदेहे वासे पुण्डरीकिणी णगरी
 विजयते कुमारे जुगवाहू तित्थियरे पडिलाभिए मणुस्सा-
 उए निवद्धे इहं उप्पन्ने, सेसं जहा सुवाहुस्स जाव महा-
 विदेहे वासे सिज्झिहित वुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वा-
 हिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ वितियं अज्झयणं
 समत्तं ॥ २ ॥

तच्चस्स उक्खेवो—वीरपुरं णगरं मणोरमं उज्जाणं
 वीरकण्हे जक्खे मित्ते राया सिरि देवी सुजाए कुमारे
 वलसिरिपामोक्खा पञ्चसयकन्ना सामी समोसरणं पुव्व-
 भवपुच्छा उसुयारे नयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अण-
 गारे पडिलाभिए मणुस्साउए निवद्धे इहं उप्पन्ने जाव
 महा विदेहे वासे सिज्झिहिति वुज्झिहिति मुच्चिहिति
 परीनिव्वाहिति सव्व दुक्खाण मन्तं करेहिति ॥ तइयं
 अज्झयणं समत्तं ॥३॥

चोत्थस्स उक्खेवो—विजयपुरं णगरं णंदणवणं

(मणोरमं) उज्जाणं असोरो जक्खो वान्णवदत्ते राया
 कण्हा देवी सुवासवे कुमारे भद्रापामोक्खा णं पंचसया
 जाव पुव्वभवे कोसंबी णगरी धणपाले राया वेसमणभद्दं
 अणगारे पडिलाभिए इह जाव सिद्धे ॥ चोत्थं अज्झयणं
 समत्तं ॥४॥

पञ्चमस्स उक्खेवओ—सोगंधिया णगरी नीलासोए
 उज्जाणे सुकालो जक्खो अप्पडिहओ राया सुकन्ता
 देवी महचंदे कुमारे तस्स अरहदत्ता भारिया जिणदासो
 पुत्तो तित्थयरागमणं जिणदासपुव्वभवो मज्झमिया णगरी
 मेहरहो राया सुधम्मो अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥
 पञ्चमं अज्झयणं समत्तं ॥५॥

छठ्ठस्स उक्खेवओ—कणगपुरं णगरं सेयासोयं
 उज्जाणं वीरभद्दो जक्खो पियचन्दो राया सुभद्दा देवी
 वेसमणे कुमारे जुवराया सिरिदेवी पामोक्खा पञ्चसया
 कन्ता पाणिग्गहणं तित्थयरागमणं धनवती जुवरायपुत्ते
 जाव पुव्वभवो मणिवथा नगरी मित्तो राया संभूतिविजए
 अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ छठ्ठं अज्झयणं
 समत्तं ॥ ६ ॥

सत्तमस्स उक्खेवो—महापुरं णगरं रत्तासोगं उज्जाणं
रत्तपाओ जक्खो वले राया सुभदा देवी महच्चले कुमारे
रत्तवईपामोक्खाओ पञ्चसया कन्ना पाणिग्गहणं तित्थय-
रागमणं जाव पुव्वभवो मणिपुरं णगरं णागदत्ते गाहावती
इन्ददत्ते अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ सत्तमं
अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

अट्टमस्स उक्खेवो—सुघोसं णगरं देवरमणं उज्जाणं
वीरसेणो जक्खो अज्जुण्णो राया तत्तवती देवी भहनन्दी
कुमारे सिरिदेवीपामोक्खा पञ्चसयाजाव पुव्वभवे महा-
घोसे णगरे धम्मघोसे गाहावती धम्मसीहे अणगारे पडि-
लाभिए जाव सिद्धे ॥ अट्टमं अज्झयणं समत्तं ॥८॥

णवमस्स उक्खेवो—चंपा णगरी पुन्नभहे उज्जाणे
पुन्नभहो जक्खोदत्ते राया रत्तवई देवी महचंदे कुमारे
जुवराया सिरिकंतापामोक्खा णं पञ्चसयाकन्नाजाव
पुव्वभवो तिगिच्छी णगरी जियसत्तू राया धम्मवीरिए
अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ नवमं अज्झयणं
समत्तं ॥ ९ ॥

जति णं दसमस्स उक्खेवो—एवं खलु जंबू ! तेणं
कालेणं तेणं समएणं साएयं नामं नयरं होत्था उत्तरकुरु

ज्जाणे पासमिओ जक्खो मित्तनंदी राया सिरिकंता
 देवी वरदत्ते कुमारं वरसेणापामोक्खा णं पञ्चदेवीसया
 तित्थयरागमणं सावगयम्मं पुव्वभवो पुच्छा सत्तट्टुवारं
 नगरे विमलवाहणे राया धम्मरुद्धं अणगारं पडिलाभिण
 संसारे परिचीकए मणुस्साउए निवद्धे इहं उप्पन्ने सेसं
 जहा सुवाहुस्स कुमारस्स चिंता जाव पव्वज्जा कप्पंत
 रिओ जाव सब्बट्टुसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दढपइत्तो
 जाव सिज्झिहिति वुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति
 सब्बट्टुक्खाणमंतं करेहिति ॥ एवं खलु जंवू ! समणेणं
 भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स
 अब्झयणस्स अयमट्टे पन्नत्ते, सेवं भंते ! सेवं भंते !
 सुहविवागा ॥ दसमं अब्झयणं समत्तं ॥ १० ॥

नमो सुयदेवयाए—विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा
 दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुहविवागे दस अब्झ-
 यणा एकसरगा दससुचेव दिवसेसु उदिसिज्जन्ति, एवं
 सुहविवागो वि सेसं जहा आयास्स ॥ इति एक्कारसमं
 अंगं समत्तं ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥

इअ सुखविपाकसुत्तां समत्ताम् ॥

हितोपदेश

चालो र भुगत गढ़ माहीं, थाने सतगुरु रह्या सम-
झाई रे ॥टेरा॥ थाने मानवको भव पायो, चिन्तामणि
हाथज आयोरे ॥चा०॥ काया दीसै रंगी चंगी दया धर्म
करो नवरंगी रे ॥चा०॥२॥ मात पिता लाड़ लड़ावे
स्वार्थ विना अलगा जावो रे चा०॥३॥ तू परणीने लाग्यो
लाड़ी, बापण नहिं आसी आड़ी रे ॥ चा० ॥४॥ सूरी
कंता नारी देखो, सूवर मे चाल्यो ईंको लेखो रे ॥चा०॥
॥५॥ धन दौलत माया जोड़ी, भेली कर मेली कोडी
कोडी ॥चा०॥६॥ सागर सेठ थो धनको लोभी, समुद्र
में गयो ते डूवी रे ॥चा०॥७॥ मायाजालकी माया मेटो,
सतगुरु जीने लेवो भेटी रे ॥चा०॥८॥ दया दान कमाई
कीजे, नरभवको लाहो लीजे रे ॥चा०॥९॥ उगणीसे वा-
सठ माहीं रामपुर रह्या सुख पाहिरे ॥चा०॥१०॥ कहै हीरा
लाल गुणवन्ता जिन धर्म करो पुन्यवन्ता रे ॥चा०॥११॥

अथ चौबीसी लिख्यते

लावणी—अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु

समरणा, तीर्थङ्कर रतनागी माला, सुमरण नित्य करणा ॥
समरीये माला, मेरी जान समरीये माला ॥ ज्युं कटे
करमका जाला, ये जीव तणा रखवाला, ध्यान तीर्थंकर-
का धरणा रे ॥ ध्या० ॥ पाच पद चौवीस जिणंदका
नित्य लीजे सरणा ॥१॥ ए आंकगी ॥ श्री रिपभ अजित
संभव अभिनन्दन, अति अनन्द करना ॥ सुमति पदम सु
पार्श्वचन्द्रप्रभ, दास रहुं चरणा ॥ चरण नित्य वन्दु, मेरी
जान चरण नित्य वन्दु ॥ ज्युं कटे करमका फन्दा,
तुम तजो जगतका धन्धा, दीठा होये नयन अमितो ठर-
णारे ॥दीठा॥ पाच पद ॥२॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासु
पूज्य हिरदय मांहे धरणा ॥ विमल अनंत धर्मनाथ शांति
जी, दास रहुं चरणा ॥ जिणंद मोहे तारो, मेरी जान
जिनंद मोहे तारो ॥ संसार लो मोहे खारो, वैराग्य लो
मोहे प्यारो, मैं सदा दास चरणारो नाथ जी, अब कृपा
करणारे ॥नाथ०॥ पांच पद० ॥३॥ कुंथुं अर महि मुनि
सुव्रतजी, प्रभु तारण तारणा ॥ नमि नेम पार्श्व महा-
धीरजी, पाप परा हरणा ॥ तरे भव्य प्राणी, मेरी जान
तरे भव्य प्राणी ॥ संसार समुद्र जाणी, सूणों सूत्र सिद्धांत

स्तवन

दरशन करवादे रे पूजका दरशन करवादे । आज
मारे आनन्द उछवको दिन पूजका दरशन करवा दे ॥
टेर ।

सागर जिम गंभीर पुज्यजी ।
शीतल चन्द्र समान ॥
कल्पवृक्ष सम आप सोवता ।
महा गुणोंकी खान ॥ पु० ॥ १ ॥
सुरज सम उद्योत धर्मको ।
करता वरतो आप ॥
ग्यान ध्यान वैराग तपस्या ।
करता प्रभुका जाप ॥ पु० ॥ २ ॥
मीठी वाणी आपकी सरे ।
जैसे इमरत धार ॥
सुणता रिद्ध सिद्ध सम्पदा पामें ।
वरते मङ्गलाचार ॥ पु० ॥ ३ ॥
पञ्च महाव्रत पालतासारे ।
पांच मेरु समान ॥

दीप बयालिस टाल मुनीश्वर ।
 निरमल जाको ज्ञान ॥ पु० ॥४॥
 पांच प्रमादमें गुमीयो संगे ।
 रात दिवसके मांय ॥
 तेरेकाट्टीया चित्त बल्लभ सा ।
 क्योंकर दरशन पाय ॥ पु० ॥५॥
 काम क्रोध मद लोभमें सरे ।
 करता जै जै कार ॥
 धर्म रतन पल्ले नहीं बांध्यो ।
 क्योंकर उतरे पार ॥ पु० ॥६॥
 विषे भोगमें भम रयोसरे ।
 खान पान सुखकार ॥
 वेद्वेद्वी कुटुम्ब कवीलो ।
 इणसे इधको प्यार ॥ पु० ॥७॥
 राग धेस मोह जालमें सरे ।
 भम रयो जीव अपार ॥
 माया ममता मांही राच्यो ।
 याको वडो विचार ॥ पु० ॥८॥

मारा ओगण गावता सरे ।
 केहताने आवे पार ॥
 सब ओगणमें पेलो लम्बर ।
 खुले न मोक्ष दुवार ॥ पु० ॥९॥
 पुज २ श्री जुहारीलालजी ।
 जग वच्छल महाराज ॥
 राधालाल चरणोंका चाकर ।
 भव २ सारो काज ॥ पु० ॥१०॥
 उनीसे सीतन्तर सालमें ।
 वीकानेर चौमास ।
 चार तीरथमें नित सुख बरते ।
 पूरो मनकी आश ॥ पु० ॥ ११ ॥

(इति सम्पूर्ण)

समाधि बोधः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

आत्म ज्ञानने आपणे, इरी सत्यने शोधः
मानव जन्म सङ्गण थवा, समज समाधि बोध.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

पवित्र क्रिया भार्गवां इयिषंत लव्यात्माश्चैते
वांयथा विचारवा मादे. . . .

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अंकः-महोता कुलचंद्र उीराचंद्र मु. भारणी.

प्रकाशकः-अभरचंद्र इतल भारणीवाणा

दात-मु. कुमुन्डा-(मानलुम).

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

।. १६६३]

[सने १६२७]



धी परमार प्रीन्टींग प्रेस—राजकोट.



પ્રસ્તાવના.



આખી દુનિયામાં જેટલી મનુષ્યની વસ્તી છે તેમાંની તદન જંગલી લોકોની સંખ્યા ઊઠ કરતાં, બાકીના તમામ લોકો ધર્મને જીવ સાટે ગણી ધર્મ સાટે જીવ આપવા તૈયાર થાય છે. પણ તેમાં અનેક મતમતાંતરોના ફાંટા પડી સૌ પોત પોતાને મોક્ષના અભિલાષી માને છે, છતાં આચરણ એક બીજાથી તદન ઉલટાં હોય છે; વળી દરેક પંથનું મૂળ તપાસીશું તો ઘણાખરામાં અહિંસા, સત્ય, અદત્ત, પ્રહ્મચર્ય, દાન, તપ અને ભાવ છે. એ બધું શાને માટે? સંસારથી મુક્ત થવા માટેજ.

મનુષ્ય ભવ મળવો ઘણો દુર્લભ છે, છતાં આજે તે આપણે મેળવવાને શક્તિવાન થયા છીએ, તે

આત્માનું સાર્થક કરવા માટેનું છે, નહિ કે અધમ
આચરણ આચરી પાછું અધોગતિની શ્રેણીએ ઉતરવા.

જ્ઞાનીઓ પરમાર્થ ખાતર અતિ પરિશ્રમ વેઠી,
સૂત્ર સિદ્ધાંતોથી સમજ આપવાનું કાંઈ બાકી રાખી
ગયા નથી, તો તે રસ્તે ચાત્રી આત્માને ઉદ્ધાર
કરવાનું મનુષ્ય કર્તવ્ય ભૂલી અધોગતિમાં જવાનું
કોણ ઇચ્છશે ?

મોક્ષ માર્ગને અનુસરવાને મુમુક્ષુ જીવો રાત
દિવસ મગ્ન રહ્યા છે. મુનિ મહારાજો પોતાના
આત્માનું સાર્થક કરવા સાથે, મુમુક્ષુઓને મુક્તિ
માર્ગમાં દોરે છે, છતાં પણ બધો કાળ બધે સ્થળે
તેવા મહાત્માઓની હાજરી હોતી નથી. તેઓની
ગેરહાજરીમાં વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન કરી તેમાં જોડી રાખે,

એવાં સરળ પુસ્તકો આલતી ભાષામાં રચાવાની જરૂર છે, તે સંભવનો સમજો છે.

જૈનદર્શનના ત્રણ શ્રીરક્ષા કે તેમાંથી ઉત્પન્ન થયેલ ગચ્છ ગચ્છાંતરને વાંચતાં જરા પણ વિરોધ ન જણાય અને અન્ય દર્શનીઓ પણ જૈનધર્મનું રહસ્ય વિના અપવાદે વાંચી યોગ્ય લઈ શકે, તેવી શૈલીમાં આ “ સમાધિ વોધ ” નામનું નાનું પુસ્તક જ્ઞાનીઓની ગિર્વાણ ભાષામાંથી, દોહરા રૂપે દોહન કરી સંભવનો સમક્ષ મૂકું છું, અને તે આવકારદાયક નીવડશે એમ ઈચ્છું છું. -

પ્રસ્તાવનામાં લાંબાણુ કરવા કરતાં આ પુસ્તકમાં લખેલા દરેક વિષય ધ્યાનપૂર્વક વાંચ્યાથી યાત્રી થશે કે, તેમાં આત્મજ્ઞાન સાથે વૈરાગ્ય ઉભરાઈ જતાં, સંસાર ઉપરનો મોહ ઓછો થઈ આખર વખતે



સમાધિ મરણ કરાવે એવી શક્તિ હોવાથી આ અંથનું નામ “સમાધિ બોધ” રાખવામાં આવ્યું છે.

આ પુસ્તકમાં આવેલા વિષયોની ટુંક હકીકત નીચે મુજબ છે.

(૧) સ્તુતિ. (૨) અનિત્યાદિ ધાર અને મૈત્રી આદિ ચાર મંગી સોળ લાવના દોહરામાં હોવાથી મુખપાઠે કરવાની સુગમતા સાથે આત્મજ્ઞાન પણ થશે. (૩) ચોવીસ જીન સ્તુતિ સાથે અઠાર પાપ સ્થાનક અને આઠ કર્મ નિવારણ લાવના પચીસી. (૪) સંક્ષિપ્ત ધ્યાન સ્વરૂપના પેટામાં (અ) દર્શન (બ) જ્ઞાન (ક) ચારિત્ર-જેમાં અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય, અહમ્કાર્ય, અકિંચનતાનું વર્ણન છે, તેમ તેમાં શ્રાવકના ધાર વ્રતોનો પણ સંક્ષિપ્ત સમાવેશ કરેલ છે. એટલે સર્વ વિરતિ અને દેશ વિરતિ ચારિત્રનો

સમાવેશ થાય છે. વળી તેમાં પ્રતિક્રમણ આશય પછી
 છેવટ જે મોક્ષનું સાધન સમાધિ મરણ અથવા
 પંડિત મરણ નીપજવવાને માટે આત્માને ઠેમ સ્થિર
 કરવો તેને માટે સમાધિ શતકના પેગામાં સંલેખના
 અને મૃત્યુ મહોત્સવ દોહરા રૂપે દાખલ કરેલ છે,
 જે મનન કરવાથી અંત સમય પંડિત મરણ કરાવવાને
 ખડુ ઉપયોગી છે. (૫) કમની વિચિત્રતા સંબંધી
 કેટલાક ઉપદેશી દોહરા છે. (૬) ઉપદેશી દોહરા છે.

પરિચય :—મેં ૪૨ વર્ષ સુધી એજન્સી

તેમજ મોરળી સ્ટેટ કેળવણી ખાતામાં જુદી જુદી
 જગ્યાએ નોકરી કરી ૬૦ વર્ષની ઉંમરે મોરળી સ્ટેટ
 તરફથી પેન્શન મેળવી ૧૬ વર્ષ થયાં નિવૃત્તિમાં રહી
 ધર્મ ધ્યાન કરતાં જે કાંઈ ગ્રંથો વાંચવામાં આવ્યા
 તેમાંથી મને જે કાંઈ તત્ત્વ ગ્રહણ કરવા લાયક
 લાગ્યું તે દોહરા રૂપે જુદે જુદે વખતે ટાંચણ

કરેલું તે વિષયો અનુક્રમે ગોઠવી આ “સમાધિ
 યોધ” નામે પુસ્તક તૈયાર કરેલું છે, એટલે તેમાં
 ત્રુટિઓ રહેવાનો સંભવ તો છે, પણ એકંદરે જન-
 સમાજને કાંઈ ઉપયોગી થાય એમ જાણી છપાવવાને
 લલચાઉં છું.

શ્રી શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન ડોન્કરન્સ પ્રકાશનાં
 ગ્રાહકોને વિનામૂલ્ય લેટ આપવા માટે આ આવૃત્તિ
 છપાવવામાં આવી છે. અને તેના ખર્ચ પેટે રૂ.
 ૧૦૦) અંકે એકસો શ્રી અભેચંદ એન્ડ બ્રધર્સ
 (કુસુંદા) માનભૂમ તરફથી મદદ રૂપે મળેલા છે.
 બાકીનું ખર્ચ “પ્રકાશ” એક્સિસે આપવા સ્વીકાર્યું
 જેથી આ અમૂલ્ય પુસ્તકનું પ્રકાશન અને પ્રચાર
 થવા પામેલ છે.

કુલચંદ હીરાચંદ મહેતા.

સમાધિ વોધ.

૨૨૬૬

સ્તુતિ.

અરિહંત સિદ્ધ આચાર્યજી, ઉવઝાય સૌ સાધ; ગુરુ ગણુધરને પ્રણમતાં, પ્રજળે પાપ અગાધ. અષ્ટ કર્મ અરિને હણી, પામ્યા કેવળ જ્ઞાન; ખાર ગુણે ખીરાજતા, અરિહંત ભગવાન. સકળ કાર્ય સિદ્ધિ કરી, પામ્યા શિવ સુખ વાસ; અષ્ટ ગુણ આરાધીએ, પહોંચે મનની આશ. પાળી પદ્ધતિ શીખવે, અણુગારી આચાર; સમ દ્રષ્ટિ સહુ શિષ્ય પર, નમું છત્રીશ ગુણુધાર. ભણે ભણાવે ભાવથી, સૌ સિદ્ધાંત સમુદાય; પચીસ ગુણુ ધારી સદા, નમું પ્રભુ ઉવઝાય. પાંચ મહાવૃત પાળતા, છે છકાયના પીર; ગુણુ સત્યાવીશ શોભતા, નમું સાધ ગણુ ધીર. ગુણુ એકસો આઠ એ, ભજ જીવ આણી ભાવ; મારગ મોક્ષ દ્વારને, ભવ દધિ તરવા નાવ

પ્રથમ આત્માને ધ્યાન સન્મુખ કરવા માટે
સંસાર દેહ લોગાદિથી વૈરાગ્ય ઉપજાવવા સારૂ ખાર
લાવના કહે છે.

જ્ઞાનાર્થેવ આદિકથી,
ખાર લાવના લાવના,
સુત્ર રહસ્ય સમન્તું નહિ,
શૈલી વિરૂદ્ધ વદાયતો,
ખાર લાવના લાવતાં,
વિરાગતા વધતી થતાં,
મોક્ષ મહેલમાં પહોંચવા,
ચઢતે લાવે પ્રગ ધરેં,
અનિત્ય અસરણુ લાવના,
એકત્વ અન્યત્વ ને,
આશ્રુવ સંવર નિર્જરા,
લોક યોધિ દુર્લભ સહુ,

શોધી સખળ સહાય;
પુણ્યચંદ ચિત્ત ચક્રાય. ૧
સમન્તું ન કવિતા ન્યાય;
સુચવી શ્રેણી સહાય. ૨
ચિત્ત વરતે સમલાવ;
મળે ધ્યાનને લાવ. ૩
કરશે શુભ વિચાર;
સીડી લાવના ખાર. ૪
ત્રીજી તે સંસાર;
અશુચી ઊર ધાર. ૫
ધર્મ લાવના લાવ;
લવ તરવાનાં નાવ. ૬

૧ પહેલી અનિત્ય ભાવના.

પંચવિધ સુખ ક્ષણિક છે,	ક્ષણિક છે ત્રી લોક;	
અવિચળ ગણી ન આદરો,	અનિત્ય જાણો દોક.	૧
ધન ધાન્ય કુટુંબ ત્રીયા,	આદિ પરિચ્છેદ પાપ;	
કાયા ભાજન રોગનું,	છતાં મુંઝાણો આપ.	૨
શરીર વ્યાધિનું ધામ છે,	જોગન થકે જરાય;	
સંપદા વિરૂદ્ધ વિનાશ છે,	જીવન લે જરાય.	૩
સંબંધ કર્યા સંસારમાં,	ગણી શારમાં સાર;	
બંધાઈ કરમ બંધને,	થયો અંત ખુતાર.	૪
પલ પલમાં પલટે દશા,	વિરૂદ્ધ સાંજ સતાર;	
નિત્ય ન કાંઈ દેખીએ,	અનિત્ય સુખ સંસાર.	૫
વિવેકથી વિચારતાં,	સુખથી દુઃખ અનંત;	
છતાં દુઃખને સુખ ગણી,	સુખને દુઃખ કહાંત.	૬
કુટુંબ પરિચ્છેદ કાંઈ ગયો,	વળી જાય છે જોય;	
બાંધી પણ નિશ્ચે જશે,	તો જીવ શાને રોય ?	૭
તન ધન પુત્ર પરિવારને,	અનિત્ય આ સંસાર;	
નિત્યશું પ્રીત લાગી નહિ,	એળે ગયો અવતાર.	૮

અહો આશ્ચર્ય આ કેટલું ?	જાતું જગત જણાય;
તોય ન ચેલ્યો આત્મા,	જણે અમર નિજ કાય.
સગાં સંબંધી સ્નેહીઓ,	સી પુત્ર પરિવાર;
સ્વાસ્થ સાધી સર્વ તે,	કરે અંત કુવાર. ૧૦
કોઈ શત્રુ પરભવ તણા,	આભવનો પરિવાર;
વેર વાળના કારણે,	લે અવતાર નિજ દ્વાર. ૧૧
વાળે વેર અતિ આકરાં,	પ્રેરી વચન પ્રહાર;
કર સહન સમ ભાવથી,	આણી કર્મ વિચાર. ૧૨
બંધુ શત્રુ પરભવ તણા,	શત્રુ બંધુ છે આજ;
ભૂલી ભાન પરવશ થડયો,	એથી કયું અકાજ. ૧૩
સ્વજન બંધુ નહિ સમજવાં,	પ્રેરે પાપ અપાર;
અધ્યસ્થ સદ્ગુરૂ મિત્ર તે,	ભવ તરવા આધાર. ૧૪
વસ્તુ સમુહ સંસારના,	પર્યાએ પલટાય;
અવિચ્છાળ કાંઈ ન દેખીએ,	નહિ અમર આ કાય. ૧૫
ભવ ભ્રમણના પંથીઓ,	વિષય સ્થળ રહી વિશ્રામ;
દુઃખાન કંપાતા મરી,	યામે દુર્ગતિ ઠામ. ૧૬
ભવમાં ભમતા પંથીઓ,	યામી માનવ દ્વાર;
વિષયાદિકને વશ પડી,	મેળવે ભવ ઘટમાળ. ૧૭

પર પુણ્ય પરિબંધ મળ્યો,	પલમાં પરનો ધાય;	
ખાળે અંતર આપણું,	છતાં જીવ લોભાય.	૧૮
ઇંદ્રિય જનીત સુખ સુખ નહિ,	દુઃખ દુઃખ છે દુઃખ;	
શ્રીતળ શાતા પામવા,	પડવું અગની સુખ.	૧૯
ચાપે વિત્ત પેદા કરી,	પોષ્યો નિજ પરિવાર;	
નિચ ગતિ નિજ એકને,	સહાય કોણ થનાર ?	૨૦
હીંસક શાસ્ત્ર તેં સંચીયાં,	વાપરે વંશ વિસ્તાર;	
નીચ ગતિ નિજ એકને,	માહ ન કોઈ થનાર.	૨૧
આથી આતમ ચેતીને,	જો હેય ઉપાદેય;	
અરલ શુદ્ધ વ્યવહારથી,	ભવ સુધરશે જ્યે.	૨૨
યામી દુર્લભ મનુષ્ય ભવ,	હીતા હીત સમજાય;	
છતાં અહિત આદર કરી,	વિષય વિષ કૂળ ખાય.	૨૩
કૂળને વૃક્ષની ઉપમા,	આપે જ્ઞાની કોય;	
મનુષ્ય પક્ષી આવી મળે,	ઉડી જતાં જ્યે.	૨૪
પ્રસાતે વાજાં વાગતાં,	ગાતાં મંગળ ગીત;	
મધ્યાને મોં ઢાંકીયાં,	રૂઢન શુભ્યાં ભયભીત.	૨૫
પરમાણુથી જે થયા,	પ્રાણી માત્રના દેહ;	
પરમાણુમાં જઈ મળે,	તેમાં શો સંદેહ ?	૨૬

ચરમાણું સૌ વિશ્વના,
 એથી અનંત ગણા કર્યા,
 અકેક યોનીમાં ઉપજ્યો,
 શુદ્ધ સમકીત અભાવથી,
 એક પરમાણું એહવે,
 શરીર રચના અહારમાં,
 ઈંદ્ર ધનુષ્યની ઉપમા,
 અત્યંત સુંદરતાં છતાં,
 જળ પ્રવાહી પ્રૌઠો જતો,
 આયુ ધન જોગન ગયાં,
 જળ પ્રવાહી પાછો કદી,
 આયુ યૌવન સુંદર્યતા,
 આયુ બળ જળ અંજળી,
 ધૃદ્ધિપાણું વિકટ અતી,
 મન વાંછિતં વિષયો મળ્યા,
 ગાણ ગાણગર તણી,
 માલ ધન કુટુંબ કીરતિ,
 માદળ સમ વિખરાય છે,

ગણુતાં નહિ ગણાય;
 એવે ભવ ધણાય. ૨૭
 અનંતાનંતી વાર;
 આલ્યો ન ભવનો પાર. ૨૮
 રહ્યો નથી અવશેષ;
 વપરાયા વિણ લેશ. ૨૯
 તન ધન ને અધિકાર;
 વિલય થતાં શી વાર? ૩૦
 વળે નં પાછો જેમ;
 ફરી ન આવે તેમ. ૩૧
 વળવા સંભવ હોય;
 પાછાં ન પામે કોય. ૩૨
 યૌવન મદ પણુ એમ;
 તોપણુ દેહસું પ્રેમ. ૩૩
 સંયોગ સ્વપ્ન સમાન;
 અંત નહિ નિશાન. ૩૪
 રિદ્ધિ રાજ ભંડાર;
 ધન જોગન અધિકાર. ૩૫

વૃક્ષ નીરજીવ થાય તો,
 અસાર મનુષ્યા દેહ આ,
 ચંદ્ર સુર્ય રતુ ગ્રહો,
 ગયું શરીર ન સાંપડે,
 સુખદુઃખ આદિ અંત સદા,
 સુખીઆ દુખમાં દુખતા,
 માતમ પ્રગળ છે માંડવું,
 પરને પ્રભુતાથી લભું,
 તન ધન યૌવન ણાંધવો,
 અનિત્ય અવસ્થા જગતની,
 ક્ષણ ક્ષણમાં ક્ષય પામતા,
 ભ્રમથી ભુક્તી ભાનને,
 ખટ દ્રવ્ય નિત્ય સ્વભાવથી,
 નિત્ય અનિત્ય ત્યાગે ગ્રહે,
 ત્રીલોક ખટ દ્રવ્ય મથી,
 પર્યાય સ્વભાવ વિભાવથી,
 નિત્ય ભજી અનિત્ય તજી,
 અનિત્ય ભાવના ભાવતાં,

મળે કાંઈ મુલદાર;
 આપે છેવટ ધાર. ૩૬
 ફરી ફરી દેખાય;
 તેની શી મમતાય. ૩૭
 જોતાં નહિ જણાય;
 દુખી જીવ સુખી થાય. ૩૮
 ભૂલ્યો આપને આપ;
 માની મહદ પ્રતાપ. ૩૯
 પ્રિયા પુત્ર પરિવાર;
 વીજળીનો ચમકાર. ૪૦
 જડને ચૈતન્ય દોય;
 ગણે નિત્ય સહુ કોય. ૪૧
 અનિત્ય દ્રવ્ય પર્યાય;
 એ અજ્ઞાને થાય. ૪૨
 નિજ નિજ રૂપે નિત્ય;
 ઉપજે વિશુસે અનિત્ય;
 ધરીએ આતમ ધ્યાન;
 અંતર ઉપજે જ્ઞાન.

મયાય યુદ્ધ પાલટી,	દ્રવ્ય દષ્ટિએ જોય;
નિશ્ચય નિત્ય સ્વરૂપનું,	ધરો ધ્યાન સહુ કોય. ૪૫
અનિત્ય ભાવના ભાવતાં,	ગણો અનિત્ય સંસાર;
દેહાદિક સર્વ અનિત્ય છે,	નિત્ય આત્મ આધાર. ૪૬
અનિત્ય ભાવના ભાવતાં,	તર્યા અનંતા જીવ;
ભાવો યુગ્મ એ ભાવથી,	મળશે મારગ શીવ. ૪૭

૨ બીજી અશરણુ ભાવના.

અશરણુ ભાવના એહ છે,	શરણુ ન જીવને કોય;
શરણુ એક નિજ આત્મને,	પંચ પરમેષ્ટી હોય. ૧
કોઈ શરણુ ન જીવને,	દાનવ માનવ રાય;
તે પણ કાળના કાળીયા,	શું કરશે તુજ સાંચ? ૨
ઝી પુત્ર પિતુ માતકે,	જેની બંધવ મિત્ર;
તે પણ ટગમગ જોઈ રૂવે,	કાળનું કામ વિચીત્ર. ૩
દુર્વિવાર્થ ગતિ કાળની,	શરણુ ન રાખે કોય;
મંત્ર જંત્ર કે ઐષધી,	મિત્ર કાળનાં હોય. ૪
મળ્યો કુટુંબી કારમો,	રૂદન કરે નરનાર;
મોતે કાળની આગમાં,	તેનો નહિ વિચાર, ૫

કઈક રાગા રાજ્યા,
 કાળે કીધા કોળીયા,
 ડાકટર વૈદ્ય હુકીમ કે,
 પરિવાર લઈ ચાલીયા,
 કાળ ન પહોંચ્યો ત્યાં લગી,
 તુટીની ખુટી થવા,
 આયુષ્ય કર્મ જનમ થકી,
 વરસ ગાંઠની મંજલે,
 ચેખી પુત્ર વરસે વધે,
 નથી વાસ્તવિક જાણતી,
 ઘડી માસ વર્ષ ગાંઠને,
 રંજીત કરી કરમાં ગૃહી,
 કાળ લાંચ લેતો નથી,
 સમભાવે ગૃહે સર્વને,
 વૃદ્ધ જીવાન કે બાળકો,
 ધક્કાપાત નહિ કાળને,
 બાળ વૃદ્ધ રંકીક ધની,
 ન્યુનાધિક કોએ નહિ,

કેશવ, ચકી રામ;
 શો શોચ આ ઠામ. ૬
 જોશી ડાશી સોય;
 કાળે ન મૂક્યા કોપ. ૭
 ઉપાય અનુકુળ થાય;
 શરણુ ન કોઈ ઉપાય. ૮
 પ્રેરે મૃત્યુ પાપ
 કાળ ધર્મ નિવસ ૯
 માતા મન મલકાય;
 મરણુ નજીકે જાય. ૧૦
 નિમિત્તે અયુષ્ય કર્મ;
 બાજવે કાળના ધર્મ. ૧૧
 નથી રાખતો પક્ષ;
 સહુ પર સરખો લક્ષ. ૧૨
 ગરીબ સંત ધનવાન;
 સરવે ગૃહે સમાન. ૧૩
 સુના કાયર કોય;
 નામ સંવર્તિ હોય. ૧૪

આણી સહીત વન પરજળે,	વચ્ચે વૃક્ષ ચઢી કોય;
નિજને સુરક્ષિત ગણી,	ઝેઠો કૌતક જ્ઞેય.૧૫
તેમજ જીવ જગવન વિષે,	મરતાં દેખું નીત;
છતાં અમર નિજને ગણું,	એજ મતિ વિપરીત.૧૬
સજ સેના હુય ગય તણી,	સજી જગતર તરવાર;
ચોક્કીની વચ્ચમાં રહે,	તોય ન મુકે કાળ.૧૭
વિષય મોહ મદિરા થકી,	મુરજાયો સંસાર;
વસ્યો કાગની દાઢમાં,	ઉગે ન એક વિચાર.૧૮
વિપરીત મતિ વિશ્વની,	નહિ વિવેક વિચાર;
સેવી વિષય કષાયને,	કરે અક્ષણ અવતાર.૧૯
શરણુ ન કોઈ સંસારમાં,	શોધ્યાં સરવે સ્થાન;
ચરમપરા વ્યવહારથી,	શરણુ પંચ ભગવાન.૨૦
નિશ્ચય નયથી તો લહે,	શરણુ આતમા એક;
બુધ્ધ્યંદ એ શરણથી,	ઉદ્ધર્યા જીવ અનેક.૨૧

૩ ત્રીજી સંસાર ભાવના.

ચકાવો ગતિ ચારનો,	સુખ દુઃખનાં ધામ;
મળેલ નિજનાં માનતાં,	રાયે જીવ ઝેલાનં. ૧

નિજ નિજ કર્મવત જોડીઓ,
 અંધાઈ તે અંધને,
 કહી પુર્વ પુણ્ય ઉદયથી,
 શુભ ઉદય એ લોગવી,
 ગતાગતિ ઘટમાળમાં,
 દાવાનળ દુઃખ લોગવ્યાં,
 લોગવાય લાજો હબ્બુ,
 સ્વરૂપ લાન ભુલ્યા થકો,
 અટ દ્રવ્ય ખેલ ખરેખરો,
 કર્મ સંયોગ સાથે ગળી,
 સમય માત્રને આંતરે,
 પર્યાયથી પાલટે,
 લહે સમુદ્ધ પરસ્પરે,
 પ્રાણ પર્યાય ભુંગી લહે,
 જીવની રાસ જળરી ખહું,
 અનંતાનંત કોટી લહે,
 ચેતન તે જડ સંગમાં,
 કરમાનુસારે કરે,

ત્રસ સ્થાવર મળીકાય;
 ઉપજી મરે સંકાય. ૨
 સ્વર્ગે સુખ પમાય;
 અવર ઉદય ત્યાં જાય. ૩
 કૃષ્ણે અનંતી વાર;
 સાતી નહિ લગાર. ૪
 લોગવે આગમ કાળ;
 સુખી દુઃખી ત્રીકાળ. ૫
 અચળનિયમ આધાર;
 જગ સચના નિરધાર. ૬
 જીવ સમુદ્ધ સંસાર;
 વેધ વિચિત્ર પ્રકાર. ૭
 ઉલસે વેર અભિમાન;
 વિશ્વ સુદ્ધર્તુ સ્થાન. ૮
 ત્રસ સ્થાવર સમુદાય;
 પાર ન કહી પમાય. ૯
 મળી થયો સંસાર;
 ગતાગતી જે વાર. ૧૦

ગતાગતીમાં બહુ કર્યા, સંબંધ વિચિત્ર પ્રકાર;
 ચરણવ્યે પાર ન પામીએ, કહું સંશ્લેષે સાર.૧૧
 સંબંધ સરવે પરસ્પરે, કર્યા સર્વ જીવ સંગ;
 અનંતવાર એમજ બન્યું, મળતાં કર્મ પ્રસંગ.૧૨
 માતપિતા પુત્ર પુત્રી ત્રિયા, બેની બંધુ અનેક;
 કિલટ સુલટ ભવ આદર્યા, વાર અનંત પ્રત્યેક.૧૩
 અહો! સંબંધ શા શોચના, પુત્ર પતિ ત્રિયા માય;
 બાપ બેટો જનમે કદી, પિતા પુત્રિ પતિ થાય.૧૪
 એહ મદિરા વેનમાં, સમજ્યો નહિ સંબંધ;
 આ અવસર અનુકુળ છે, ચેતી હોડના બંધ.૧૫
 સંસાર રંગભૂમિ કહો, નટી સંસારી જીવ;
 વેષ પાલટે નવ નયા, ભુત્રી ભાન સદૈવ.૧૬
 ચોનિ દેશ કુળ રૂપ કે, સુખ દુઃખ પર્યાય;
 વાર અનંતી બ્રમણમાં, ભોગવ્યાં કર્મ નિયાય.૧૭
 બંધુ શત્રુ ભવાંતરે, શત્રુ બંધવ હોય;
 કિલટ સુલટ ભવ ચક્રમાં, નહિ આપણું કોય.૧૮
 રાજ કીટમાં ઉપજે, કીટો કમથી રાય;
 હૈય નીચ નીચ ઉંચમાં, ગતાગતી જણાય.૧૯

અસદ્દ હુઃખ છે નર્કમાં,	સહો તિર્યંચ હુઃખ;
અતુલ્ય હુઃખ માનવ ભવે,	નહિ દેવ ગતિ સુખ.૨૦
કારણ આ સંસારનું,	મુખ્ય ભાવ અજ્ઞાન;
કાર્ય કર્મ ફળે ભવ ભમે,	ચતુર્ગતિ વિશુ ભાન.૨૧
અજ્ઞાન ભાવથી ઉપજે,	પર દ્રવ્ય પર મોહ;
રાગ દ્વેષ વર્તન થતાં,	નિજ આત્માશું દ્રોહ.૨૨
કરમ બંધ એ દ્વંદ્વથી,	કર્મ બંધે ગતિ ચાર;
આત્મા દેહ નિત્યા નિત્યનો,	ઉગ્યો ન અંશ વિચાર.૨૩
પર દ્રવ્યની પ્રીતથી,	કર્મ બંધ સંસાર;
ફળ તેનું ગતિ ચારમાં,	ભમવું વારમવાર. ૨૪
નિજ સ્વરૂપ ગણુ નિજનું,	પર ગણુ પરિગ્રહ દેહ;
ભાવે નિજ નિજને ભજી,	છોડ દેહસું નેહ.૨૫
વિશ્વ રચના વિચારતાં,	થાય સ્વરૂપ સન્મૂળ;
યુગ્મચંદ એથી મળે,	શીવ મંદીરમાં સુખ.૨૬

૪ એથી એકત્વ ભાવના.

સર્વ અવસ્થામાં સદા,	જીવ એકત્રો જોય;
ગહન પંથ ગતિ ચારનો,	સાથી ન મળે કોય. ૬

પ્રત્યેક ભવમાં એકલો,
 કર્મ એકલો લોગવે,
 કરમ કરી જીવ એકલો,
 ખાનારાં સૌ ખસી ગયાં,
 અત્યંત દુઃખ જે નર્કનાં,
 તે લોગવે જીવ એકલો,
 સુખ સમૃદ્ધિ સ્વર્ગનાં,
 તે પણ લોગવે એકલો,
 જન્મ મરણ સુખ દુઃખમાં,
 કર્યાં કર્મ પ્રત્યેકને,
 પરિવારને પોષવા,
 લોગવવા જીવ એકલો,
 કુડ કપટે ધન મેળવ્યું,
 ખરે વખત ખસી જશે,
 પ્રત્યક્ષ આજ નિહાળીએ,
 જન્મે તે મરે એકલો,
 અજ્ઞાન દશાએ જીવ આ,
 પરને નિજ માની રહ્યો,

જન્મે મરે સદાય;
 થાય ન કોઈ સદાય. ૨
 પોખ્યો પિંડ પરિવાર;
 કરતા લોગવનાર. ૩
 અસહ્ય સહ્યાં ન જાય;
 પાપ ઉદય જે થાય. ૪
 અનુપમ જે કહેવાય;
 પુન્ય ઉદય જે થાય. ૫
 સગાં ન સાથી કોય;
 લોગવતાં તું જોય. ૬
 કર્યાં કલંકિત કામ;
 ભમે નર્કાદિ ઠામ. ૭
 તે ખાંતે ખાનાર;
 રહ્યો તું લોગવનાર. ૮
 જન્મ મરણ જે થાય;
 સાથે કોઈ ન જાય. ૯
 સમજ્યો ન નિજ સ્વરૂપ;
 જાણી આતમ રૂપ. ૧૦

જડ ચૈતન્યથી એકતા, માને મોહથી કોય. ૬
 કર્મ બંધનિજ ભાવથી, કર્યા કરે છે ભેય. ૧૧
 સ્વ સ્વરૂપથી સર્વથા, ન્યારાં ગણે અનિત્ય; ૧૨
 અંતર ભાવ-શુદ્ધિ થતાં, થાય મુક્ત બચીત. ૧૨
 શુદ્ધ સ્વરૂપ ન નિજ ગણ્યું; ઉદય મોહ અજ્ઞાન; ૧૩
 ધરને નિજની એકતા. કર્મબંધનું સ્થાન. ૧૩
 શુદ્ધ સ્વરૂપ નિજ એકતા, પર તે પર પરભાય; ૧૪
 થાય ભગવાન અનુક્રમે, મોહ નજીક જવાય. ૧૪
 મોહ રહિત આત્મા, ત્રિંતવે એકતા એક; ૧૫
 છુટે સંબંધ સંસારથી, કર્મ ન વળગે છેક. ૧૫
 નિશ્ચય નયથી આત્મા, નિર્માળ જ્ઞાન સ્વરૂપ; ૧૬
 ધર સંગે સંસારમાં, સંગ તજ્યે શીવ રૂપ. ૧૬
 નિસંગ છે નિજ આત્મા, પર સંગે પીડાય; ૧૭
 યુષ્પચંદ તજ સંગ તો, પંચમ ગતી પમાય. ૧૭

પં પાંચમી અન્યત્વ ભાવના.

નિશ્ચય નયથી આત્મા, ચિદાનંદ સ્વરૂપ; ૧
 કર્મ બંધની દ્રષ્ટિએ, દેખાએ દેહ રૂપ. ૧

આત્મા ચૈતન્ય નિત્ય છે,
 અનાદિ કાળ અધ્યાસથી,
 મેલ ખાણમાં મળી રહ્યો,
 દેહ આત્માની એકતા,
 અમુર્તિક ચૈતન્ય જીવ છે,
 અચેતન મુર્તિક દેહને,
 જીવ એ મૃત્યુક દેહને,
 હલન ચલન શક્તિ કરે,
 પુદ્ગળ રચના દેહ આ,
 ચેતન નિત્ય નિજ ભાવથી,
 વસતાં ગર્ભાવાસમાં,
 મૂકી દેહ મૃત્યુ સમે,
 ક્ષીર નીર તલ તેલને,
 તેમજ દેહમાં આત્મા,
 તલ તેલ ક્ષીર નીર સમ,
 યજ્ઞ નિશ્ચય છે જુજવાં,
 લુણ પાણીમાં ઓગળી,
 અગન આંચ દેખાડતાં,

છે જડ દેહ અનિત્ય;
 થઈ એકતા પ્રતિત. ૨
 સુવર્ણ શોધ્યે લીન;
 કર્મ મેલ આધીન. ૩
 મોહથી ચલન સ્વભાવ;
 નહિ ચલનનો દાવ. ૪
 શિર ઉપાડી ભાર;
 એ છે જુદો ધાર. ૫
 અનિત્ય જડ આકાર;
 નિરંજન નિરાકાર. ૬
 હાતું ન સાથ શરીર;
 પામ્યો અન્ય શરીર. ૭
 પુખ્તે જેમ સુવાસ;
 દેહ જેવડો ખાસ. ૮
 આત્મા વ્યાપી દેહ;
 નથી તેમાં સંદેહ. ૯
 જણાય નિર્મળ નીર;
 લુણથી ન્યાડું નીર. ૧૦

આત્મ દેહ અન્યત્વનાં, આ સરવે એંધાણુ;
આત્માથી વિચારતાં, પામે આત્મ ભાન.૧૧

(દેહ આત્મા એક દેખાય છે છતાં લિપ્ત છે તે
પછી અન્ય સ્વજન પરિવાર પરિશ્રદ્ધાદિના લિપ્તપણામને
સંદેહ શો? તે કહે છે).

દેહ આત્માની લિપ્તતા,	પામ્યો જેહ પ્રવીણુ;
કુટુંબ પરિશ્રદ્ધા તો પછી,	સહજ જણાયે લિપ્ત.૧૨
જડ ચેતન સહવાસમાં,	આવ્યા આવે કોય;
સૌં સ્વતંત્ર નિજ રૂપથી,	લિપ્ત લિપ્તતા જોય.૧૩
પુત્ર મિત્ર પરિવારને,	અન્ય પરિશ્રદ્ધા કોય;
સરવે તુજથી લિપ્ત તે,	નિજપણે કેમ હોય.૧૪
પિતૃ માતા સ્ત્રી પુત્રનો,	જુજવેથી અવતાર;
પરમાં નિજપણુ નવિધટે,	મજ્યાં કર્મ અનુસાર.૧૫
પદાર્થ સહુ ત્રીલોકના,	તુજ સ્વરૂપથી લિપ્ત;
સ્વ સ્વરૂપે સૌ જુજવા,	નહિ તારે સ્વાધીન.૧૬
કાળ અનાદિથી થઇ,	પર પુદ્ગળથી પ્રીત;
આવરતન ગતિ ચારતું,	કારણુ એજ ખરીત.૧૭

ઐતન્ય નિજ સ્વરૂપ જે, પર ભાવથી લિપ્ત;
 ભવ ભ્રમણને ટાળવા, ધરો ધ્યાન થઈ દીન.૧૮
 સર્વ દ્રવ્ય સંસારના, નિજ નિજ સત્તાધીન;
 લિપ્ત લિપ્ત એક એકથી, મળે નહિ કો દીન.૧૯
 પરમાં હું મારાપણું, ભ્રમથી ભુલ્યે થાય;
 નિજપણું નિજમાં જડ્યે, કર્મ સંબંધ કપાય.૨૦
 અન્યત્વ ભાવના ભાવતાં, સ્વ પર થાય પિછાન;
 યુગ્પચંદ એથી મળે, અંતે કેવળ જ્ઞાન.૨૧

૬ છઠ્ઠી અશુચી ભાવના.

રજ શુકે સંયોગથી, સંચર્યો ગર્ભાવાસ;
 અશુચી સ્થાન મળ મુત્રમાં, કર્યો વાસ નવ માસ.
 અરડાયો મળ મુત્રથી, કર્યો રૂધિર અહાર;
 જનર્યો ભાષે મસ્તકે, મળ મુત્રને દાર.
 રજ શુકના બીજથી, ગંધાયો આ દેહ;
 નવનીક દુરગંધી વહે, ધાતુ ઉપધાતુ ગેહ.

લોહી માંસ મળા ભયુ',
 નાડી ગંધ ગાંધ્યા ગહુ,
 દુર્ગંધમય આ દેહમાં,
 સડતી પડતી વિનસતી,
 કૃમિ જીવની કોથળી,
 કોપી કષ્ટ આપે ઘણું,
 મહા મલીન આ દેહની,
 નિર્મળ જળ સાગર તાણું,
 સુગંધી ખટ રસ લલા,
 રૂપ રસ ગંધ પાલટી,
 સ્વચ્છ મહેલ ન હોય તો,
 હાડપોંજર માંસે ભયુ',
 શરીર રૂપી પોંજરું,
 પ્રોષણ માગે નિત નવું,
 અવગુણ એવા દેહમાં,
 સમ્યક્ જ્ઞાન ચારિત્રથી,
 અનાદિ કાળથી અનુક્રમે,
 દર્શણ દુઃખ પણુ એ સદી,

અસ્તિ પોંજર જેહુ,
 મઠયું ચામથી તેહ. ૪
 કૃશી વસ્તુ નહિ સાર;
 તોપણુ મોહ અપાર. ૫
 વાત પીતાદી દોષ;
 દેહ દરદનો દોષ. ૬
 શુદ્ધિ કદી ન થાય;
 ધોએ મલિન જણાય. ૭
 ઉદરમાં ઓરાય;
 મળ રૂપે ગંધાય. ૮
 આવે કેવો ખ્યાલ;
 ગિંહામાણું વિકરાળ. ૯
 સદા રોગનું ધામ;
 નહિ કદીએ વિશ્રામ. ૧૦
 છતાં એક છે લાવ;
 ભવ તરવાનું નાવ. ૧૧
 દેહ સાથ સંગંધ;
 કરમે ખાંધ્યા ખંધ. ૧૨

આતંત થાય સ્વ પરતાણી, મનાય દેહને ભિન્ન;
 સ્વ સ્વરૂપ ન્યારું થતાં, નહિ કરમ આધિન.૧૩
 સ્વ સ્વરૂપ નિશ્ચય થયે, મટે રાગ ને દ્રેષ;
 સમભાવ વરતાય ત્યાં, નહિ કરમ લવલેશ.૧૪

કવિત-મનહર.

હાડ માંસ મઠયું ચામ, મળ સુત્ર તાણું ઠામ,
 કૃમિ ભવ તાણું ધામ, શુચી શોધી શું જડે ?
 રોગનું છતાં નિધાન, માગે નિત્ય ખાનપાન,
 સંતોષ્યે ન સમાધાન, વિષયો ચિતે ચડે.
 ભોગવીને ભોગ વેરી, લાવે નવ નવા રોગ,
 કરમ સંભોગે કષ્ટ, આકરાં આવી પડે.
 ભોગ મોહ ન્યારી ગણી, વાળો તપશ્ચર્યા ભણી,
 સુખ્ય દેહ તો મણી, શીવ સુખ સાંપડે.૧૫

દોહરો.

નિર્મળ નિજ આતમા, દેહ અશુચી ગેહ;
 ણી ભણું નિજ ભાવને, છોડી દેહસું નેહ.૧૬

અશુચી ભાવના ભાવતાં, મળે સમાધિ ભાવ;
પુષ્પચંદ એ અંતમાં, ભવ તરવાનું નાંવ.૧૭

૭ સાતમી આશ્રવ ભાવના.

મન વચન કાયા તણી,	ક્રિયા શુભાશુભ યોગ;
આશ્રવ તે પણ એજ છે,	નિશ્ચય તજવા ભોગ. ૧
જેમ નાવના છીંદથી,	આવે નીરની નીક;
જીવ શુભાશુભ યોગથી,	ખાંધે કરમ અધીક. ૨
યમ પ્રશમ નિવેદતા,	તત્ત્વ અવસંખન સાર;
શુભ આશ્રવ શુભ કર્મનો,	છે સંચય કરનાર. ૩
મૈત્રી પ્રમોદ કારણ્યને,	માધ્યસ્થ એ ચાર;
ભાવે ભાવના જીવ તો,	શુભ સંચય હિતકાર. ૪
જોધ માનુ માયા અને,	ચોથો લોભ કષાય;
વિષયમાં વ્યાકુળપણે,	અશુભ સંચય થાય. ૫
વિષયમાં વ્યાકુળ રહી,	કષાય સેવી ચાર;
આર્ત રોદ્ર ધ્યાને કરી,	વધારવો સંસાર. ૬

૧ અંશુવૃત્ત, મહાવૃત્ત,

૨ કષાયોની મંદતા.

૩ સંસારથી વિરકતતા અથવા ધર્માનુરાગ.

વિષય કષાય કરી પરાં,	જીતે રાગ ને દેષ;
વરતે સરલ સ્વભાવથી,	સંચે શુભ વિશેષ. ૭
વ્યાપાર જીવ વિરાધના,	આરંભકારી કામ;
અશુભ કર્મ ત્રિયોગથી,	અશુભ આશ્રવ નામ. ૮
મિથ્યાત્વ અવિરતિ પ્રમાદને,	અશુભ જોગ કષાય;
પાપ સ્થાન અઠારથી,	અશુભ આશ્રવ થાય. ૯
સમ્યક્ત્વ અપ્રમાદ વિરતિ,	શુભ જોગ અકષાય;
સેવે ન પાપ સ્થાન તો,	શુભ આશ્રવ લેવાય. ૧૦
નિશ્ચય નયથી નિશ્ચયે,	આત્મા જ્ઞાન સ્વરૂપ;
આશ્રવથી અજાગા થયે,	છે શુદ્ધ નિજ સ્વરૂપ. ૧૧
આશ્રવને અજાગા કરી,	ધરીએ સંવર ભાવ;
ગુણચંદ તપગ્યા વડે,	ભવ તરવાનું નાવ. ૧૨

૮ આઠમી સંવર ભાવના.

સરવે આશ્રવ દારને,	રોકી મન વચ કાય;
સંવર દ્રવ્ય કે ભાવથી,	અનુસરીએ તો થાય. ૧

મન વચન કાયા થકી, રોકો આશ્રવ દાર; ૨
 દ્રવ્ય સંવર થાએ સદા, એ તો નય વ્યવહાર. ૨
 કર્મ ગ્રહણ ક્રિયા સહ, તજે અભ્યંતર શુદ્ધ; ૩
 ભાવ સંવર પ્રભાવથી, નિર્મળ આત્મા ખુદ. ૩
 સર્વ કલ્પના જાળને, મેલી મનથી દૂર; ૪
 સ્વ સ્વરૂપ સ્થિર થાય તો, નથી મોક્ષ કંઈ દૂર ૪
 સમિતિ ભાવ વિશુદ્ધતા, ક્ષમા આદિ દશ ધર્મ; ૫
 દ્વાદશ ભાવના ભાવવી, એ સંવરનો મર્મ. ૫
 આત્મા કાળ અનાદિથી, આશ્રવને સહવાસ; ૬
 ભૂદયો ભાન સ્વરૂપ તે, ગન્યો કર્મનો દાસ. ૬
 જ્યારે જાણી સ્વરૂપ ને, થાય તેહમાં લીન; ૭
 સંવર રૂપ થઈ સર્વથા, કરે કર્મને લિન. ૭
 આશ્રવ ભરતી આવતી, સંવરથી રોકાય; ૮
 પુરવ કરમની નિરજરા, થાતાં મોક્ષ જગાય. ૮
 નિજ સ્વરૂપમાં લીનતા, નિશ્ચય સંવર એહ; ૯
 સંયમ શુદ્ધ ચારિત્રથી, આશ્રવ પામે છેહ. ૯
 લીન થવું નિજ સ્વરૂપમાં, નિશ્ચય સંવર ભાવ; ૧૦
 પુષ્પચંદ એ ધ્યાન છે, ભવ દધિ તરવા નાવ. ૧૦

૬ તવમી નિર્જરા ભાવના.

આવક અટકી આવતી,	આવ્યો સંવર ભાવ;
શોષ રહ્યાં તે ટાળવા,	સાધ નિર્જરા દાવ. ૧
સકામ અકામ બે લેદથી,	કર નિર્જરા વિચાર;
તાપથી કર્મને ટાળવા,	સકામ નિર્જરા ધાર. ૨
શુદ્ધ ચારિત્રથી આદરે,	તાપસ્યા બાર પ્રકાર;
પકવી કર્મ લે ભોગવી,	સકામ નિર્જરા ધાર. ૩
ત્યાગી થઇ તપસ્યા વડે,	આણિ ઉદયમાં કર્મ;
કરે નિર્જરા સર્વથા,	એ કેવળી પદ મર્મ. ૪
ફળ પકવવા કારણે,	આદરીએ ઉપાય;
કર્મ ફળ તપસ્યા તાપથી,	પાકી ખરે સદાય. ૫
સંસારી સહુ જીવને,	અકામ નિર્જરા થાય;
થોડીને ફળઝાડથી,	ખરશે વિણ ઉપાય. ૬
કરમ ઉદય ફળ આપીને,	ખરતાં રહે સદાય;
બુદ્ધા આશ્રવ દારથી,	નિત નિત સંચય થાય. ૭
સદોષ સોનું તાપથી,	શોધો થાય વિશુદ્ધ;
કર્મ કલંકિત જીવ તે,	તાપથી થાય સ્વશુદ્ધ. ૮

અનોદિ આવરતન અતી, કરમે ણાંધ્યે ૭૫;
 છતાં તપસ્યા ધ્યાનથી, થાય નિર્જરી શીવ. ૯
 બાહ્ય અભ્યંતર તપ તપી, ધરે ધ્યાન મુનિરાય;
 પાપ પ્રલય કરી આદિનાં, કેવળ જ્ઞાની થાય. ૧૦
 જાણી નિજ સ્વરૂપને, કર્મ ન નવાં કરાય;
 બુદ્ધિ તપસ્યા ધ્યાનથી, બાળી મોક્ષ જવાય. ૧૧
 બાહ્ય અભ્યંતર તપ કરે, નીરારંભ નીર આશ;
 સંચીત બાળી મેળવે, શુભ ગતિનો પાસ. ૧૨
 બાહ્ય અભ્યંતર તપ કરે, નીરારંભ નીર આશ;
 સંચીત બાળી મેળવે, આત્મજ્ઞાન પ્રકાશ. ૧૩
 સંવરમય આ આતમા, કરમ મેલ કપાય;
 યુષ્પ સ્વરૂપ નિકાળતાં, સહેજ મોક્ષ જવાય. ૧૪

૧૦ દશમી ધર્મ ભાવના.

ક્ષમા, માર્દવ શૌચ ને, આર્જવ સંયમ સત્ય;
 પ્રહયર્ય તંપ ત્યાગ છે, અકિંચન ધર્મ કૃત્ય. ૧

૧ ક્રોધતા, મદુતા, નમ્રતા, નિરાભિમાનતા, ૨ પાવત્રતા,
 ભ્રમણતા, ૩ સિધાપણું, નિઃકપટપણું, અવદ્વપણું.

દશ લક્ષણ એ ધર્મનાં, દેખો જેની પાસ; ૧
 શરણુ ગ્રહણુ કર તેહનું, રાખી મન ઉદ્દાસ. ૨
 વિપરીત લક્ષણુ દેખતાં, વરતે દીલ ઉદાસ; ૩
 અધર્મ જાણી એહની, તજવી સોખત પાસ. ૩
 અટ દર્શન જોળી જુઓ, વળી અનેક અનાર્થ; ૪
 કોઈક નામ દઈ ધર્મનાં, કરે અત્યંત અકાર્ય. ૪
 ધરમ ધરમ મુખથી વદે, નહિ ધર્મનો લક્ષ; ૫
 જાણ્યા છતાં ન આદરે, તાણી રહે નિજ પક્ષ. ૫
 ધરમ માર્ગ ત્રીકાળમાં, હોએ એકજ રૂપ; ૬
 મત મતાંતર માનથી, પલટયાં ધર્મ સ્વરૂપ. ૬
 અન્ય પંથ મત સંપ્રદા, ઉપજી સમે ખરીત; ૭
 ધર્મ અવીચળ એક છે, સત્ય સ્વરૂપી નિત્ય. ૭
 દુરગતી જાતાં જીવ ને, ધરી રાજે તે ધર્મ; ૮
 રૂખડાવે ગતિ ચારમાં, ધર્મ નહિ પણુ કર્મ. ૮
 શરણુ ગ્રહી સત્ય ધર્મનું, ભાવો ભાવના બાર; ૯
 સીડી મોક્ષ દુવારની, ચઢવાનો આધાર. ૯
 કોય જીવિકા કારણે, કોય પુનવા કાળ; ૧૦
 કોઈક મત મમત્વથી, પંથ નિકળ્યા આજ. ૧૦

સુધર્મ દશ અંગે કહ્યો, વળી ઉપાંગ અનેક;
 ઉણપ જેટલા અંશથી, આંકો ક્ષીંમત છેક.૧૧૧
 ઘટે ન ઉપમા ધરમને, ધર્મ સમોવડ ધર્મ;
 પ્રત્યક્ષ પ્રભા જે ધર્મની, જીવન મુક્ત નિઃકર્મ.૧૧૨
 આત્મા ધર્મ અનાદિના, કર્મે દોષિત જીવ;
 ધરમ રૂપ નવિ પાલટે, જેમ અચળ શ્રી શીવ.૧૧૩
 કરે રૂપાંતર કોય તો, તુરત ભેદ જણાય;
 ધર્મ ધૃવ સત્ય નિત્ય તે, રહે સ્વરૂપી સદાય.૧૧૪
 કલ્પવૃક્ષની ઉપમા, આપે જ્ઞાની કોય;
 ઇચ્છિત ફળ આવી મળે, ધર્મ ધ્યાનથી જોય.૧૧૫
 નર્ક નિગોદ ગતી ટળી, મળે સ્વર્ગ વિમાન;
 ધરમે હલ્લ છે નહિ, પદવી જ્ઞાન નિધાન.૧૧૬
 કલ્પવૃક્ષ ચીંતામણી, કામ ધેન નવ નિધ;
 સેવક એ સહુ ધર્મનાં, સેવા ધર્મ સુવિધ.૧૧૭
 જગવાસી સહુ જીવને, ધરમ એજ આધાર;
 સિંચી જળ અમૃત સુખર્તુ, અંત ઉતારે પાર.૧૧૮
 મેઘ પવન રવિ ચંદ્રમા, સમુદ્ર પૃથિવ કોય;
 થાય ઉપકારી ધર્મથી, અધર્મે વિપરીત હોય.૧૧૯

સર્પ હસ્તિ વિષ વ્યાઘ્ર કે,	અગ્ની રાક્ષસ કોય;
સિંહ સહિત રક્ષણ કરે,	શરણુ ધરમનું હોય.૨૦
ધર્મ સહાયે સાંપડે,	મન વાંછિત ઉપલોગ;
ધન ધાન્ય પરીવારનો,	મળે સગળ સંયોગ.૨૧
શુરૂળાંધન સ્વામી સખા,	હિતુ રક્ષક મીત્ર;
શરણુ અવલંબન જીવનું,	સેવે ધર્મ પવિત્ર.૨૨
દશ અંગે પણ ધર્મ છે,	ળીળે વસ્તુ રવરૂપ;
રતન ત્રય ત્રીળે ધર્મ જ્ઞે,	દયામય ચેતુ રૂપ.૨૩
વસ્તુ રૂપ મહિમા કૃપા થકી,	ધર્મ અનેક પ્રકાર;
અલ્યંતર આરાધતા,	મુક્તિ પદ દાતા.૨૪
ધર્મ ભવાંતરને વિષે,	આલે જીવની સાથ;
રક્ષિત થઈ ગતિ ઉંચમાં,	સ્થાપે ઝાલી હાથ.૨૫
અલ્યુદય સર્વ પ્રકારનો,	મન વાંછિત દાતા;
આનંદ કંદ આ જગતમાં,	ધરમ એક આધાર.૨૬
યુગ્ય ધર્મ પસાયથી,	મળ્યો મનુષ્યા દેહ;
કેર નિશ્ચય નિજ રૂપનો,	ધરી ધર્મસું નેહ.૨૭

૧૧ અગિયારમી લોક સ્વરૂપ ભાવના.

રાનીની દષ્ટી થકી, જડ ચૈતન્ય દેખાય;
 તે તે લોકાકાસ છે, બાકી અલોક સદાય. ૧
 ત્રણ ભુવન તે લોકમાં, તાડ વૃક્ષ આકાર;
 પહોળો મધ્ય અંતમાં, લાહો અધિક વિસ્તાર. ૨
 નીચે નર્કાદિક છે, મધ્યે મૃત્યુ લોક;
 અંત સ્વર્ગ શોભે સદા, એ રચના ત્રિલોક. ૩
 સદા સાસ્વતો લોક છે, આદિ અંત રહીત;
 કરતાની કૃતિ ગણે, હોય મતિ વિપરીત, ૪
 કચ્છપ શેષની શ્રેણી, માને કોઈ આધાર;
 અધર લોક આકાશમાં, નહિ આધાર લગાર. ૫
 સ્વયં સિદ્ધ અનાદિ છે, અવિનાશી આ લોક;
 કરતા હરતા કે નથી, ભર્યો જીવાદિક થોક. ૬
 સહુ પ્રાણી ત્રિલોકમાં, જન્મે મરે સદાય;
 કર્મ પ્રમાણે ભોગવે, સુખ દુઃખ આયુષ્ય કાય. ૭
 જીવાદિક બટ દ્રવ્યની, રચના તે ત્રિલોક;
 જીવે સ્વ સ્વભાવથી, જીવે જીવે થોક. ૮

તેમાં આ નિજ આતમા, જીવ દ્રવ્ય છે એક;
 મોહથી મુંઝાણો થકો, પામ્યો ન છેડો છેક. ૯
 લોક સ્વરૂપ વિચારીને, પામી આતમ રૂપ;
 યુગ્ય સ્વરૂપ રમણુ થતાં, અવિચળ સુખ અનુપ. ૧૦

૧૨ બારમી ગોધી દુર્લભ ભાવના.

(જેમાં નીગોહથી નીકળી ઉત્તરોત્તર સમ્યક્
 દર્શનની પ્રાપ્તિ પર્યંત ધર્મ પામવાની દુર્લભતા
 અતાવે છે.)

નર્ક અને નીગોહમાં,	વસ્યો કાળ અનંત;
સ્થાવરમાં પણ આવિયો,	થતાં ઉદય અત્યંત. ૧
અનંત ઉદયથી નિકળ્યો,	મળી તહાં ત્રસ કાય;
દુર્લભ પાંચે દ્રિયપણું;	સાથ નિરોગી કાય. ૨
મનુષ્ય ભવ મુશકેલીએ,	પામ્યો પુન્યે કોય;
દેશ કૂળ અનુકૂળતા,	દુર્લભ દુર્લભ ભોય;
પાંચે ઈંદ્રિય પુરી નહિ,	અપુર્ણ આયુષ્ય કર્મ;
કે આવર્ણુ અજ્ઞાનનું,	દુર્લભ પામવો ધર્મ.

कटि पुन्य प्रतापथी,	मज्यां अनुकुण जोड;
विषय वासना वाधतां,	हुर्दल धर्म स्नेह. ५
तत्त्व निर्णय हुर्दल अती,	सरे न ये विणु अर्थ;
सम्यग् मारग होडीलो,	पामे डोडक समर्थ. ६
कही मडा पुन्य प्रलावथी,	मज्या सर्व सल्लेग;
प्रमाद वश थछ परवर्यो,	डाम अर्थ प्रयोग. ७
सम्यक् रत्नत्रय मार्गथी,	पडे मिथ्यात्व प्रसंग;
हुर्दलल हिलमां स्थापवो,	धरम साथ सुरंग. ८
ओधि रत्न पाम्या पत्री,	जोयुं लव दधि मांय;
मणवुं मुश्केल थछ पडे,	शोध्युं मणे न ज्यांय. ९
सर्वे द्रव्य समुड ते,	मेणववानु सडेल;
ओधी रत्न संसारमां,	सांपडवुं मुश्केल. १०
सम्यक् ज्ञान दर्शन अने,	आरीत्र ये त्री रत्न;
ओधी रत्नत्रय मेणवी,	सायववुं करी यत्न. ११
वास्तविक विचारतां,	स्वाधिन मणे सडेल;
वस्तु पराधीन पामवी,	ये तो मडा मुश्केल. १२
आत्म स्वभाव त्री रत्न छे,	छे निजनांज सदाय;
आवरणो आडां कुर्भनां,	आंतिमय देणाय. १३

ઐ આવરણો તોડવા, આદરીએ ઉપાય;
 બોધી સ્વરૂપ નિજ આતમા, સુરલલપણે જણાય. ૧૪
 ઉત્તરોત્તર પર્યાય સહુ, બોધી રત્ન પર્યંત;
 મહા મહેનતે મેળવી, કરો સાચવવા યત્ન. ૧૫
 બોધી નિજ સ્વભાવ છે, છે નિશ્ચય નિજ પાસ;
 અમાદથી પ્રાપ્તિ નથી, શુદ્ધ ભાવે ભવ નાશ. ૧૬

ઉપસંહાર.

અનુપ્રેક્ષા દ્વાદશ ભલી, અંતર આરોપાય;
 રંગ રંગે રંગ લાગતાં, જીવન મુક્ત જણાય. ૧

છપય.

ભાવો ભાવના બાર, નિરંતર રહી નિજ ધ્યાને;
 ક્રોધ રાગ ને ક્રેષ, જાય અંતર અજાને;
 થાયે જ્ઞાન પ્રકાશ, સ્વ પર દ્રવ્ય જણાએ;
 બિર ઉપજે વૈરાગ્ય, કર્મની નિર્જરા થાએ.
 ઉલ્કૃષ્ટા વૈરાગ્યથી, ધ્યાની ધ્યાન સ્થિર થાય છે;
 સ્વ સ્વરૂપ રમણુ થકી, અંતે મોક્ષ જનાય છે. ૨

દોહરો.

સર્વ સુત્રનો સાર આ, આત્મજ્ઞાનનું મૂળ; આ
 યુષ્પચંદ આરાધવા, આ અવસર અનુકૂળ. ૩૦

ઉપર લખી બાર લાવના મોક્ષ રૂપી મહેલની
 મેડી ઉપર ચડવાને સોપાન એટલે પુંગથીઆં રૂપ છે, તે
 અને સીડી ઉપર ચઢતાં લથડી ન જવાય માટે
 દોરીનો આધાર જોઈએ, તેમ નીચે લખી મૈત્રી
 આદિક ચાર લાવના અવલંબન દોરી રૂપ છે. તે
 મૈત્રી, પ્રમોદ, કાંચુક્ય ને, માધ્યસ્થ એ ચાર;
 ભાવો લાવના ભાવથી, ભવ ભવને હરનાર. ૩૦

મૈત્રી ભાવના.

પુક્ષ્મ બાહર જીવને, ત્રસ સ્થાવર જાટકાય;
 પરમ મિત્ર ગણી સરવનો, ધરુ ઉદય સદાય.
 ધરુ પરસ્પર જીવમાં, વધો સદા સમભાવ;
 જીવો સુખમાં હંચ તજી, થાય ન કર્મ જમાવ. ૩૦

પ્રભોદ ભાવના.

રિક્તિ, સિક્તિ ચારિત્રમાં,	ચઢતા દેખી કોય;	
મહા ભાગ્ય ગણી માનથી,	મુજ મન મુદીત હોય.	૧
ક્યાણુ દુઃખી દેખી થવું,	સુખી દેખી રળીયાત;	
પ્રભોદ પર ઉલ્કૃષ્ટમાં,	નિજ ઉદ્યની વાત.	૨

કાકૃણ્ય ભાવના.

રોગ, શોભ, ભર્ષ, હીનતા,	દુઃખે પીડાતાં જેહ;	
હિપજો ભુદ્ધિ એહવી,	કરૂં સાદ્ય ધરી સ્નેહ.	૧
જૂખ, વૃષા, વધ, બંધને,	સહે શીત ને તાપ;	
સકે મળજો એ જીવનાં,	મટાડવા સંતાપ.	૨
નિર્દય નરના હાયથી,	મરતાં જીવ જણાય;	
મન, વચ, કાયા, વીતથી,	આપું યોગ્ય સહાય.	૩
માનવ સૌ મૈત્રિપણે,	ધરો પરસ્પર પ્રેમ;	
સખળ અખળની સહાયમાં,	રહો રાખીને રહેમ.	
વાપરવા વીત ન હોય તો,	કરૂણા આણી ઉર;	
મન વચ કાયા થકી,	કરવી સાદ્ય જરૂર.	

માધ્યસ્થ ભાવના.

શંગ દ્રેષ રહીત જે,	વિચરે છે વિતરાગ;	
એમ ઉદાસીનતા થવી,	નથી આજ એ લાગ.	૧
તો યજ્ઞ ભાવના ભાવતાં,	તુટે કર્મ જમાવ;	
કોઈક ભવે માધ્યસ્થ થઈ,	મળે મોક્ષનો લાવ.	૨
સાત વ્યસનને સેવતા,	કષાય સાથે ચાર;	
ઉપેક્ષા કરી તેહની,	ઉદાસીનતા ધાર.	૩
ધર્મ વિમુખ નાસ્તિક કહો,	કૃર નીચ ચાંડાલ;	
કર્મે પ્રેર્ષા પાપમાં,	દયાજનક એ બાળ.	૪

સ્વ સ્વરૂપ નિશ્ચય થવા,	તજવા વિષય વિકાર;	
રાગ દ્રેષાદી જીતવા,	ભાવું ભાવના ચાર.	૧
સીડી મોક્ષ દુવારની,	કહી ભાવના બાર;	
અવલંબન દોરી થશે,	ભાવ ભાવના ચાર.	૨
અતિ રહસ્ય એમાં રહ્યું;	સર્વ સુવ્રતો સાર;	
યુષ્પચંદ વિચારતાં,	પામે ભવનો ધાર.	૩

સોળ ભાવનાઓથી વૈરાગ્ય ઉપજ્યા પછી અઠાર
 ચાપસ્થાન તથા આઠ કર્મથી મુક્ત થવાને માટે
 એવીસ જન સ્તુતિ રૂપ ભાવના પચીસી કહે છે.

આદિ પ્રભુ સુષ્ટિ અરજ આ;	આપો અંતર જ્ઞાન;
તંબુ હિંસા હું ભવની;	ગણીને નિજ સમાજ.
અજિત જિન જલ્યા તમે;	અષ્ટ કર્મનાં ધૂંદ;
મુજથી એક મુકાવળે;	મૃપાવાદનો કુંદ.
સંભવનાથ સહાયથી;	સેધું ન અદત દાન;
એહ પ્રતિજ્ઞા પાળના;	સહાય કરો ભગવાન.
અલિનંદન વંદન કરી;	માગું મુજથી એમ;
અપ્રહાયર્ય અનાદિનું;	તજવા રાખું નેમ.
સુમતિનાથ સુમતિ દિયો;	તંબુ પરિચહ પ્રેમ;
યુદ્ધગણ રથનાં પારકી;	હરખ શોક ધરું કેમ.
ચક્ષુ પ્રભુ પ્રભાવથી;	કરી કોધને હર;
દુઃખાવંત રહું અંતથી;	તબય દોષ જરૂર.
સુપાર્શ્વ સ્વામી પસાયથી;	મરહું માન અમીર;
અનંત કાળથી અહંપદે;	લોગવું ભવ જ'જર.

अंश प्रभु चित्त आहतां,	छुटे माया अण;
अपंच अथा परदे यतां,	असरे मंगण भाण. ८
भुविधि स्वामी सेवतां,	चित्त धरी सतोष;
बोम लातसा हय करं,	ने छे मोटा होष. ९
शितण अत सहाय करे,	अेवुं हुं समभाव;
राज देवने सेसवा,	ठनी न श्रवे हाव. १०
अंशनाथ आशय आपनी,	टाणो आत्म कलेश;
अभ्यापान पक्षु आनधी,	तणवशो लव वेश. ११
वासुपुत्र्य द्विदे वसो,	येशुन्य पाय तलय;
पर परिवाह ने रछ अरछ,	माया मोसो व्यय. १२
विमणनाथ विनति करी,	भाशुं विनय सहीत;
भिर्या दर्शन शक्य जछ,	मासुं शुद्ध समकीत. १३
अनंत अनंत प्रभावधी,	आपो अवियण वास;
अष्ट कर्म अरी आंकणा,	रछे न तेनो वास. १४
अंभं धुरंधर ध्यानधी,	आशा राशुं अेक;
आनावरणी कर्मनो,	छुटे थारो छेक. १५

શાંતી શાતા આપવા, છે જગના આધાર;
 દર્શનાવરણી કર્મથી, કરને સુજ ઉદ્ધાર. ૧૬

કુંથુનાથ કૃપા કરી, આપો માગું આજ;
 વેદની કર્મ નીવારને, પામું સાતા સાજ. ૧૭

અરજ કરે અરનાથજી, કરો કૃપા કરણીજ;
 મોહ પાસના બંધથી, છોડો દીન દયાજ. ૧૮

અલિ લુલુદ મયા કરો, જન્મ મરણ દુઃખ જાય;
 આયુષ્ય કર્મને ટાળવા, માગું આપ સહાય. ૧૯

મુનિ સુવત સુવૃત દઈ, કાપો નામ નિશાન;
 જોત્ર કર્મ તો કાપશે, નેમિનાથ લગવાન. ૨૦

અંતરાય અલગ થતાં, ક્ષવે સઘળા દાવ;
 નેમ પ્રલુલુ આપશે, ત્રી રત્ન શુભ લાવ. ૨૧

પાર્શ્વ પ્રલુ પ્રભાવથી, પ્રગટે પુન્ય પ્રતાપ;
 શ્રેય ક્ષેપ દૂરે થતાં, મટે સર્વ સંતાપ. ૨૨

ક્રીવર્ધમાન વૃદ્ધિ કરો, સર્વ સ્થાન સમભાવ;
 આપ તંબુ ઉપદેશમાં, એ તરવાનું નાવ. ૨૩

ભાવે ભાવના ભાવતાં, નિર્ગમે કર્મ જરૂર;
 આતમ શક્તિ ઉદ્યતતાં, નથી મોક્ષ કંઈ દર. ૨૪
 યુષ્પચંદ જન જાપથી, તજીએ પાપ અહાર;
 અષ્ટ કર્મ અરી ભય થકી, મૂંઝવે નીરધાર ૨૫

અહાર પાપસ્થાન અને અષ્ટ કર્મ નિવાર-
 ણાર્થે ચોવીસ જન સ્તુતિ રૂપ ભાવના ભાવ્યા પછી
 ધ્યાન તરફ લક્ષ દોરવે છે.

સંક્ષિપ્ત ધ્યાન સ્વરૂપ.

અનાદિ અનંત સંસાર છે, આ સંસાર સ્વરૂપ;
 દુરલભ તેમાં પામવો, મનુષ્ય જનમ મળી રૂપ.
 કાગ તાક કુંજ ન્યાયથી, મળ્યો જોગ આવાર;
 નિશ્ચય કર નિજ રૂપનો, મેલી મોહુ લગાર.
 મનુષ્ય જન્મ સાથે કથના, કર પુરૂષારથ ચાર;
 ધર્મ અર્થ ને કામ છે, ચોથો મોક્ષ વિચાર.
 મધ્ય એને અધમ ગણી, લેવો ધર્મ આધાર;
 પરમ પુરૂષારથ આદરો, જે છે મોક્ષ વિચાર.

ધ્યાનની પ્રાપ્તિ કેવા પુરુષોને થાય તે કહે છે.

મનુષ્ય સર્વે ધીર વીર જે,
કરમ કોષને કાપવા,
સમ્યક્ દર્શન જ્ઞાનને,
ઠાણુ મોક્ષ મળવા તણું,
સમ્યક્ દર્શન આદિ છે,
તેમાં જ્ઞાન ગમિત છે,
જન્મ જરા નીવારવા,
તરવા ભવસાગર તણું,
ધ્યાને સમ્યક્ જ્ઞાન છે,
કર્મ વિનસતાં મોક્ષ છે,
દુઃખા મુર્છા પ્રમાદ તજ,
રાગ દેવ તણ મોહને,
સોગ વિલાસ દુઃખા તણ,
વિરકત થઈ સંસારથી,
ધ્યાન વર્ણુન વિસ્તાર છે,
માત્ર પ્રમાણે આમ છે,

લેલી ભવ જંજળી;
લે છે સંયમ ભાર. ૫
વળી સમ્યક્ ચારીત્ર;
સેવે ચાક્રજે ચિત્ત. ૬
સાધન મોક્ષ સહાય,
સંયમથી સ્થિર થાય. ૭
પી સુધારસ જ્ઞાન;
છે અવલંબન ધ્યાન. ૮
જ્ઞાને કર્મ વિનાશ;
રાખ ધ્યાનની પ્રયાસ. ૯
રાખી ચિત્ત સ્વશાન્ત;
ધરે ધ્યાન એકાંત. ૧૦
તણ દેહ અનુરાગ;
ધરે ધ્યાન મહા ભાગ. ૧૧
સંશયે ને ધાર;
ધ્યાન ત્રણ પ્રકાર. ૧૨

શુભ યોગ તે પુણ્ય છે,	અશુભ યોગ તે પાપ;
શુદ્ધ ઉપયોગ ત્રીજો દહ્યો,	મોક્ષ હેતુ એ જાપ. ૧૩
શુભ ધ્યાનથી પુણ્ય ને,	અશુભ ધ્યાનથી પાપ;
મટે બંધ શુદ્ધ ધ્યાનથી,	મળે મોક્ષની છાપ. ૧૪
આર્ત રૂદ્રનો અંત કરી,	ધર જીવ ધરમ ધ્યાન;
શુકલ ધ્યાન સાથે મળે,	કેવળ દરશન જ્ઞાન. ૧૫
આરત રૂદ્ર એ ધ્યાનથી,	અધોગતિમાં વાસ;
આખર અવસર આતમા,	શુભ ધ્યાને સુખ વાસ. ૧૬

છપમ છંદ.

મૂઠ્ઠથપણામાં ધ્યાન,	પરિબ્રહ્માં પલટાએ,
અન્ય મતિનું ધ્યાન,	કુનય થકી હણાએ,
દ્રવ્ય લીંગીનું ધ્યાન,	રહે અંતરથી ન્યાઈ,
ભાવ શુદ્ધ સુનીરાય,	ધરે ધ્યાન તે પ્યાઈ,
ચતુરત્રય સુકત જે આતમા,	સ્વ સ્વરૂપને ધ્યાય છે,
કેમથી કર્મ કાપી બધાં,	અંતે મોક્ષમાં જાય છે. ૧૭

સમ્યક્ દર્શન, સમ્યક્ જ્ઞાન અને સમ્યક્ ચારીત્ર એ ત્રી રત્ન પ્રાપ્ત થયા અગાઉ ધ્યાનનો અભાવ છે

માટે ત્રી રત્નનું સંક્ષેપ સ્વરૂપ કહે છે, તેમાં પ્રથમ
સમ્યક્ દર્શન કહે છે. તત્ત્વની રૂચી થતી તે સમ્યક્
દર્શન છે; માટે પ્રથમ નવ તત્ત્વ કહે છે.

છપ્પ ઇંદ.

નવ તત્ત્વ પરતીત, રૂચી થઈ કે કહો સરધા,
સમ્યક્ દર્શન રત્ન, પામવા લલિતે સ્પરધા,
જાણ્યા યથારથ તત્ત્વ, સમ્યક્ જ્ઞાન એ ખીનું,
વિરક્તા પાપથી થાય, સમ્યક્ ચારીત્ર તે ત્રીભુ;
ત્રી રત્ન એવે નામથી, શ્રણે સાચ ગણાય છે,
વર્ણન દરેકનું જુગલું, કરતાં અંધ ભરાય છે.

ત્રી રત્ન સ્વરૂપ.

સમ્યક્ દર્શન. (નવ તત્ત્વ વિચાર.)

નવ તત્ત્વ અભ્યાસથી થાય વિશ્વનું જ્ઞાન;
હૃદય જ્ઞેય ઉપાદેય અનુસરે, એજ ખરો વિક્ષાન.

જીવ અજીવ પુન્ય પાપને, આશ્રવ સંવર સેવ્ય;
 નિર્જરા બંધ મોક્ષ તે, તત્ત્વ પદારથ જ્ઞેય.
 રચના વ્યાપીત વિશ્વની, નવ તત્ત્વમાં ગાય;
 અંટ દ્રવ્ય વિચારે બંધથી, વળી પંચાસ્તિ કાય.
 જીવ અજીવ જે જ્ઞેયવા, ચૈતન્ય જડ જુદાય;
 ભક્તે નિરખીરની પરે, સંખી રહ્યા સદાય.
 પુન્ય સંવરને નિર્જરા, મોક્ષ સહીત જે ચાર;
 અનુક્રમે એ આદરી, પામો ભવનો પાર.
 આગારી પુન્ય આદરે, એ તો નય ઉપવહાર;
 નિશ્ચય તજવા જોગજો, અણુગારી આચાર.
 યાપ આશ્રવ ને બંધ તે, ત્રણે તજવા જોગ;
 તેહ તજ્યાં વિણ નહિ કદી, મોક્ષ તણે સંજોગ.

જીવ તત્ત્વ.

ચૈતન્ય લક્ષણ જીવનું, સુખ દુઃખ વેદનહાર;
 સહ ઉપયોગી છે સદા, અસંખ્ય પ્રદેશી ધાર.
 હૃતો જીવતો આજ છે, જીવશે હૃતુ સદૈવ;
 ત્રણે કાળમાં જીવતો, કહેવાયો તે જીવ.

ત્રીલોકમાં તલ સમે, વગ નહિ જીવ વિનાય; ૩
 ઠાંસો ઠાંસ ભયા પડયા, ત્રસ સ્થાવર ણ કાય. ૩
 ચેતન્ય લક્ષણથી લડો, એક પ્રકારે જીવ; ૪
 એ પ્રકાર પણ આમ છે, સંસારી ને શીવ. ૪
 કર્મ રહીત થઈ સિદ્ધ થયા, કરમે આઠ્યા જીવ; ૫
 સંસારી જનમે મરે, અજર અમર તે શીવ. ૫
 સંસારી ગતિ ચારમાં, કરે અનંતી વાર; ૬
 મનુષ્ય તિર્યચ નારકી, કરમે દેવ દુવાર. ૬
 ત્રસ સ્થાવરપણા થકી, પણ જે લેહ જણાય; ૭
 વિવિધ લેહ વિસ્તાર છે, મુખ્ય ચૌદ ગણાય. ૭
 પાંચમે ત્રેફળ પણ કહ્યા, લેહ સુત્ર અનુસાર; ૮
 ત્રવ વરણન વાંચી જુઓ, જ્યાં છે ખડું વિસ્તાર. ૮

અજીવ ત્રવ (ખટ દ્રવ્ય; પંચાદિતકાય.)

જીવ પુણ્યને ધર્મ છે, અધર્મ આકાશ કાળ; ૧
 ખટ દ્રવ્યમાંથી એકલો, જીવ ચેતન્ય નિહાળ. ૧
 માકી પાંચ ચેતન્ય વિના, અજીવ દ્રવ્ય કહેવાય. ૨
 પુણ્ય એકલો રૂપી છે, માકી અરૂપી સહાય. ૨

પ્રદેશાત્મીક પાંચ છે,
 અનેક પ્રદેશથી બને,
 કાળજ એક પ્રદેશી છે,
 બટ દ્રવ્ય નિજ નિજરૂપથી,
 પુદ્ગલના જે લેદ છે,
 સ્પર્શ વર્ણુ રસ ગુણુ છે,
 સ્કંધ દેશ પ્રદેશ અને,
 લેદ પુદ્ગલના જાણવા,
 ધર્મ અધર્મ આકાશ એ,
 અમુર્તિક અક્રિય અને,
 ગતિમાં સહાર્થ સર્વદા,
 ધર્મ દ્રવ્ય એ જાણીએ,
 સ્થિતિ સહકારી સદા,
 વ્યાપી લોકાકાશમાં,
 ધર્મ પ્રેરણા નવી કરે,
 પ્રવૃત્તી કરતા પ્રાણીને,
 અધર્મ દ્રવ્ય પ્રેરક નથી,
 ઇયાએ પંથી રહી,

કાલ દ્રવ્ય વીનાય,
 પંચ કાય કહેવાય,
 તેથી ન કાય ગણાય;
 ન્યારાં ન્યારાં સદાય,
 અણુ અને વર્ણી સ્કંધ,
 છે રૂપી છે ગંધ,
 પરમાણુ એ ચાર,
 સંબંધને અનુસાર,
 લિપ્ત લિપ્ત અક્રેક,
 ત્રણુ સ્થિર છે છેક,
 વ્યાપક લોકાકાશ,
 જગ ઉપકારી જાસ,
 અધર્મ દ્રવ્ય છે એક,
 થાય સહાર્થ તેહુ,
 જીવ પુદ્ગલને લેશ,
 જળ મચ્છ જેમ ઉદ્દેશ,
 સ્થિતિ કરાવા કાંઈ,
 યામે સમતા સાજ.

આકાશ અન્ય પાંચને, આપે છે અવકાશ; ૧
 સર્વ સ્વાપિ સ્વ આશ્રયી, લોક અલોકાકાશ. ૧
 એક કાળ બે લેદથી, નિશ્ચય ને વ્યવહાર; ૧૩
 લોકાકાશ પ્રદેશમાં, સ્થિત નિશ્ચય કાળ. ૧૩
 ભેતીથી આદિ દેવતા, ગમનાદિ અનુમાર; ૧૪
 સમયાદી બે લેદ છે, તેજ કાળ વ્યવહાર. ૧૪
 સર્વ પદારથ વિશ્વના, નવા પુનાતન થાય; ૧૫
 અભિભુમન સહુ દ્રવ્યનું, વર્તન કાળ સદાય ૧૫
 કાળ વર્તનાથાજ સહુ, પલટે રૂપ પદાર્થ; ૧૬
 સમય સમય સ્થિતિ રૂરે, અચળ નિયમ યથાર્થ. ૧૬
 વર્તમાન ભણે ભૂતમાં, સવિખ્ય તેને ઠાર; ૧૭
 ક્રોધ અવસ્થા પાલટે, અચળ નિયમ અનુમાર. ૧૭
 સ્વ પુણ્યલનું રૂપ તે, પલટયું રહે સદાય; ૧૮
 તે કાલણ તે બેચને, દહા વ્યંજન પર્યાય. ૧૮
 બાકી દ્રવ્યો ચાર તે, નિજ રૂપેજ સદાય; ૧૯
 દાની વૃદ્ધિ ન તેહને, તેથી અર્થ પર્યાય. ૧૯
 અર્મ અધર્મ બે દ્રવ્યને, અસંખ્યાતા પ્રદેશ; ૨૦
 કાળ પ્રદેશ અણ માત્ર છે, નશ અનંત વિશેષ. ૨૦

સુગલઃ એક પ્રદેશથી, સંખ્યાત અસંખ્યાતઃ
અનંત પ્રદેશી પણ કહ્યો, જુજવા સ્કંધની જાત. ૨૧.

પુણ્ય તત્ત્વ.

અનપાણી આદિ નવ વિધે, વિવિધ પુણ્ય બંધાયઃ
સાતા વેદનીય આદિથી, કૃણ સુખ રૂપ પમાય. ૧
એતાલીસ પ્રકાર છે, સાતા આદિ જેહઃ
નવતત્ત્વ આદિ અંથથી, સમબંધે સહુ તેહ. ૨
શુભ આશ્રવ શુભ પુણ્ય છે, શુભ સંચય કરનારઃ
શુભ આશ્રવ સંચય થતાં, સુકિત કૃણ દાતાર. ૩

પાપ તત્ત્વ.

પાપ સ્થાન અઠારથી, બાંધે છે, જીવ પાપ
ખ્યાસી પ્રકારે લોગવે, નર્ક તિર્યંચ ગતિ છાય. ૧
જ્ઞાનાવરણીય આદિથી, સંસ્થાન પર્યંતઃ
વિસ્તાર બહુ નવતત્ત્વમાં, વાંચો રાખી ખંત. ૨

અશુભ આશ્રવ તે પાપ છે, કર્મ બંધ કરનાર;
 અશુભ તેજ શુભ આદરે, શુભ ગતિ દેવા દાતાર.

આશ્રવ સંવર, નિર્જરા તત્ત્વ.

આશ્રવ સંવર, નિર્જરા, પાર-ભાવના માંય;
 છે વર્ણને વિસ્તારથી, વાંચી વિચારે ત્યાંય.

બંધ તત્ત્વ.

મિથ્યાત્વ જોગ અવિરતી, કષાય ચાર પ્રમાદ;
 કર્મ બંધનાં હેતુઓ, તજવા રાખી યાદ.

છપય છંદ.

બંધન્ય મધ્ય ઉત્કૃષ્ટ, સ્થિતિ વધતી કે ઘટતી,
 લોગવે કર્મ ત્રીકાળ, સ્થિતિ બંધ એ પદ્ધતિ.
 કર્મ દ્રુણ ઉદય થાય, અનુભાગ બંધ બંધો;
 હવે કર્મ વ્યાખ્યાય, પ્રદેશજ બંધ પ્રમાણો.
 નીર ખીર તેલ તેલ સમ, પ્રદેશ જીવને કર્મના;
 રહે મળી એક રૂપ થઈ, જે છે બુજવાં ધર્મના.

શ્રી મોક્ષ સ્વરૂપ.

સંબંધ નહિ જ્યાં સર્વથા,	કર્મ કાર્ય લવલેશ;	
પ્રતિપક્ષી સંસારને,	અવિચળ મોક્ષ પ્રદેશ.	૧
દર્શન વિર્યાદિ ગુણનિધી,	ગ્રીહાનંદ અરૂપ;	
અત્યંત અવસ્થા એહ છે,	સાક્ષાત શિવ રૂપ.	૨
અનોપમ અવિનાશી સદા,	જ્યાં સ્વભાવિક મુખ;	
ઈન્દ્રિય વિષય વર્જિત છે,	નહિ તૃપા નહિ ભૂખ.	૩
નિર્મળ શાંત કૃતાર્થતા,	સમ્યક્ જ્ઞાન સ્વરૂપ;	
અરૂપી અવિનાશી સદા;	સુધા સિદ્ધ સ્વરૂપ.	૪

ઉપસંહાર.

બીજક આ નવ તરવનાં,	કહ્યાં વગર વિસ્તાર;	
સમ્યક્ દર્શન જ્ઞાનના,	સંબોધન હીતકાર.	૧

છપય છંદ.

તરવ વરણન વિસ્તાર, અન્ય ગ્રંથોમાં જડશે;
મળતાં સમ્યક્ જ્ઞાન, મિથ્યાત્વ મૂળથી ટળશે;

હેય જ્ઞેય ઉપાદેય, જાણી સંયમ ચિત્ત ગ્રહણે,
 થતાં ત્યાગ વૈરાગ્ય, રત્ન ત્રીણું સાંપડશે;
 સમ્યક્ દર્શન જ્ઞાન સહ, ચારીત્ર જે ચોકણું પળે,
 શુદ્ધ યોગ શુદ્ધ ધ્યાનથી, મોક્ષ મંદીરમાં જઈ મળે.

સમ્યક્ દર્શનનું મહાત્મ્ય.

દ્રવ્ય તરત પદાર્થને, વળી પંચાસ્તિ કાય;
 અતિત થઈ જે પુરૂષને, મોક્ષ નજીક કહેવાય.
 દ્રવ્ય પદાર્થ કાયની, સરથા રૂચી પ્રતીત;
 સમ્યક્ દર્શન જોજ છે, ધારે ચિત્ત ખચીત.
 સમ્યક્ દર્શન રત્ન તે, આભુષણ અનુપ;
 માર્ગ સુચવે મોક્ષનો, શોધન આત્મ સ્વરૂપ. ૩

કવિત-મનહર.

સમ્યક્ દર્શન સદા, જ્ઞાન ચારીત્રનું ણીજ;
 અથવા કારણ લહો, યમને પ્રશમનું.

૧ મહાવૃતાદિ, ૨ વિશુદ્ધ ભાવ,

આશ્રય તપ સ્વાધ્યાય, શમ દમ ગોધ વૃત્ત;
 સદ્ગુણ કર્યાનું કામ, સમ્યક્ દર્શનનું.
 તોય એ સર્વ તોય, એકલું એ ઉપયોગી;
 એ વિના મિથ્યાત્વ કષ્ટ, લોગવે અજ્ઞાનનું.
 સમ્યક્ દર્શન સાથે, શ્રેઠાં ચારિત્રાદિ હોય;
 તોય જ્ઞાન આપે અતી, જોવધ સમાનનું. ૪

દોહરા.

મોક્ષ માર્ગનું મુખ્ય તો, સમ્યક્ દર્શન અંગ;
 મહા લાગ્ય તે માનવી, રાષ્ટ્રો તત્ત્વ પ્રસંગ. ૫
 અતીચાર વીણુ નિર્ગળું, સમ્યક્ દર્શન હોય;
 યુગ્યાત્મા મહા લાગ્ય એ, મોક્ષ સીડીએ સ્હોય. ૬

કવિત-મનાહર.

અમૃત કહો કે કહો, અતુલ્ય મુખ નિધાન,
 સમસ્ત કલ્યાણ ધીજ, લવાર્ણુવ નાવ છે.

યાચ રૂપી વૃક્ષને તો, કાચવાનો કુહાડો છે,
 યવિત્ર તીરથ માંહી, પ્રધાન પ્રભાવ છે,
 મિથ્યાત્વ રૂપી શત્રુને, જીતનાર શુભટ છે,
 શરણાગતની સાર, દેવાનો સ્વભાવ છે,
 માટે લઘ્ય શોધો સાદ્ય, સમ્યક્ દર્શન તણી,
 અનુબ્ય જનમ માંહી, દેવાનો જે લાવ છે. ૭

દોહરો.

સમ્યક્ દર્શન સમજવા, થયો ચિત્ત વિચાર;
 યુગ્પચંદ આધાર આ, જ્ઞાનાર્ણવ અનુસાર. ૮

સમ્યક્ જ્ઞાન વર્ણન.

સ્થિતિ લોકલોકની, જાણે સિદ્ધ સમાન;
 સર્વજ છે આ આતમા, નિશ્ચય નયથી જાણુ.
 કુર્મ પ્રતિબંધથી થયા, લેક અનુક્રમ વાર;
 સતિ શ્રુત અવધિ અને, મનઃ પર્યંવ એ ચાર. ૨
 કેવળ જ્ઞાન એ પાંચમું, જે છે નિરાવર્ણુ;
 મહા યોગિ એ મેળવે, રાખી આતમ શર્ણુ.

કવિત-મનહર.

અનંતાનંત પ્રદેશી, આકાશ દ્રવ્યની માંહે;
 અસંખ્યાત પરદેશીને, લોકાકાશ કહ્યો છે.
 તે માંહે જીવં પુદ્ગલ, ધર્માધર્મ અને કાલ;
 એ અનંત દ્રવ્યે ભર્યો, ત્રણે કાળ રહ્યો છે.
 ત્રીકાળ અનંતાનંત, લિપ્ત લિપ્ત પર્યાય તે;
 સર્વ એકી સમયમાં, બાણપણે લલ્યો છે.
 એવો પુર્ણ જ્ઞાનવાન, સ્વભાવિક આત્મા નિશ્ચયે;
 તોય લેક ભાવ નિજ, કર્મ થકી ગ્રણો છે. ૪

દોહરો.

ઉત્પાદ વ્યય ધૃત ભાવ મય, જગના જેહ પદાર્થ;
 સાસે એક સમયે સહુ, એ છે જ્ઞાન યથાર્થ. ૫

ચારીત્ર.

શ્રાવકનો આણુવૃતાદિ આગાર ધર્મ અને સાધુનો
 સહાવૃતાદિ અણુગાર ધર્મ છે પણ તે બંનેનો સમા-

पशु चारीत्रमां यतो ढोवाथी जने धर्मनु चारीत्र
आथे वरुन करवाभां आवे छे.

सम्यक् चारीत्र प्रभावथी, चित्त वरते सम भाव;
शीर वीर ने स्थिर थछ, लडे ज्ञाननेो दाव, ४
सर्व पापथी सर्वथा, निवृत्तिनु स्थान; २
शुवन जोगीश्वर ताणुं, विशुद्धि निधान. २

सामायिक आदि लछ, यथाभ्यात पर्यंत; २
चारीत्र पंच विधिये कहां, धारो राणी अंत. ३
आंच महावृत्त समिति, श्री शुभती लछ साथ; ३
चारीत्र तेर प्रकारथी, वरुंव्यां श्री जगनाथ.

सव भ्रमणु लयलीतने, तरवानो आधार; ४
वीर प्रलुण्ण्ये वरुंव्यां, चारीत्र तेर प्रकार. ४
डिंसा, असत्य, अदंत ने, मैथुन परीअड त्याग; ४
ये महावृत्त अणुगारनां, पाणे मुनि महाभाग्य. ४
महावृत्त लार वडेवो कडीन, सुरवीरनु काम; ४
आवक अणुवृत्त आदरे, जे पडोच्ये नहि डाम. ४

બાર વૃત આપય દોહરા.

ત્રસ સ્થાવર સહુ જીવની,	મનમાં મેર સદૈવ;	
સ્થાવર વરજી શ્રાવકો,	હજો ન જાણી જીવ.	૧
કન્યા ગો ભૂમિ સાખ કે,	જમા લેણુ ને દેણુ;	
વૃત ખીજે શ્રાવક કડી,	વદે ન જુહું વેણુ.	૨
ખાતર વાટ પાડે નહિ,	જડયો જણાવે માલ;	
વરતન વૃત ત્રીજા તણું,	તજે તસ્કરી ખ્યાલ.	૩
સંતોષ સ્વદારા લણી,	અવર લગની માય;	
ચોથું વૃત શુદ્ધ શ્રાવકો,	પાળે અખંડીત કાય.	૪
ધન ધાન્ય ગૃહ ઢોરને,	કરે પરિચક્ર માન;	
વૃત પાંચમે શ્રાવકો,	રોધે ઇચ્છા જાણુ.	૫
અઘો ઉર્ધ્ધ ત્રિજી દિશા,	કર્ચું માન આ કાય;	
વૃત છઠે શ્રાવક નહિ,	લોપે સહુ ઇચ્છાય.	૬
ઉપલોગ પરિલોગનું,	કરે દિન પ્રતિ માન;	
સાતમા વૃતથી પંદરે,	તજાય કરમાદાન.	૭
અપદ્યાય પ્રમાદને,	હિંસક શસ્ત્રનો સાજ;	
આઠમે ઉપદેશે નહિ,	કર્મ બંધનાં કાજ.	૮

१० तार सुरत के अधिक, रौकी आश्रव द्वार; ६
 समता रस नित सेवता, वृत्त नवमे नीरधार. ६
 उपलोग परिभोग द्रव, साथे दिशा मान; १०
 अभूक वणतनु आदरे, दशमुं वृत्त गुणुवान. १०
 औविध अहार तणु करे, पाप स्थान पत्रभाणु;
 अभुक् पडोरनु ओड छे, ओकादश वृत्त ध्यान. ११
 अन पाणी वस्त्र औषधि, अन्य संयमने साज;
 भारमे वृत्त निर्दोष है, वांहे मुनि भडाराज. १२
 आयु स्थितिना अंतमां, आजवी थांय निर्दोष;
 श्रावक रौकी आवतां, चित्त वरते संतोष. १३
 आर वृत्त सलेधना, ज्ञानादि अतिचार;
 पुष्पयंद आलोचनां, शुद्ध रहे आचार. १४

अडिंसा वृत्त.

अडिंसा वृत्त आराधतां, णाकी चार सडेल; १
 चुके चित्त लगारतो, णाकीनां मुश्केल. १
 मन वयन काया थकी, त्र ३ स्थावर जे एव;
 स्वपने धांत न संलवे, तो पाये सुख शीव. २

વેટલી આશા આપને,	મગના અણપ હાન;	
સરવ હવને તેટલો,	આપો હક સમાન.	૩
હું અવર તણ આંતરો,	સમ ભાવે વરતાય;	
પાપ સ્થાન પરાં થતાં,	પહેલું વૃત્ત પગાય.	૪
હવન વહાલું હવને,	મરણે કંપિત જોય;	
નિજ અનુભવથી અનુભવી,	હવ ન હણુશો દોય.	૫
કરી કલ્પના ઘાતની,	રહ્યો હવતો દોય;	
ઘાત કર્યાં સમ પાપ તા;	લોગવવાનું તાય.	૬
કરવી કે અનુમોહવી,	અવર હવની ઘાત;	
ઘાત એ નિજ આતમ તણી,	એ છે નિશ્ચય વાત.	૭
આતમવત સૌ હવશું,	વરતે મન વચ કાય;	
જમસ્કાર ત્રીકાળ હો;	પરમાત્મા સુખદાય.	૮
હિંસા ત્યાં ધર્મ ન સંભવે,	ધર્મ અહિંસા એક;	
ધર્મ નિમિત્ત હિંસા કરે,	મોહ અંધ છે છેક.	૯
અહિંસા ધર્મ છે આતમનો,	જ્યાં હિંસા ત્યાં પાપ;	
ધર્મ નિમિત્ત હિંસા કરી,	લેવી નર્કની છાપ.	૧૦

૧ યજ્ઞ બલીદાન વીગેરેમાં થતો પશુ વધ.

ધર્મ અંગ સમસ્તમાં,	અહિંસા એક પ્રધાન;
તપ જપ વૃત્ત વિશુ એકલી,	આપે પરમ કલ્યાણ. ૧૨
સાલી મત્સ સંકલ્પથી,	ગયો નર્ક ગતિ જોય;
કરતા ને અનુમોદતા,	સરખા પાપી હોય. ૧૨
દાર લગારક લાગતાં,	જે કંપે નિજ કાય;
પર પ્રાણ શસ્ત્રે હણે,	એ અજ્ઞાન દશાય. ૧૩
ભયભિત સંસારી જીવને,	અહિંસા અમૃત રૂપ;
સમરથ ભાતું સ્વર્ગનું,	આપે સુખ અનુપ. ૧૪
ત્રસ સ્થાવર સહુ જીવને,	આપે અભયદાન;
વિવેકી કરૂણાળુ સદા,	સકળ ગુણ નિધાન. ૧૫
ત્રસ સ્થાવર સહુ જીવને,	ગણવા નિજ સમાન;
પરમ મિત્ર સમજી સદા,	દેવું અભયદાન. ૧૬
રાક્ષસ મનુષ્ય જનમ મહીં,	પીડે પરના પ્રાણ;
અહિત કરે નિજ આત્મનું,	તે મોહાંધ અજ્ઞાણ. ૧૭
હિંસા નિષેધી સર્વથા,	જીન આગમમાં જોય;
અન મતિ અહિંસા વદે,	પોષે હિંસા તોય. ૧૮
કિંચિત પીડાથી લઈ,	પ્રાણ હરણુ પર્યાંત;
હિંસા મન વર્તન સમી,	સુક્ષ્મ થકી અત્યાંત. ૧૯

પંચ વિધયને ચોખવા, કે કરવા વેપાર;
 ગમત ખાતર પણ ઘણા, હિંસાના હુથિઆર. ૨૦
 નિશ્ચય નયથી તો કહી, રાગાદીક હિંસાય;
 વ્યવહારે પર ઘાત તજ, ભવી ભજ અહિંસાય. ૨૧
 અહિંસા વૃત્ત પુરણુપણે, અણુગારી આચાર;
 શ્રાવક પણ હિંસા તજે, છતાં કંઈ આગાર. ૨૨
 ત્રસ સ્થાવર સહુ જીવની મનમાં મહેર સદૈવ;
 સ્થાવર વરજી શ્રાવકો, હણે ન જાણી જીવ. ૨૩
 મન વચન કાયા થકી, પરના પ્રાણુ દુભાય;
 યુષ્પચંદ હિંસા કહી, જીન આગમની માંય. ૨૪

બીજાં સત્યવૃત્ત.

વચનરૂપ વન ગહન છે, સત્ય વૃક્ષે શોભિત;
 અતિ અત્ને ઉછેરીએ, સીંચી દયા જળ નિત્ય. ૧
 વૃત્ત અહિંસ્યા વૃક્ષની, વાડ ખાકી વૃત્ત ચાર;
 સત્ય વાડ સડતાં ઘટે, સર્વ સખળ આધાર. ૨

અસત્ય છે તે સત્ય જ્યાં,	હિત જીવનું જાણ;	
સત્ય છતાં અસત્ય જો,	પર અહિત પીછાણ. ૩	
અનાદિ આત્મ કલેશને,	યમ નિયમે હુણુનાર;	
મુનિ સત્ય રૂપ નાવથી,	તરે ભવ દષ્ટી પાર. ૪	
સત્ય કરુણામય સરલ,	અવિરૂદ્ધ ગંભીર;	
વચન વદો ત્રિવેકથી,	તરવા ભવ દષ્ટિ તીર. ૫	
અખોલ અવલંબન ભલું,	સર્વ સિદ્ધિ દાતાર;	
છતાં ખોલ તો ખોલજે,	ખ્યારૂં સત્ય હિતકાર. ૬	
સત્ય સનાતન ધૃત છે,	કેવળી ભાષિત ધર્મ;	
અસત્યથી ઉલટાઈને,	ઉભરાયા અધર્મ. ૭	
કંઈક નીચ સ્વારથી થઈ,	વિષય પોષવા કાળ;	
અસત્ય વચન વિલાસથી,	થઈ ખેઠા ગુરુરાજ. ૮	
અસત્ય આંદોલન સમુહથી,	વ્યાપ્યો અજ્ઞ અધિકાર;	
શાસ્ત્ર શસ્ત્ર સમાં રચી,	કર્યો અસાર સંસાર. ૯	
હુષ્ટ પુરૂષના મુખની,	અસત્ય વાણી જોય;	
જેવી કાળી નાગણી,	હુઃખરૂપ જગને હોય. ૧૦	
પૂછે તોપણ નવિ વદો,	સંદેહી પાપી વાચ;	
દ્રેષ દોષ સંયુક્ત પણ,	સુણવાને નહિ રાગ. ૧૧	

सत्यकार भार्मिक अशीर;	विरोधी ह्या रक्षित;
प्राण्यु जतां पण्यु नहि कही,	वहो वचन विपरीत. १२.
ह्या सिंधु हृदयमां,	वचन लडेर दृष्टोत्त;
शान्ति आपे सरवने,	धन्य सत पुत्र्यु गोव. १३.
धर्म नाश विपरीत डीया,	लोप शास्त्रो थाय,
सरलपण्ये समलववा,	पूछ्या वीण्य वदाय. १४.
तत्त्व द्रव्य ने कायनी,	डोय श्रद्धा विपरीत;
अे मिथ्यात्व मडा मोटकुं,	सत्य न येटे चित्त. १५.
सत्य सरधाथी उचर्यो,	डिलटायुं कंठ इय;
तो ते सत्यज समजपुं,	असत्य अेज स्वइय. १६.
कर्म अंध अति आकरा,	असत्यथी अंधाय;
नर्क नीगोह तिर्यंचनां,	अत्यंत दुःख पमाय. १७.
अंद्र अंदन अंद्रामणी,	पुण्य सुकृताइण डार;
अेथी अधीक शीतण कडो,	वचन हिलासा हार. १८.
अग्नि जवाणाथी अधिक,	दुर्वचन दुःखकार;
अट रस लोजनथी लला,	वचन हिलासाहार. १९.
अन प्रसन्न सत्य प्रियकर,	ललीत वचन लंडार;
तेड छतां शठ तो वहे,	कठोर मूण उच्यार. २०.

સંતવશ સત્ય શીલ સહ,	જે મહા પુરુષ ક્રોધ;
અર્થ સ્પર્શ ભૂતળ થતાં,	પૃથ્વી પાવન હોય. ૨૧
સત્ય પ્રતિજ્ઞા રહીત જે,	અધમ પાપી નીચ;
અનુબંધપણુ જોઈ ખુતશે,	સંસાર કાલ્પ ક્રીચ. ૨૨
રૂઝાથ ધાવ તરવારનો,	ખંડક ઝરછી ક્રોચ;
નિર્દય નરના વચનનો	રૂઝયો ધાવ નવ લેય. ૨૩
ધિક્કાર પાપી વિશ્વમાં;	હરે પ્રાણીના પ્રાણ;
અહિત થાય નિજ આત્મનું,	એથી રહ્યો અજાણ. ૨૪
અસત્ય વચન સંસારમાં,	સારે શસ્ત્રનું ઠામ;
વિવિધ પ્રકારે વિસ્તરી,	હિંસ્યા ઠામે ઠામ. ૨૫
વિતરાગે આ વિશ્વમાં;	સૌથી સત્ય રૂપી નીર;
અહિંસ્યા અમર કરી,	દયાનિધિ મહા ધીર. ૨૬
અન વચન કાયા તણા,	અશુભ વરતે લેગ;
વરતન વિરૂઢ ખતાવવું,	એજ અસત્ય સંલેગ. ૨૭
શુભ લેગથી રાખીએ,	કહેણી રહેણી એક;
સનાતન મારગ સત્યનો,	સહજે સહ વિવેક. ૨૮
ભુખણ વિદ્યા વિનયનું,	યમ નિયમનું સ્થાન;
સમ્યક્ દર્શન સત્ય એ,	સત્યજ સમ્પ્રકૂ જ્ઞાન. ૨૯

હૃદ્ય હૈત્ય સિંહ સાપ કે,	દેવી દેવતા હોય;
સત્ય પ્રતિજ્ઞાવંતને,	લોપી ન થકે હોય. ૨૦
ચંદ્રપ્રભા સમ ઉજળો,	જગ વાધે જગપુર;
દેવાદિક સ્તુતિ કરે,	સત્યવાદિ હજુર. ૩૧
અકુલીન રોગી હીનને,	દંદ્રિયો હોય અપૂર્ણ;
છતાં સત્ય ભૂષણ ધર્યે,	શોભે છે સંપૂર્ણ. ૩૨
તપસ્વી કે જોગી જતી,	નમ્ર વસ્ત્રધર હોય;
અસત્ય ગયું ન ઉરથી,	ચંડાળ સમ છે સોય. ૩૩
ધન કુટુંબ જીવન વધે,	અસત્ય ઉચરવા ઠાજ;
ધન્ય પુરૂષ સત્યવાદી તે,	છરૂં છે ન જોડ અઠાજ. ૩૪
સકળ પાપ એક છાગડે,	અસત્ય ખીજ મેર;
છે સરખાં બે વજનમાં,	અસત્ય કરાર કેર. ૩૫
મને છગ લેદે છેતરે,	ન ધરૂં તેનો રોપ;
હાય હજુ નિબ આત્મને,	એજ અતિ અપશોપ. ૩૬
અસત્ય આચાર વિચારમાં,	ઉછરે આને લોક;
અસંગ પડ્યો કેમ છોડવો,	એજ અધિક છે શોક. ૩૭
સ્વરૂપ સમજ્યો સત્યનું,	ખોલી ન લખી શકાય;
મુગો શુભ સ્વપ્ના થકી,	મનમાં મગ્ન જણાય. ૩૮

निधं छतां पर श्वानने,	पाणे अहुं जन धेर;
असत्य वचन वहनारने,	दृणी उपजे ऊर. ३६
सत्य न संताडयुं रडे,	योकार्ये न पमाय;
सुरज उज्यो छाअडे,	ढंकयो केम ढंकाय. ४०
सुकृत सधणां सेवीने,	मेणव्यो जश जगमांय;
अेकज असत्य उच्यारथी,	सुजश सकण दुण्णाय. ४१
परिचय जुठा पुरषने,	करतां छे मडा पाप;
स्वग्ने संग न संतने,	रडेवा आपनु आप. ४२
उर्यो निषेध असत्यने,	श्री देवाधि देव;
अनुसर्था कंठ मडाभति,	करे सत्यनी सेव. ४३
करे सत्यनी सेवना,	सर्व वृत सचवाय;
आश्रय अेक णीज तण्णे,	गलित रह्यो सदाप. ४४
नास्तिक उद्वटुं आचरी,	मेत्री सत्यने इर;
असत्यने आहर करी,	लरे पेट लरपुर. ४५
सुत्र स्वजन स्त्री मीत्र के,	नीजनी सरे अगत्य;
तोपणु लव जतां नडि,	वढवुं वचन असत्य. ४६
सत्य वचन संसारमां,	करे सकण कट्याणु;
पणाय पुरणु मुनिपण्णे,	पमाय पढ निर्वाणु. ४७

સત્ય વૃત્ત સંપુરણપણે,	અણગાની આચાર;	
પુષ્પચંદ શ્રાવકપણે,	છે સુદામ આચાર.	૪૮
કન્યા ગો ભૂમિ સાહિતી,	થાપણ લેણ ને દેણ;	
પુષ્પચંદ શ્રાવક કહી,	વદે ન જુદું વેણ.	૪૯

ત્રીજું અસ્તેય વૃત્ત.

વિતરાગીપણા વિના,	સહુ જગતના ચાર;	
પર દ્રવ્ય પ્રીતેથી હરે,	નેવું કર્મનું ભેર.	૧
મુનિ ગુણુ ભુષણુ રૂપ જે,	વૃત્ત અસ્તેય સદાય;	
મોક્ષ મારગે સ્થિર થના,	આદર મન વચ કાય.	૨
ઇન્દ્રિય અદત્ત વસ્તુ તણી,	કરવી ન મન વચ કાય;	
ભવ દંધી તરવા નાવ તે,	વૃત્ત અદત્ત ગણાય.	૩
ગાદ્ય પ્રાણુ છે જીવનાં,	ધનાદિ પરિવ્રહ કાય;	
હરણુ કર્યે હણાય છે,	પ્રાણુ જીવનાં ભેય.	૪
ચોરી હિંસ્યા મય કહી,	અસત્ય ચોરી સાથ;	
પાપ અદાર પોષાય છે,	અદત્ત ધરતાં હાય.	૫

વિદ્યા વિપરીત ચોરને,
 સ્વ પર જન નિંદા કરે,
 મરણ વિરુદ્ધ કઠાવીને,
 એને પણ ચોરી કહી,
 કૂડ કપટને કેળવી,
 ખાતર જોદી પણ ધણી,
 લૂંટે છે ધન માલને,
 ધનની સાથે તન હરે,
 કસળ ચોર કસળી બધા,
 હાકેમ થઈ ધનને હરે,
 લૂંટે જોશી બજારમાં,
 સગા સહિતને હેતરે,
 વાસ્તવિક વ્યવહારથી,
 અધિક લાહી ઓછી દીએ,
 પિતા માત કુટુંબીઓ,
 તસ્કરના સખંધમાં,
 ઘર વન કે સમાજમાં,
 પકડાયારી બીકથી;

કીરતી બદલ કલંક;
 હાય રાય કે રંક. ૬
 પર વસ્તુ ધરવી હાંથ;
 આપે હાથો હાંથ. ૭
 કરવો દ્રવ્ય જમાવ;
 જેણે ચોરી દાવ. ૮
 સ્થળવટ જળવટ ઠેઠ;
 બની કાંસીયા શેઠ. ૯
 જોવો ધંધો હાંથ;
 લાંચ લહે છે કાંચ. ૧૦
 બોલી મીઠા બોલ;
 તોડી કરેલા કોલ. ૧૧
 વરતાએ વિપરીત;
 એ પણ ચોર બચિત. ૧૨
 હેતુ મિત્રાદી કાંચ;
 આવ્યે રાજ ન હાંચ. ૧૩
 ચોર સદા લયલીત;
 રાએ ચંચળ ચીત. ૧૪

પકડાતાં પીડા ઘણી,
 કલિક જાવું જીવથી,
 પ્રથમ શિક્ષણ ચોરનું,
 માત પિતા મન મારીને,
 ઘર મારી પોતા તણું,
 વ્યસન સાતને સેવતા,
 ચિંતાતુર ચિત્તમાં સદા,
 વાત ચિત્તમાં વિકળતા,
 સહાય આપવી ચોરને,
 તોપણ ચોરખી ચોરીની,
 કર્યાં કર્મ કદી આ ભવે,
 પ્રાણપંથમાં તે પાલટી,
 ધાડું પાડી મારીને,
 પહોંચે વાર તો જીવનો,
 કુંડેળ કળીલો ચોરનો,
 ક્યારે જોઈશું જીવતો,
 ભય ભ્રમિત ચિત્ત ચોરનું,
 પુછી ભય પકડાયા તણું,

પડશે પ્રોઠ પ્રહાર;
 નિશદિન એજ વિચાર.
 ચોરે ઘરનું વિત્ત;
 રહે સદા ભયભીત. ૧
 પછી પડે છે ખહાર;
 મળી સાથી ખેચાર. ૧૭
 સુખે ન નિદ્રા આહાર;
 નહિ ચોખો વ્યવહાર. ૧૮
 કે સંઘરવો માત્ર;
 આવે માથે આળ. ૧૯
 સંચીત માંહી સમાય;
 ઉદય અહીંજ જણાય. ૨૦
 હુંટે ધન ઘરખાર;
 જોખમ થતાં શી વાર. ૨૧
 તે પણ ચિંતાતુર;
 એમ રહે આતુર. ૨૨
 ખેલે ચોરી દાવ;
 નહિ સુખનો લાવ. ૨૩

तस्करः द्वेभी तरतमां, तन मन शिथिल थाय;
 व्याकुलता व्यापे अति, थर थर कंचे काय. २४
 हाटेकुं के पडयुं अडयुं, विष्णु धणीआतुं काय;
 द्वेभी मन वय कायथी, त्यागी न रागी हाय. २५
 चार पुश्पना प्रसंगथी, मोटा छोटा थाय;
 सडा मुनि यणु पलकमां, निंदा युक्त गणाय. २६
 आ लोके दुःख अति धणुं, पर लव नकं निवास;
 चडे न शींके चारतुं, कर कडेवत अल्यास. २७
 अचेतन चेतन लेहथी, पर धन जेय प्रकार;
 मन वयन काया थकी, मुनि न करे स्वीकार. २८
 अन्न वस्त्र ने ओषधी, अन्य संयमनो साज;
 उलटथी आपे काय तो, अपतुं ले मुनिराज. २९
 शीवाय तृणु के रण तणुं, ज्यारे जर जणाय;
 आजा भागी अन्यनी, लेवुं अपे सहाय. ३०
 जे नियम आणुगारनो, नडि आगार लगाय;
 आणुगारपणुं अणुं जशे, युके चित्त लगाय. ३१
 आवकना आणुं वृत्त मडीं, छे सुक्ष्म आगार;
 वेतां छुट विशेष तो, लागे छे अतीचार. ३२

ખાતર વાટ પાડે નહિ,	જડયો ન સંઘરે માલ;
વૃત ત્રીજથી શ્રાવકો,	તરે ચોરી કુચાલ. ૩૩
કુડાં ન રાજે કાટલાં,	વરને ન રાજ વિરુદ્ધ;
ચુખ્ચાંદ એ વરતને,	જણાય શ્રાવક શુદ્ધ. ૩૪

ચોથું પ્રહાર્ય વૃત.

વૃત વડાં એક એકથી,	અન્યોઅન્ય આધાર;	
એક સર્વાંગે સેવતાં,	પગથે બાકી ચાર. ૧	
યંત્ર મહાવૃતમાં વડું,	શિયલ વૃત સીરદાર;	
પ્રહાર્ય શુદ્ધ સેવતાં,	બાકી સહેલાં ચાર. ૨	
પ્રહાર્યને ભાંગતાં,	ભાંગે સાથે ચાર;	
વૃત, જપ, તપ સહુ શુભ ક્રીયા,	પ્રહાર્ય આધાર. ૩	
જામે જશ આ જગતમાં,	અંત અચળ વિશ્રામ;	
સુર નર વર સેવા કરે,	જેણે જીત્યો કામ. ૪	
અનંગ પનંગ નવી આભડે,	ચેતો ચિત્ત જરૂર;	
પ્રહાર્યારીના ભાગ્યમાં,	સુખ સદા ભરપૂર. ૫	
દાનવ માનવ અસુર કે,	વિષધર પ્રાણી કોય;	
પ્રહાર્યારીને ભય નહિ,	કરવા સમરથ કોય. ૬	

તેજ યુગ તન પેખીએ,	બ્રહ્મચારી લગવાન;
દરસનથી પરસન થતાં,	થાય કોટી કલ્યાણ. ૭
ધીર વીર ધારણ કરે,	નહિ કાયરનું કામ;
મહાવૃત છે મોટકું,	બ્રહ્મચર્ય સુખ ધામ. ૮
એ અવલંબનથી થશે,	પરિબ્રહ્મ પીછાન;
યોગી ગણ એના વડે,	ધ્યાવે અંતર ધ્યાન. ૯
બ્રહ્મચર્ય વૃત નિરમણું,	પાળે વીણ અતિચાર;
મહા યુગ્ય તે યોગી ગણ,	ત્રીલોકના સીરદાર. ૧૦
બ્રહ્મચર્ય કલ્પ વૃક્ષને,	સીંગી સમતા નીર;
અહુ જતને કરી જાળવો,	ધરી વાડ નવ ધીર. ૧૧
ક્રીપાક ક્ષણની ઉપમા,	મૈથુન સંજા માન;
કિંચિત સુખ દેખાડીને,	કરે અંત જે જાન. ૧૨
ઇન્દ્રિય વશ દીન વિર્ય હિણ,	શકે ન પાળી શીજ;
સમર્થ શક્તિવાન જે,	તે પાળે શુદ્ધ દીલ. ૧૩

(કામના પ્રકોપથી થતા દોષો.)

કામ પ્રકોપ પ્રગટ થતાં,	ઉપજે જવાળા અંગ;
સુશાળધાર પડે મેઘ પાણ,	સમે ન અંસ અનંગ. ૧૪

પ્રજ્વલીત કામાગ્નિ થકી,
 હુગાડો સાગર જળે,
 અનંગ પનગ વિષ વ્યાપતાં,
 બાણી પરમ યોગી થયા,
 અનંગ છતાં અંગવાનને,
 છતાં અડગ યોગીશ્વરે,
 કામાગ્નિ પ્રજ્વલીત થતાં,
 સમાવવા સમરથ નથી,
 પ્રથમ પ્રગટ થઈ હૃદયમાં,
 અંગો અંગ દહન કરી,
 કામજ્વર કોપી કામીને,
 દેહથી જીવ જુદો કરી,
 ઉપદંશ પ્રમેહાદીકથી,
 કામી જનને કુમ થકી,
 દોષ કામ પ્રકોપના,
 મૈથુન કૃત સંસર્ગ જન્ય,
 સૂર્ય જેઠ મધ્યાનનો,
 કામાગ્નિ એથી અધીક,

પીડાય પ્રાણી જેઠં;
 સમે ન અગ્નિ તેઠં. ૧૫
 સુરછાયા જગ જીવ;
 શીંગ શરણુ ગૃહી શીવ. ૧૬
 જીતે જગમાં કામ;
 જીતે રાખી હામ. ૧૭
 દહન થાય છે દેહં;
 નદી દરીઓ કે મેહં. ૧૮
 પહોંચે બુદ્ધિ પાસ;
 કરે અંત વિનાશ. ૧૯
 ત્રીદોષ પણ વસ્તાય;
 નરકે દોરી જાય. ૨૦
 વિણસે સઘળી કાય;
 અહીંજ નર્ક જણાય. ૨૧
 કામની ચેષ્ટા દોષ;
 દોષ તણો અતી જોશ. ૨૨
 વિના વાદળે વન્ન;
 દેહે કામીનું તન્ન. ૨૩

હુએ અમીય કીરણ થકી,
 કામ કોપ ઉદ્ધટો વધી,
 કામ સત્તા સહુ જગતમાં,
 દેવ મનુષ્ય તિર્યચને,
 કામ વિષધરના વિષથી,
 શીયલ સરણ ગ્રહી યોગીઓ,
 આપે ત્રાસ ત્રિ લોકમાં,
 મહા યોદ્ધને મારવા,
 કામ હુળાહુળા ઝેરથી,
 ક્રોધ ઉપાય ન આવનીમાં,
 કામાગ્નિ નીવારવા,
 બુદ્ધે જઈ બે બાકળા,
 થયા કામ વશ જીવ જે,
 સત્ય કામ સઘળાં તજી,
 જ્ઞાત વેગ વિષ સાપના,
 કામાગ્નિ વિષ વેગ તે,

શીતળ કરવા ચંદ્ર;
 કરે કામી આકંઠ. ૨૪
 વ્યાપી કરે વિનાશ;
 બાંધ્યા વિષયા પાશ. ૨૫
 જાગી મુદ્ધિત જીવ;
 મેગવે છે સુખ શીવ. ૨૬
 નિર્ભય થઈને કામ;
 મુનિ ગણ ભીડે હામ. ૨૭
 નિશ્ચય છે મહા ઝેર;
 વરતાવે છે ફેર. ૨૮
 કામની રૂપી કીચ;
 નર્કને રસ્તે નીચ. ૨૯
 સ્વપ્ને ન પામે સુખ;
 થાય ધર્મ વિમુખ. ૩૦
 ઉપાયથી છે સાધ્ય;
 દેખો દશે અસાધ્ય. ૩૧

(કામના દશ પ્રકોપ) છપય છંદ.

ઉદ્દીપન થાતાં કામ, પ્રથમ પ્રગટે છે ચીંતા;
 ધ્રુષ્ટા કરી અકળાય, મળે ક્યારે એ વનિતા.
 લરે દીર્ઘ નિશ્વાસ, તાવ પણ ચડનો અગ્નિ;
 દેહ થાય છે દગ્ધ, અરૂચી અન્ન ન લાવે.
 અતિ ઉન્મત ઉતપાત, સંદેહ પ્રાણુનો થાય છે;
 મહા મુર્છાથી મુર્છીત થઈ, મરી માઠી ગતિ જાય છે. ૩૨

દોહરા.

સંકલ્પે કામ જ્વર કોપના, ત્રણ લેહે ઉદવેગ;
 તીવ્ર મધ્ય અને મંદપણે, વધતા ઘટતા વેગ. ૩૩
 સર્વ પાપનું મૂળ તે, જણાય જગમાં કામ;
 અધર્મ સૌ એના વડે, એજ દુઃખનું ધામ. ૩૪
 લજ અહોનિશ આતમા, રહેવું તેમાં લીન;
 અર્મ પ્રહાર્ય એજ છે, પાળે મુનિ પ્રવીણ. ૩૫

મળ્યો મનુષ્ય ભવ દોહીલો, કૃત્યુ વિષય વિષયાન;
ચેત યુષ્ય તજી કામને, આદર આતમ જ્ઞાન. ૩૬

(નારી નીંદા અને પ્રશંસા.)

મુખ વાણી અમૃત સમી,	હૃદય હુળાહુળ ઝેર;
શો વિશ્વાસ સ્ત્રી જાતિનો,	સુરી કાન્તાની પેર. ૩૭
નારી નીચ સ્વભાવની,	હરગુણનો ભંડાર;
સાધુ ત્યાગે સર્વથા,	શ્રાવકને આગાર. ૩૮
સંતોષી સ્વહારા ભણી,	અવર ભગની માય;
ચોથું વૃત શુદ્ધ શ્રાવકો,	પાળે અખંડીત કાય. ૩૯
સહુ નારી સરખી નથી,	સતી શીરોમણી હોય;
સર્વ વર્તિની દ્રષ્ટિએ,	નિષેધ સમુચે હોય. ૪૦
થયા થાય છે ને થશે,	પુરૂષ સલાખી ભોય;
વનિતા ઉદર ઉપજે,	સતી શીરોમણી હોય. ૪૧
નીચ કામને નીંદતાં,	કામની પણ નીંદાય;
હરગુણ જે સૌ કામના,	કામની તણા ગણાય. ૪૨
જીતે કામ નર નાર તે,	સરખાં થાય સ્વરૂપ;
હરગુણ સૌ હરે રહે,	કામજ હરગુણ રૂપ. ૪૩

કામની પ્રેરી કામની,	કરે કર્મ અધાર;
અળખા તે સળખા થઈ,	જાણવે અધિકું જોર. ૪૪
દેવો દોષ ઘટે નહિ,	સઘળો નારી શિર;
સહુ સંસાર એના વડે,	પડવા તરવા તીર. ૪૫
અળખા હોય તે કામને,	રહે સદા આધીન;
શિક્ષણથી સળખા કરે,	કરે કામ સ્વાધીન. ૪૬
ચતુરનિધિ તીર્થમાં,	શ્રાવિકા પદ એક;
જમાનાને અનુસરી,	કેળવે ધારી વિવેક. ૪૭
સંઘ સુધારણા કારણે,	આપો સ્ત્રીને સાજ;
સુધરી પ્રજા સુધારશે,	મહીલા મળી સમાજ. ૪૮
સંતોષી સ્વ ભરથારથી,	અવર બંધન બાપ;
યુષ સંકટે શ્રાવિકા,	રાખે આપનું આપ. ૪૯

પાંચસું પરિગ્રહ અથવા ઇચ્છારોધ વૃત્ત.

સર્વ પરિગ્રહ સર્વથા,	બાહ્ય અભ્યંતર કોય;
ઇચ્છારોધ અતિચાર વિણ,	મહા મુનિથી હોય. ૧
વાડ અહીંસા વૃક્ષની,	આ બાબુ પણ એક;
ખંડીત થાતાં બાકીની,	નિરૂપયોગી છેક. ૨

એક એકની સહાયમાં,	રહે બાકી વૃત ચાર;	
ચારીત્ર યોગી ગણુ તણુ,	સર્વ સિદ્ધિ દાતાર.	૩
પાંચે વૃત શુદ્ધ પાળતાં,	અઠાર પાપ તબચ;	
ચાપ સ્થાન પરાં થવાં,	એ વિતરાગ દશાય.	૪
અંતર આત્માને રહે,	સદા સ્વરૂપનું ભાન;	
પર પુદ્ગળ શું રાચશે,	બહિરાત્મ બેભાન.	૫
સ્વ પર પરખાયા પછી,	પર વસ્તુ પર પ્રીત;	
અંતર આત્માને નહિ,	રહેવી ઘટે બચીત.	૬
પર પુદ્ગળ પરિગ્રહ મળી,	પલમાં પરનો થાય;	
બાળે અંતર ઉલટું	જ્ઞાની નવ લોભાય.	૭
સર્વ વરતીને સર્વથા,	પરિગ્રહનાં પચખાણુ;	
દેશ વરતી હૃદ બાંધીને,	રોધે ઇચ્છા બાણુ.	૮
શ્રાવકને તો સર્વદા,	પરિગ્રહથી વહેવાર;	
સદ્વર્તનથી મેળવે,	લોપે ન હૃદ લગાર.	૯
પરિગ્રહમાં પ્રથમ પદે,	પૈસા પામે માન;	
સહુ વહેવાર સંસારનો,	પૈસા વડે સમાન.	૧૦
સાધુ શોભે ધન વિના.	પણુ શ્રાવક ધનવાન;	
સાંત ક્ષેત્રો ઉદ્ધારવા,	ખરચે ગંભ સમાન.	૧૧

गाडी लाडी वाडी डे,	पान पान गीतगान;	
अंतर उदासीनपणे,	हीजे हीनने दान.	१२
अर्थ अनर्थेनु मूण छे,	पुन्य पणु अथी पमाय;	
जे नितिथी मेणवी,	व्यय शुल भारग थाय.	१३
भमतां मुकतां तो भटे,	अधोगतिनी थीक;	
सभण लातुं थर्ध स्वर्गनुं,	दोरे मोक्ष नल्लक.	१४
अधिक मज्जुं शुल योगथी,	दर्थ हीनने दान;	
दया मार्ग हीपावणे,	आपी असय दान.	१५
आज असुलना उदयथी,	पाम्ये न पुरणु लोग;	
संतोषी शुल लावथी,	पामे शुल संल्लेग.	१६
अदप परिग्रहुथी लडे,	सडा वित्त संतोष;	
पुण्णीआ श्रावकनी परे,	करे करण्णी निरदोष.	१७
सौ आगारी तो नडि,	अनवाना अणुगार;	
पणु सभण्णे पासकपणे,	शाशनना शणुगार.	१८
आग अगीया अंगला,	इर्निअर इेशनदार;	
धन येवननेो लय करे,	व्यलियारी शीरदार.	१९
शुल संवयना योगथी,	अढये शिअर पर आज;	
पटकी पडीश अधोगति,	सुणुशे डेणु अवाज.	२०

બહીરાત્મ એ બાળની, કરો ન ઈર્ષા કોય;
 દયા આણવા જોગ એ, પામર પશુ સમ જોય. ૨૧
 અલખત આખી પૃથ્વિની, આવી મળે જો વેર;
 વધે લોભ ચિત્ત લોભીને, સંતોષથી છે વેર. ૨૨
 દોલત દોલત મારીને, પદમાં પરની થાય;
 થાપ કરાવી પુરતાં, નરકે દોરી જાય. ૨૩
 સંચે અર્થ અનર્થથી, લોપી વૃત્ત મર્યાદ;
 વિષય પોષવા વ્યય કરે, સુણે ન દીતનો સાદ. ૨૪
 તન ધન ચોવન પદવીના, મદમાં રહી મગર;
 સકળ વિશ્વની સંપદા, ઇચ્છે ઉર કરી કુર. ૨૫
 આચાર વિચાર અનુસારના, પડે શુભાશુભ બંધ;
 ઇચ્છારોધ અંતર થતાં, છુટે કર્મ સંબંધ. ૨૬
 સ્વ પર લેદ પીછાનવા, કરો તત્ત્વ અભ્યાસ;
 તોજ મતિ નિર્મળ થઇ, છુટે પરિશ્રદ્ધ પ્યાસ. ૨૭
 યુગ્મચંદ વૃત્ત પાંચમું, સાધુને મન સહેલ;
 શ્રાવક સંતોષી રહી, માને નહિ મુશ્કેલ. ૨૮

ઉપસંહાર.

ત્રિભુવન પૂજિત રત્ન ત્રય, એજ મોક્ષનો માર્ગ;
 આરાધી અતિચાર વિણ, થયા થાય વિતરાગ. ૨૯
 રહેસ્ય સર્વ સિદ્ધાંતનું, મુક્તિ કારણ એહ;
 સ્મયક્રુરત્ન ત્રય પરમ પદ, નિજ આત્મમય તેહ. ૩૦
 ગયા જાય છે ને જશે, મોક્ષ મહેલ વિતરાગ;
 રત્ન ત્રય આરાધતાં, જીત્યો દેશ ને રાગ. ૩૧

દર્શન, જ્ઞાન, ચારીત્ર, તપ એ મોક્ષના ઉત્તુચ્ચે
 હોવાથી ત્રીરત્ન પછી સંક્ષેપમાં તપસ્થાનું સૂચવના
 કરેલ છે.

કવિત-મનહર.

સકામ નિર્જરા તે તો, જાણીએ તપસ્યા અંગ;
 સલેખના સાથે, મૃત્યુ મોચ્ય વિચારીએ.
 અશુભ ઉદ્દ્યે મન, વચ કાય સમલાવે;
 સકામ નિર્જરા થાતાં, કરમ નીવારીએ.
 શુદ્ધ ચારિત્ર સરવ, સમાએ તપસ્યા માંહી;

जाद्य अर्थंतर गार, तंप तो आचरीजे.
इंद्रिय निग्रह साथे, कषायो पाडो पातणा;
धत्यादि तपस्या वडे, आत्म उद्वारीजे.

अन पाणी भेवो अने, योथो ने सुभवास;
सहु श्रमणु तो सर्वथा, तने रात्रीजे भास. २
तने श्रावक पणु सरवहा, रात्री लोचन चार;
पणु प्रतिकूल समयनो, राणे छे आगार. ३
रात्री लोचन त्यागतां, सकाम निर्भरा थाय;
दाल लाव ने द्रव्यथी, रडे निरोगी काय. ४

उपसंहार.

ज्ञान दर्शन चारीत्र ने तपस्या गार प्रकार;
युध लावथी सेवतां, मुक्ति कृण हातार. २

પ્રતિક્રમણુ આપય.

તિક્રમણુ કરો પળપળે,	દેખીને નિગ્ર દોષ;	
મકીત શુદ્ધ રહે સદા,	ચિત્ત વરતે સંતોષ.	૧
વત્સર ચોમાસીએ,	પગળી ને દિન નીશ;	
તિચાર આલોવતાં,	ખામો નામી શીશ.	૨
પ્રાયિક ચોવી સંતને,	કરી વંદન જે વાર;	
તેક્રમણુ ને કાઉસગ,	પ્રત્યાખાન આચાર.	૩
ન કરી સમકિતની,	ઈચ્છ્યો મત મિથ્યાય;	
પ્રય કરણી ક્રમ તણો,	પાખંડ ગુણુ ગવાય.	૪
પરિચય પાખંડીનો,	જનમતનું નહિ જાણુ;	
ત્રી વિધિએ વોસરૂં,	સાક્ષી શ્રી લગવાન.	૫
આવશ્યક ખાંતે કરી,	કરીએ અર્થ વિચાર;	
પચદ સહુ પાપને,	હણુવાનું હુથીઆર.	૬
જ્યાત્ન અવૃત પ્રમાદને,	કષાય અશુભ ભોગ;	
ક્રમણુ કર્યું પ્રીતથી,	મળવા શુભ સંભોગ.	૭
ક્રમણુ ગત કાળનું,	વર્તમાન સમ ભાવ;	
ચનાં પરચખાણુથી,	લહો નીશ દિન લાન.	૮

पडीकमवाथी यापने, परां करे नीश दिन;
 समलावे रडी सर्वदा, संयो नडि नवीन.
 अजगुतां आवी भजे, पाप तणा परसंग; १०
 तरत पग पाछा लरे, भजे न आतम संग; १०
 जगुणी प्रीछी आदरे, पाप तणा परणंध;
 कुहरत साइ करे नडि, पडे आकरे णंध; ११
 यापथी पग पाछा लरी, परयावे व्यवहार;
 छतां अडोनीश आदवे, जे श्रावक आचार; १
 पडीकमीने परवरे, करवा कर्म कठोर;
 साहुकारना वेशमां, जगुणी जुठो चोर; १३
 नाम धरी श्रावक तणुं, करतो सावज काम;
 पडीकमवाथी शुं वणे, निति डोय डराम; १४
 चारीत्रनो शुभ सार ते, वरतनमां वरताय;
 जे वरतन जुडं पडे, तो पहलपु न्जणाय; १५
 करी सामायिक संचरे, मनमां न रडी भडेर;
 साकर स्वद लीधा पछी, सुण आरोग्युं उेर; १६
 संसारी व्यवहारमां, करतव्य करवां शुंढ;
 चार वृतेना णंधथी, वरतन नडि विइद; १७

ગાં સંબંધી સાથમાં, વિષેવાદે પરતાય;
 પુરત ચેતી ચિત્તમાં, દેવી લેવી ક્ષમાય. ૧૮
 હોર દિવસ કે માસમાં, અથવા ચાર છ માસ;
 ભાવતાં શ્રાવક તણું, વૃત્ત પકડે ઉગ્રશ. ૧૯
 વત્સરની આખરે, અવળ્ય થવું નિર્દોષ;
 ક્ષી માન ક્ષમાવીને, અંતર તજવો રોષ. ૨૦
 અનુસાર ન અનુસરે, શ્રાવકપણું તજય;
 વના આંકડે શુન્યની, કિમત કેમ ગણાય. ૨૧
 ક લજ વહેવારથી, ઘણું ખમાવે એમ;
 અંતર વધતો આમણો, અપીઆ જેમના તેમ. ૨૨
 ણંધના હેતુઓ, વિરોધ વેર ને ઝેર;
 રની દાઝે શીઠ તજો, નીજ આત્મની મહેર. ૨૩
 તેકમણુના હેતુઓ, સમજણથી સચવાય;
 અચંદ શ્રાવકપણું, સમકિત સહિત જણાય. ૨૪

ચારીત્ર, તમ, ધ્યાન ઇત્યાદી અંતે સુસાધિ
 ભણે મરાય તોજ તેની સદ્ગતા છે, તેથી હવે
 સાધિ સતક કહે છે.

અથ સમાધિ સતક.

લેસ્યા અંત સમય તણી, પરભવ માંહી પમાય;
માટે શુભ લેશી થવા, આદર એહ ઉપાય.

(સમાધિ સતકના પેટામાં પ્રથમ સલોખના કહે છે.)

માણીમય કલસ સલોખના, કનક ભુવન વૃત ખાર;
સલોખન વિણુ શા કામના, તપ, જપ, વૃત, આચાર.

સલોખના જે લેદથી, કાયા અને કષાય;
કેડા મોર ન કામનાં, સાથે સાધન થાય.

કાય કષાય સલોખના, સાથે રાજ સદાય;
જે ચક્રના ચંત્રમાં, એકે કામ ન થાય.

એકજ કાય કલેશથી, પડે ઉદારિક દેહ;
કાર્મણુ દેહ કરમ ગ્રહી, નવીન આપે તેહ.

કારમણુ દેહ નીવારવા, કર કષાયનો નાશ;
તોજ કરમ નિરમૂળ થઈ, છુટે ગર્ભવાસ.

કાય કલેસ કરી મરે, તિર્યાચ તરે ન કાય;
કષાય એકલી છુતવી, કાય કલેષ વિણુ નોય.

સશક્ત હોય શરીર તો,	કરવો ન કાય કલેષ;	
સાધો ધર્મ આ દેહથી,	હોય આયુ અવશેષ.	૮
સાધન ઉત્તમ આ મન્યું,	મનુષ્ય દેહમાં આજ;	
પ્રોષણ દેવું પીંડને,	કરવા આતમ કાજ.	૯
શક્તિ હોય શરીરની,	સાધન મૂકી દૂર;	
દેહ પાડતો માનવી,	આતમ ઘાતી જરૂર.	૧૦
મરી ખોવું મનુષ્યપણું,	લવ તરવાનું નાવ;	
દેવ તિર્યંચ કે નારકી,	લહે ન આવો લાવ.	૧૧
અસાધ્ય વ્યાધિ ઉપસર્ગ કે,	ઉગરવાની ન આશ;	
હંલવ એવો લાજતાં,	આહરવો સંન્યાસ.	૧૨
ધર્મ કાર્ય આ કાયથી,	નીપજવાની ન આશ;	
યારે સજી સલેખના,	છોડ કર્મનો પાસ.	૧૩
શક્તિ જાય શરીરની,	થાય ન સાધન કાય;	
મતા મૂકી દેહની,	સજ સલેખના ભાય.	૧૪
જી સમજ વશુ સાડવી,	દેહ એ આતમ ઘાત;	
મજી મરણ શરણ થવું,	સલેખના સાક્ષાત.	૧૫
જન પરિજન સંતોષવાં,	લેણુ દેશુ કરી દૂર;	
ગ દ્વેષ પરિત્રુડ તજી,	માગવી માફ જરૂર.	૧૬

આયાશ્રિત લેવું પુર્વનું,	વર્તમાન સમભાવ;
આશ્રવ રોકી આવતા,	લે સંલેખના લાવ;
યંચ વિષયાદિ લોગ તે,	તજ સજ સમભાવ;
કાચ કષાય કલેષને,	અંતે અંતર લાવ. ૧૬
યંચ પ્રભુને પરણુમી,	પચળી પાપ સ્થાન;
અનંશન આદિ આકરી,	ધરવું અંતર ધ્યાન. ૧૬
સોહંગ શ્વાસોશ્વાસથી,	અવર ક્રિયા કરી ણંધ;
આરાધન અવિનાશમાં,	છોડ દેહ સંબંધ.
નહિ ઇચ્છા જીવ્યા તણી,	નહિ ઇચ્છવો કાળ;
મિત્ર સમૃતિ મરણુ ભય,	તજ નિદાન અતિચાર. ૨૧
મોહ દેહાદીક હર કરી,	કરવા મન મજાણુન;
મૃત્યુ મહોત્સવ સહુસ્થનો,	કર અનુભવ અદ્ભૂત. ૨૨

સંલેખનામાં દેહ મોહ ઉતર્યા વગર મન સ્થિ
 યાય નહિ માટે દેહ મોહ ઉતારી દ્રઢ કરવા અ
 આત્મસ્વરૂપ ણતાવવા મૃત્યુમહોત્સવ કહે છે.
 મનુષ્ય ભવમાં મહોત્સવ કયો? મૃત્યુ મહોત્સવ.

દોહરા.

ઉત્સવ જન્મને લગ્નને, દિક્ષા ઉત્સવ થાય;
 મૃત્યુ મહોત્સ શ્રેષ્ઠ છે, જે નિજ આતમ ધ્યાય. ૨૩
 રત્ન કરંડ માંડે ભર્યાં, રત્ન અમુલ્ય અનેક;
 અંત સમયની આરસી, જે મુક્તિ આ એક. ૨૪
 અમૂલ્ય વણ મૂલ્યે મળે, મૃત્યુ મહોત્સવ નામ;
 અંતરથી આરાધતાં, સ્થાપે મુક્તિ ઠામ. ૨૫

(મૃત્યુ સમાધિમાં વિધન ન આવે માટે પ્રભુ સ્તુતિ.)

પ્રવર્ત્યે મૃત્યુ મારગે, આપો શ્રી લગવાન;
 ભાતું સમાધિ ઝોધનું, પહોંચું મુક્તિ સ્થાન. ૨૬
 અંતે અંતર શુદ્ધ રહે, ધ્યાવા સોહં ધ્યાન;
 આધિ વ્યાધિ ઉપાધિથી, થાઉં નહિ જે ભાન. ૨૭
 અંતરાય આવે નહિ, આરાધનમાં કોય;
 ચિત્ત વિક્ષેપ ચડે નહિ, કૃપા પ્રભુની હોય. ૨૮
 યાજ મરણ મેં જહુ કર્યાં વધારવા સંસાર;
 યંડિત મરણ શરણ થવા, આપો પ્રભુ આધાર. ૨૯

(પ્રભુ સ્તુતિ કર્યા પછી હવે યોતાના આત્મા સમજાવે છે કે:—)

હાડ પિંજર ભરણ થતું;	કૃમી જળ શરીર;	૩૦
ભાંગ્યે ભય શાને ધરે,	નિશ્ચય તું અશરીર.	૩૦
દેહ મોહના પાશમાં,	ભૂલ્યો ચેતન ભાન;	
આત્મસ્વરૂપ ન ઓળખ્યું,	આવ્યું દેહ શુભાન.	૩
આ શરીર તે તું નથી,	તું તો જ્ઞાન સ્વરૂપ;	
દેહ વિનાશીક દ્રવ્ય છે,	આત્મા અમર અરૂપ.	૩૨
નહિ નર તું નારી નહિ,	નહિ નયુંસક નામ;	
સત્યદાનંદ શીવરૂપ તું,	ચોતે આતમરામ.	૩૩
ન તિર્યંચ ન નારકી,	દાનવ માનવ કૈાચ;	
વિવિધ વેષ વિભાવથી,	શાન્તિ સ્વભાવે હોય.	૩
મૃત્યુ અવસર આવતાં,	માન મહોત્સવ ચિત્ત;	
ભરણ દેહ સાટે મળે,	નવીન દેહ ખચીત.	૩૫
ભરણ પહેરણ પરહરી,	સજવું નૌતમ અંગ;	
ભય તેમાં શો ભાગવો,	ધરવો મન ઉચ્ચરંગ.	૩૬
તજવી જૂની ઝુંપડી,	વસવું નવિન મહેલ;	
કેર આદર આનંદથી,	શું ? માને સુસ્કેલ.	૩૭

જાની: મન મુંઝાય શું, યા સન્મુખ તૈયાર;
 દેહાંતર સ્થિતિ છે થવી, ઉદય કરમ અનુસાર. ૩૯
 હૃદ્યાન ધ્યાતો મરે, દુર્ગાનિમાં અવતાર;
 ક્યાવે શુદ્ધ સ્વરૂપ તો, મુક્ત થતાં શી વાર. ૩૯
 અજ્ઞાની ઉન્મત્તમાં, મરણ સમય મુંઝાય;
 જ્ઞાની ધ્યાન સ્વરૂપનું, ચિત્ત ચોખેથી ધ્યાય. ૪૦
 આં ભવ આપ્યું આદ્યું, ક્ષણ પર ભવમાં હોય;
 મૃત્યુ વિણ કેમ તે મળે, ચિત્ત વિચારી નેય. ૪૧
 સુકૃત સેવ્યાં હોય તે, મન રાખી મૂઢીત;
 મૃત્યુને મહોત્સવ ગણે, થાય નહિં ભયભીત. ૪૨
 મુખ્યપણે મૃત્યુ પછી, કૃત્યા કૃત્ય ક્ષણ હોય;
 કર અવિકારી મરણ તો, સુખ સંપદા નેય. ૪૩
 અ કર્તવ્ય કર્યાં નથી, છો શીલ ગુણ સહિત;
 મો ભીતિ શી મૃત્યુની, તજ તજ મતિ વિપરીત. ૪૪
 યદ આપે સુખ સ્વર્ગનું, સુકૃતને અનુસાર;
 ય તું મૃત્યુ મિત્રનો, તજ તજ કરી વિચાર. ૪૫
 રા વ્યાપી જીરણ થતી, દેહે પામતો હૃષ્ણ;
 વારી મૃત્યુ મિત્ર તે, આપે ઉલટું સુખ. ૪૬

उभं शत्रुये साहीने,
 येतन हुंण तेमां सडे,
 छोडावे मृत्यु महिपती,
 लय मूकी लज्जो लज्जो,
 इरी ह्यं नीय पिंजरे,
 मृत्यु मित्र पाछण पडी,
 कडो हुवे हुं केम करी,
 मृत्यु समाधि रायथी,
 अविकारी मर्णु करानशे,
 अष्ट कर्म अरी लय थकी,
 आत्मधीनु ध्यान तो,
 मृत्यु मित्र आवी मणे,
 नहि आतुर लुण्या तण्णो,
 शुल ध्यान शुल योगथी,
 या विदेही शीह रडे,
 मृत्यु समाधि साधी कर,
 मृत्यु कल्पद्रुम पागीने,
 शुडे जन्म कुपु कीचमां,

पूर्वे पिंजर हे
 शाथी पासे छेड
 समरथ को सरदार
 गजुवो सुभ हीतार
 पुरे कर्म कठोर
 मूकावे करी जेर
 पामु नडि प्रतिबंध
 भांध गाढ संणंध
 आपी साह्य अत्यंत
 करशे नकी नयंत
 स्व स्वरूप लगवान
 देवा मुक्ति दान
 नहि धर्यतो काण
 द्वाय स्वरूप रसाण
 हुणी देहनादास
 मुक्त पुरीमां वास
 क्युं न साधन काय
 कडो साधन शुंथाय

માનવ ભવમાં મૃત્યુ તે,
 ભવ તરવા ॥ તક મળે,
 મૃત્યુ કલ્પદ્રુમ મનુષ્યને,
 ભાવ ભાવથી ભાવના,
 દર્શન જ્ઞાન ચારીત્ર તે,
 સમાધિ મૃત્યુ મનુષ્યમાં,
 અશક્ત શરીર મૃત્યુ લઈ,
 જ્ઞા ॥ મન સુદીત થશે,
 દુખમય પર્યાય પાલટી,
 જ્ઞાનીને ગમતું થશે,
 સરતું પડતું વિનસતું,
 શ્વાસોશ્વાસ જીરાણુ થતું,
 શાન્તિ, કાન્તિ, ગળ ઘટે,
 સાંધા શિથિળ સૌ અંગના,
 સ્વારથ સર્યો સંગંધીનો,
 તરછોડે તીરસ્કારથી,
 રોગ અસાધ્ય આવી મળે,
 અસહ્ય વેદના વેદતાં,

કલ્પવૃક્ષ સમાન;
 મળે મોક્ષ નિધાન; ૫૬
 મન વાંછીત દાતાર;
 ભવ દધિ ભય હરનાર. ૫૭
 સમ્યક્ સીડી સાર;
 એકજ મોક્ષ દુવાર. ૫૮
 આપે નૈત્તમ દેહ;
 ધાતાં દુઃખનો છેહ. ૫૯
 રચાય નવા નવીન;
 અજ્ઞાની ગમગીન. ૬૦
 ધરી શકાય ન ધીર;
 જે તું જીવ શરીર. ૬૧
 જે ઈંદ્રિયો અચેત;
 ડગમગ ચાલન ચેત. ૬૨
 પછી ન પૂછે ભાવ;
 કયાં જઈ કરવી રાવ. ૬૩
 એક હોય ત્યાં એક;
 મૃત્યુ છોડાવે છેક. ૬૪

माटे	ज्ञानी मृत्युने,	माने भडोत्सव आप;
संयम त्याग विरागथी,	बधन्य देव अवतार ने,	ध्याय समाधि आप. ६५
केही अनुकमथी पणु अडे,	व्यापि रह्यो जे देडमां,	उत्कृष्ट सुप्र शीव;
संश्रितनां इग सेववा,	अंतर आत्माने नडि,	मृत्यु भडोत्सवे जव. ६६
अडिरात्म युद्धि देडमां,	आत्म स्वरूप अविनाशी जे,	जाली रह्यो सुप्र इःप्र;
कुर्मोदय अनुसारनी,	जे आशक्त संसारमां,	थाय मृत्यु सनमुप्र. ६७
आपर अवसर आवतां,	डाय नाश भारो थयो,	करवो धटे क्लेश;
कुटुंब कपीडो धन अयुं,	अज्ञानी जेम अंतमां,	भीतो रडे दुमेश. ६८
अधोगतिने आदरे,	वैरागी संसारथी,	देड द्रव्य लिन्न लिन्न;
ज्येवो अवसर आवतां,		काया मणे नवीन. ६९
		भरणु थडी लयलीत;
		जने भावरो चित्त. ७०
		गया लोग विलास;
		गयां गाम गरास. ७१
		भूडी स्वरूपनु लान;
		धरतो आरत दान. ७२
		निज स्वरूपना जालु;
		राजे चित्त समान. ७३

ગણી જંજીર આં દેહને,
 સમાધિ મરણ શરણુ ગ્રહી,
 ધન્ય જનમ આ જગતમાં,
 ધન્ય મરણુ પણ તેહનું,
 લોગવી સ્થિતિ પૂર્વની,
 આયુષ્ય અવધિ આવતાં,
 રોતાં પણ જાવું નહી,
 હસતાં જાતાં તો થશે,
 તૈયાર રહેવું સર્વથા,
 અચાનક આણે આવીને,
 મૃત્યુ અવસર આવતાં,
 વ્યાધિ વ્યાપે દેહમાં,
 દુખ દરદ છે દેહમાં,
 ભાન કરાવી જૂલનું,
 દેહ મોહ ઉતારવા,
 સૂચવવા શીવ માર્ગને,
 ભલે દેહ દુખ લોગવે,
 અનંત એમ આવ્યો તણ,

રાખે છુટવા નેમ;
 છુટે કુશળ ક્ષેમ. ૭૪
 કરી ન જનમે જેહ;
 કરી ન પામે દેહ. ૭૫
 કરી કમાણી હોય;
 રોકી ન શકે કોય. ૭૬
 કરી સ્વરૂપની હાણુ;
 પરમ સ્વરૂપ કલ્યાણુ. ૭૭
 મરણુ તરણુને માટ;
 કાળ દોરશે વાટ. ૭૮
 ઉદ્ય કરમ અનુસાર;
 જ્ઞાની ગણે હિતકાર. ૭૯
 દેહ તજ્યેથી સુખ;
 દોરે શીવ સનમુખ. ૮૦
 થાવા ભાન સ્વરૂપ;
 દે દરદાદિ દુખ. ૮૧
 ચેતન ચિત્ત વિચાર;
 તને ન આંચ લગાર. ૮૨

સહ્યાં દુખ નકં નિગોદનાં,	તિયં ચના પશુ તેમ;
બુજ દુખ બુજ કાળે સમે,	કર સહન ગણી એમ. ૮૩
દેહ શરણુ નહિ ભવને,	ભવ ભવ કરે નિરાશ;
મૃત્યુ સમાધિ શરણુથી,	મટે મરણુ ભય ત્રાશ. ૮૪
જેમ અગ્નિ લોહાપિંડમાં,	વ્યાપિ ખમે ઘણુ ધાય;
તેમજ દેહ સંબંધમાં,	સહ્યાં દુખ સદાય. ૮૫
વ્યાધિ વહાલો મિત્ર છે,	કરે કર્મનો ભક્ષ;
સાદ્ય કરે શુભ ગતિ થવા,	લે ઉત્તમ જો ભક્ષ. ૮૬
કાળ મહા વિકરાળ છે,	આપે તાપ અત્યંત;
ત્રાદ્ય ત્રાદ્ય પોકારતા,	જગવાસી સહુ જંત. ૮૭
જ્ઞાની તાપ સહન કરી,	થાય શુદ્ધ સુવર્ણ;
સંચિત સર્વે ભવ તણાં,	કાપે કર્મ આવર્ણ. ૮૮
કાચો ઘડો ન કામનો,	ભરવા નિર્મળ નીર;
આંચ ખમે જો અગનની,	તરે નદીનું તીર. ૮૯
મૃત્યુનો આ તાપ તે,	સમ લાવે સેવાય;
કાપી દગીયાં કરમનાં,	ભવ સાગર ઉતરાય. ૯૦
બહુ કાળે બહુ કષ્ટથી,	જે દુખ લે છે સાધ;
બુજ કાળ બુજ કષ્ટથી,	આપે મૃત્યુ સમાધ. ૯૧

દેહ પરિચ્છેદ કુટુંબનો,
 અભય થઈ સમ ભાવથી,
 શરીર તજ ચિત્ત શાંતથી,
 નર્ક નિગોદ તિર્યંચની,
 ધર્મ ધ્યાન ધ્યાતાં અને,
 મરણ પામતો માતવી,
 વૃત્ત તપ અધ્યયન સુવર્તું,
 ચુક્યો અવસર એહ તો,
 અનાદર અતી સહવાસથી,
 દેહ સંબંધે જીવ તેં,
 ઉપલોગ તો અવનવા,
 દેહ સંબંધે જીવ તું,
 તજ તજ દેહ આનંદથી,
 મનુષ્ય દેહે મૃત્યુનો,
 ગયો અવસર આવે નહિ,
 ચેત ચેત ચેતન અરે,
 આથી અધિકું શું કહું,
 મૃત્યુ સંમાધિ શ્રેણીએ,

મેલી મોહ તમામ;
 ભજવા આતમરામ. ૯૨
 આરત રૂદ્ર તમમય;
 ગતિ નીવારણ થાય. ૯૩
 શુદ્ધ સલેખના સાથ;
 થાય દેવનો નાથ. ૯૪
 અંત સમાધિ ઉદ્દેશ;
 અફળજ સહો કલેષ. ૯૫
 જણાય જગની રીત;
 અડી મતિ વિપરીત. ૯૬
 આહે ચિત્ત ખચીત;
 તજ તજ મતિવિપરીત. ૯૭
 લય તજ સમભાવ;
 મળે સમાધિ લાવ. ૯૮
 કરતાં કોટી ઉપાય;
 કાંઠે માલ વિમાય. ૯૯
 ચેતો ચેતન રાય;
 સહજે સ્વર્ગ જવાય. ૧૦૦

૬૬

ચઢતી પગથી પામતો, કરી કરમનો નાશ;
એજ સમાધિ શ્રેણીએ, અતેશીવ સુખ વાસ.૧૦૧
ભય ભાંગી મૃત્યુ તણો, કરે સ્વરૂપ પ્રકાશ;
પુણ્યચંદ ઉપદેશ આ, લે આતમ તું ખાસ.૧૦૨

ઉપસંહાર.

સમાધિ સત્તક હાર આ, કંઠે ધારણુ થાય;
શુદ્ધ સ્વરૂપને ઝોળખી, સમાધિ મરણુ મરાય.૧૦૦
કંઠાબ્રહ્મ અમુલ્ય આ, સમાધિ સત્તક નામ;
શ્રવણુ ધરતાં પણ મળે, અંત અતિ વિશ્રામ.૧૦૪
મૃત્યુ મહોત્સવ એજ છે, સર્વ ઉત્સવમાં શ્રેષ્ઠ;
અંત સમય આરાધતાં, સ્થાપે મુક્તિ ઠેઠ.૧૦૫

કર્મની વિચીત્રતા.

જે જે જગમાં વિચીત્રતા, શુભાશુભ દેખાય;
કર્મ સત્તાના દાખલા, છે અનુભવ નિજ કાય. ૧
માટે ચિત્તમાં ચેતીને, શુભ કરમ કરું સંચ;
હાથદાયકો જાણી તણું, અશુભ કર્મ પ્રપંચ. ૨

કવિત મનહર.

જ્ઞાનાવરણી કરમ, થકી જ્ઞાન રોકાયું છે; ૧૦૦
 દર્શનાવરણી થકી, દર્શન રૂંધાયું છે. ૧૦૧
 વેદની કર્મ પ્રતાપે, સાતા અસાતા વેદાય; ૧૦૨
 મોહની કરમ મદે, મોહમાં બંધાય છે. ૧૦૩
 આયુ કર્મે ઠામે ઠામ, જનમી દેહ તજાય; ૧૦૪
 નામ કર્મે નવ નવે, નામે ઓળખાય છે. ૧૦૫
 ગોત્ર કર્મ ઉંચ નીચ, ગોત્ર માંહી ઉપજવે; ૧૦૬
 અંતરાઈ કર્મે અતિ, લાલ દુર થાય છે. ૧૦૭

દોહરા.

આત્મા શુદ્ધ સ્વરૂપ તે, મળ્યો કર્મે મળ સાથ; ૪
 તીવ્ર તપસ્યા ધ્યાનથી, થાય નિરંજન નાથ. ૫
 જ્ઞાન દર્શન આવર્ણથી, ઢંકાએ છે તેહ; ૬
 વેદની કર્મથી વેદીએ, અસાતા સાતા દેહ. ૭
 મોહની કર્મ મદ મોહથી, મોહ્યો સહુ સંસાર; ૮
 જન્મ મરણ ફેરા ફેરે, આયુષ્ય કર્મ આધાર. ૯

નામ કર્મના ઉદ્ય સમ,	લમવું	ઠામો	ઠામ;
જીવની જીવા જોનીમાં,	જીવવાં	ધરવાં	નામ. ૭
ગોત્ર ઉંચ નીચ પામવાં,	ઠરી ન	એસવું	ઠામ;
રખડાવે ગતિ ચારમાં,	ગોત્ર	કર્મવું	કામ.
અંતરાઈના ઉદ્યથી,	લાલ	લેખતાં	ખોટ;
દાન વિચારને ભોગની,	ભરતી	ઇચ્છતાં	ઓટ.
ઘટમાળ અનુક્રમે,	ચડે	ઉતરે	જેમ;
કરમે ગ્રાહ્યા જીવની,	ગતાગતિ	છે.	એમ. ૧
સુક્ષ્મ બાહર કોય છે,	સ્થાવર	જંગમ	જોય;
સ્વર્ગ નર્ક આ લોકની,	ગતિ	કર્મથી	હોય. ૧૧
એકેંદ્રી આદિ લઈ,	પંચેંદ્રી	પરીચંત;	
શુભાશુભની વિચીત્રતા,	એજ	કર્મ	બગવંત. ૧૨
કોય રંક કોય નાય છે,	રોગી	નીરોગી	કોય;
કર્મ સતાના દાખલા,	જગ	ચયના	સૌ જોય. ૧
યંચ વિષયને યોષવા,	કે	કરવા	વેપાર;
વિના સ્વાર્થે પણ ઘણા,	બાંધે	કર્મ	અપાર. ૧૪
કષાય સંસાર વિકથા,	આરત	રૂદ્ર	સેવાય;
કર્મ બંધનાં કારણો,	આશ્રવ	તે	કહેવાય. ૧૫

મન વચન કાયા તણા,	જેહ શુભાશુભ યોગ;
સમય સમય સંચે સદા,	કર્મ તણા સંલેગ. ૧૬
કરવી કે અનુમોદવી,	અથવા ઇચ્છવી ઘાત;
અશુભ કર્મ અતિ આકરાં,	લોગવવાં સાક્ષાત. ૧૭
અદપ ઇજા આદિ લઇ,	પ્રાણુ હરણુ પર્યાંત;
હિંસા એ હેતુ કર્મની,	સુદ્ધ કે અત્યાંત. ૧૮
એક કે યુગલ યોગથી,	સિથિલ બંધ બંધાય;
તિમ ત્રીયોગની એકતા,	બંધ નકાચિત થાય. ૧૯
યુન્ય પાપ એ કંદ તે,	છે શુભાશુભ કર્મ;
સ્વર્ગ નર્ક આ લોકમાં,	રખડાવ્યાનો ધર્મ. ૨૦
વિના ચૈતન જડ લક્ષણે,	પર પુણ્ગલ સમુદાય;
ચૈતન્યને સંસારમાં,	રખડાવેજ સકાય. ૨૧
યુન્ય તત્વ પ્રભાવથી,	શુભ કર્મ ફળ હોય;
ઉદય આવતાં જીવને,	સુખ સંપદા જોય. ૨૨
અશુભ કરણી આદર્યે,	અશુભ કર્મ ફળ હોય;
કડવાં ફળ જીવ લોગવે,	પાપ ઉદયથી જોય. ૨૩
મિથ્યાત્વ અવિરતી પ્રમાદને,	અશુભ જોગ કષાય;
કર્મ બંધના હેતુઓ,	આશ્રવ જે કહેવાય. ૨૪

આત્મ પ્રદેશ સાથે મળે,	અષ્ટ કર્મ સંબંધ;
અતુરવિધ પ્રકારથી,	પ્રકૃતિ આદિ બંધ. ૨૫
આત્મ પ્રદેશથી સર્વથા,	મૂકાએ ને કર્મ;
જડ ચૈતન્ય જુદાં થવાં,	એજ મોક્ષનો મર્મ. ૨૬
કર્મ મળ કરે એકઠો,	પંદર પાપ વેપાર;
બાંધે બંધ અતિ આકરા,	પાપસ્થાન અઠાર. ૨૭
પ્રાલબ્ધ ભાવિ ભાવ વિધિ,	નરીખ કુદ્રત દૈવ;
જુજવે નામે ઓળખો,	એ સહુ કર્મ સદૈવ. ૨૮
કર્મ ન મૂકે કોયને,	દાનવ માનવ રાય;
કરણી સમ સહુ લોગવે,	એ છે કુદ્રત ન્યાય. ૨૯
રંક બને છે રાજ્યો,	રાય થાય છે રંક;
એ પણ કારણ કર્મનું,	કે એ વિધિના અંક. ૩૦
કરમે દેવ મનુષ્યમાં,	કરમે તિર્યંચ હોય;
કરમે નર્ક નિગોદમાં,	ગતાગતિ સહુ નેચ. ૩૧
લક્ષ ચોરાસી ચોનિમાં,	કર્યો અનાદિ જીવ;
એ છે કારણ કર્મનું,	કર્મ તજ્યા તે શીવ. ૩૨
નીર ખીર તલ તેલ સમ,	કરમે આહ્યો જીવ;
નિર્જરતાં એ કર્મને,	શુદ્ધ આત્મા છે શીવ. ૩૩

જીવ શીવ થાયે ખરો,
 કર્મ ખીજને બાળીઆં,
 નીચ કર્મ કરી જીવને,
 શુદ્ધ ચારીત્રને સેવતાં,
 કાળ કર્મની બાળમાં,
 અશુભ શુભ કર્મે લહે,
 કર્મ બાંધીએ જે રસે,
 તરત ન આવે ઉદયમાં,
 લહે ન ભાગ સનેહી સગું,
 ટળવળી સહુ તાકી રહે,
 કરમને શરમ નહિ જરા,
 શુભાશુભના ઉદયથી,
 ચડે પડે છે આત્મા,
 અવર ન કરનારો ગણો,
 શુભ કરવું નિજ હાથમાં,
 છે નિશ્ચય તો અવરને,
 નિજ શુભાશુભ નિજથી,
 એ નિશ્ચય આબ્યા વિના,

શીવ ન થાયે જીવ,
 શુદ્ધ આત્મા છે શીવ. ૩૪
 નરકે પાડે રીવ;
 મેગવશે સુખ શીવ. ૩૫
 સપડાયા ત્રીલોક;
 અધો ઉર્ધ્વ આ લોક. ૩૬
 તેજ રસે વેદાય;
 તોપણ સાથે થાય. ૩૭
 સહે અસાતા આપ;
 હોએ હેત અમાપ. ૩૮
 કર તેવુંજ પમાય;
 ચડતી પડતી થાય. ૩૯
 શુભાશુભ સંયોગ;
 સંપત્તિ યોગવિયોગ. ૪૦
 અશુભનું પણ એમ.
 દોષ આપીએ કેમ. ૪૧
 પર પ્રેરક નહિ લેશ;
 ટળે ન આત્મ કલેષ. ૪૨

थाप स्थान अठारथी, आंधे प्राणी पाप; ४३
 व्यासी प्रकारे लोगवे, यामे दुःख अभाप. ४४
 आत्मरूप तणावमां, आश्रव कीच लराय;
 वृडे घटनाणां मोडणां, नित्य वधारो थाय. ४४
 शेडो संवर द्वारथी, करी वृत्त पत्र्यभाणु;
 घडी उलेचो कीचने, करी तपस्या ध्यान. ४
 सुरव पुन्य प्रतापथी, मज्यो मनुष्या हेड;
 हीर्घायु साथे वणी, नैन धर्म शुं नेड. ४
 थाप अठारे पर डरी, जताय राग ने द्वेष;
 विषय कषाय करी परा, सेवो शील डमेश. ४७
 यरिग्रह मेणव्यो प्रीतथी, नाण्युं पामीश सुण;
 लोगवतां लारे पडयो, सल्युं दुःख दुःख दुःख. ४
 छोडयो ते छुटे नडि, आत्म शक्ति छे हीन;
 कोम नेउजेो भणहीओ, डांकयो डावे हीन. ४
 आ लव तो ओणे गयो, छे अंतर उदास;
 सो पर लव शुल नेगनी, आशानो अवकाश. ५०
 दान शीयण तप लाव ओ, लव तरवानां नाव;
 अष्ट कर्म अरी दण तण्णो, तडां न शिवे दान. १

કરમ સમો જગમાં નહિ,
 પણ બળીયો થઈ આતમા,
 નાખે નર્ક નીગોદમાં,
 તેને જીત્યા જે પ્રભુ,
 સંચિત પુરવ ભવ તણા,
 આ ભવનો પણ દેખીએ,
 આ ભવ શુભ કરાણી કરી,
 ઉદય પુર્વના અશુભમાં,
 મળશે એ કૃણ આગળે,
 વૃક્ષ વાવો સંભાળથી,
 રચ્યા પચ્યા રહી પાપમાં,
 પુર્વ ઉદય એ ભોગવી,
 નવ નિધિ ભરપૂર ભર્યા,
 કાળાંતરે કમી થતાં,
 તાવી ટીપી કાપીને,
 સોનું સજ્જન શોભશે,
 સુખ દુઃખમાં હરખે રૂએ,
 જ્ઞાની સમ ચિત્તથી રહે,

કરતા હરતા કોય;
 જીતે તેને તોય. પર
 આપે સ્વર્ગ વિમાન;
 વંદું સિદ્ધ ભગવાન. પૃ
 ઉદય રસ આપે ખાસ;
 ઉદય આવતો ભાસ. પૃ
 શુભ કૃણ માગે કોય;
 શુભ કૃણ કયાંથી હોય. પૃ
 શંકા કરો ન કોય;
 તકે કૃણે છે તોય. પૃ
 ભોગવે સુખ ભરપૂર;
 જાશે જ્યાં જમપુર. પૃ
 ભરતી નહિ છે ઝોટ;
 અંત આવશે ખોટ. પૃ
 કરે કસોટી કર્મ;
 ધારીને નિજ ધર્મ. પૃ
 અજ્ઞાની આચાર;
 આણી કર્મ વિચાર. ૬૦

ચુરણ ચુરવ પૂન્યથી, મળ્યો મનુષ્યા દેહ; ૬૨
 રૂપ સ્વરૂપ ન ઝોળખ્યું, પર પુદ્ગળ પર નેહ. ૬૩
 અન્યગતિમાં તો અતી, હતો અંધ અજ્ઞાન; ૬૪
 મનુષ્યપણું પામ્યા છતાં, જોવું ન થટે ભાન. ૬૫
 કુટક ખારૂં આજ છે, મળે ન વારમવાર; ૬૬
 માટે મનુષ્યા દેહને, ગણ્યો સારમાં સાર. ૬૭
 અતુર આત્મ ચેતી ગયા, તોડી કર્મ જન્તળ; ૬૮
 મોક્ષ મંદીરે સ્થિર થયા, છોડી ભવ ઘટમાળ. ૬૯
 વિયોગ સંયોગ ઈષ્ટ દુષ્ટનો, વ્યાધિ માન અપમાન; ૭૦
 દેહ શુભાશુભ સરવ છે, કર્મ તણું નિદાન. ૭૧
 ઉદય કરમ રસ આવતાં, લોગવને સમ ભાવ; ૭૨
 વિલાપથી વધતો થશે, કર્મ કીચ જમાવ. ૭૩
 કરમ રૂણ અતિ આકરૂં, જોગ મળ્યો છે આજ; ૭૪
 નિરજરને સમ ભાવથી, મળશે સખળી સાજ. ૭૫
 વિચિત્રતા સહુ કર્મની, કહ્યો એજ સંસાર; ૭૬
 ચુષ્પથંદ એ કાપવા, કરવો ઘટે વિચાર. ૭૭

ઉપદેશીક દોહરા.

- માર્ગાનુસારી કર્યો, આપી બોધ અનુપ;
 નમસ્કાર ત્રીકાળ હો, સદ્ગુરૂ આત્મ સ્વરૂપ. ૧
- સંસાર સસુદ્રથી તારવા, નીવડે નાવા રૂપ;
 સરણુ ગ્રહું સદ્ગુરૂ તણું, જે છે આત્મ સ્વરૂપ. ૨
- જન્મ જરા મૃત્યુ નહિ, શોક દુઃખ નહિ રોગ;
 નિત્ય અવિનાશી અભય છે, નમું સુખ સંબોગ. ૩
- અદિશ્વર આદિ લઈ, વર્ધમાન ભગવાન;
 તર્કા સ્વભાવે ભાવતાં, ધરીએ તેહીજ ધ્યાન. ૪
- નમું ગણધર આચાર્યને, અવર મુનિશ્વર વૃંદ;
 ઉપદેશ્યા ઉપદેશ જે, અનુભવતાં આનંદ. ૫
- અહોનિશ નમું પરમાત્મને, સ્વાત્મા નિશ્ચય તેહ;
 સત્યિદ આનંદ રૂપ છે, અલખ અમુર્તિ જેહ. ૬
- અનંત જ્ઞાન દર્શન અનંત, અનંત વિર્યા પ્રકાશ;
 નિશ્ચય નયથી આત્મા, છે પરમાત્મા ખાસ. ૭
- અરિહંત સિદ્ધ આચાર્યજી, ઉવગાય સહુ સાધ;
 પુંચ પદ પરમેષ્ટિ ભજો, ધોવા પાપ અગાધ. ૮

આર આઠ છત્રીસ ને,	પચીસ સત્તાવીશ સાર;
અ, સિ, આ, ઉ, સા, દેવના,	ગુણ ગણું ત્રીકાળ. ૯
અરિહંત સિદ્ધને સદા,	માનું છું હું દેવ;
શુર નિર્ઘંથની સર્વથા,	કરું ભાવથી સેવ. ૧૦
યતિ ધર્મ દશ અંગે કહ્યો,	દયામય વસ્તુ સ્વરૂપ;
રત્ન ત્રય ધર્મ સેવું સદા,	જે છે આતમ રૂપ. ૧૧
દેવ શુરને ધર્મનું,	સમજી ખરું સ્વરૂપ;
વિષ્ણુ અતીચારે વર્તાવું,	એ સમકીર્ત અનુપ. ૧
ચરિત્રહ મોહ માયા તણી,	તજ તજ જીવ જંજાળ;
આત્મ તત્ત્વ અભ્યાસ જે,	સર્વ સિદ્ધિ દાતાર. ૧
આત્મજ્ઞાન ઉપજાવવા,	સર્વ સુત્ર ઉદ્દેશ;
ક્રીયા યજ્ઞ કહી તે કારણે,	છતાં જ્ઞાન ન લેશ ૧
જ્ઞાન મેળવવા કારણે,	કરવી ક્રીયા જરૂર;
ચારીત્ર વિષુ સિદ્ધિ નથી,	જ્ઞાન ન ઉપજે ઉર. ૧
યજ્ઞ ક્રીયા જડપણે કરી,	દીધું ન જ્ઞાનમાં ધ્યાન;
ધાર્યો પંથ કાપે નહિ,	ઘણી ખેલ સમાન. ૧
સુસ્ક જ્ઞાન કથને કરી,	કરે ન ક્રીયા કોય;
નહિ ઘરનો કે ઘાટનો,	ઘોળી શ્વાન સમજેય. ૧

આતમ બોધ થયા વિના,
 મોક્ષ હેતુ મન હોય તો,
 આતમ જ્ઞાન પમાડવા,
 છતાં ન આતમ ઓળખ્યો,
 દેવ ગુરૂ ને ધરમનું,
 અંતરથી આરાધીએ,
 મારગ સુચવે મોક્ષને,
 યથાર્થ બોધ એને કહો,
 મૃગ મૃગમદને શોધતો,
 નિશ્ચય છે નિજ નાલીમાં,
 નિશ્ચય અવિનાશી નિજમાં,
 તિરથ યાત્રા સ્થાનમાં,
 વિષયાનુરાગી નિત્ય નવા,
 વિરક્ત થાય જો વિષયથી,
 સર્વ સુત્રનો સાર તે,
 રાગ દ્વેષ વિણુ આતમા,
 દેખ નરક સમ દેહ આ,
 છતાં એજ ઉપકારી છે,

ક્રીયાશું આવે કામ;
 ઓળખ આતમરામ. ૧૮
 કહ્યાં સુત્ર સિદ્ધાંત;
 કરે ક્રીયા એકાંત. ૧૯
 સમજી ખરું સ્વરૂપ;
 જે સમકીત અનુપ. ૨૦
 વિદ્યા તેજ વળાણુ;
 આપે પદ નિરવાણુ. ૨૧
 રખડે રાનો રાન;
 તેનું ન મળે ભાન. ૨૨
 તેથી રહી અજ્ઞાન;
 શોધે છે ભગવાન. ૨૩
 બાંધે કર્મના બાંધ;
 છોડે કર્મ સંબંધ. ૨૪
 સમભાવમાં માય;
 સમભાવી કહેવાય. ૨૫
 દોષ દરદનું ધામ;
 ભગવા આતમ રામ. ૨૬

तृष्णा ते त्रीशोक्ते,
 तेह त्यागतां लवने,
 तप त्रिद्विहारी आदिथी,
 यामे स्वर्ग के संपदा,
 यषु जे ते तपस्या वडे,
 खेदी लव जन्तजने;
 अडिंसा स्वर्ग हातार छे,
 भरने निज समानता,
 सगां संधी स्नेहीयो,
 प्रीत देखाडी पण पणे,
 विधुर दशाखे वरतवा,
 परम उदयमां पावटे,
 वृद्ध वये विधुर थवुं,
 अशुल उदयमां पालटे,
 जनमीने भरवुं नक्की,
 उंच गतिमां उपजवुं,
 जे तृष्णा छीये नडि,
 तो नर भर ते समजवो,

रणडावे गति चार;
 मुक्त थतां शी वार. २७
 मरे करी काय क्लेष;
 अथी न आश विशेष. २८
 पंडीत भरषु मराय;
 पंचम गति पमाय. २९
 मोक्ष हाता पषु तेड;
 राजो मन वय देड. ३०
 प्रेरे पाप स्थान;
 जने शत्रु समान. ३१
 आण्यो उदय आज;
 कर लव आतम काज. ३२
 उदय अशुभ गणाय;
 आतम साधन थाय. ३३
 आयुष्य कर्मने अंत;
 जे दुर्जल अत्यंत. ३४
 मजतां धन अधिकार;
 रंक तण्ण सरदार. ३५

न
 यु

ઉદ્યાધિન સંતોષથી, ચલવે જે વ્યવહાર; ૧
 નિતિ માર્ગ લોપે નહિ, તે શ્રીમાન ઉદાર. ૩૬
 આસા મૃગ જળ જાણવી, નિરાસા અમૃત પાન; ૨
 તૃષ્ણા દેહ દમન કરે, સુખ સંતોષ સુકાન. ૩૭
 તણ દુરાસા દીનતા, સજી સીલ સંતોષ; ૩
 ભજી અહોનિશ આતમા, કરો કર્મ નિરદોષ. ૩૮
 ઇચ્છે અમિય કીરણ થકી, સીતળ કરવા ચંદ; ૪
 છતાં વિંટાએ વાદળે, કંગા જણાયે મંદ. ૩૯
 યર અવગુણ પ્રકાશવા, તે સહુને મન સહેલ; ૪૦
 નિજ દુર્ગુણ નિહાળવા, એ યનવું મુશ્કેલ. ૪૦
 નિજ અવગુણને નીરાખી, તજવા રાખી ટેક; ૪૧
 યર સદ્ગુણ પ્રગટ કરે, તે તો લાખે એક. ૪૧
 અવગુણ ગણવા સહેલ છે, ગુણ ગણવા મુશ્કેલ; ૪૨
 કીડી કાણાં શોધશે, હોય હેમના મહેલ. ૪૨
 સ્વભાવથી સમ રહે, એ તો નવડો એક; ૪૩
 ગુણો ગમે તે અંકથી, સરવાળે નવ છેક. ૪૩
 તેમજ સંતો સરવદા, રહે સ્વભાવે લીન; ૪૪
 હાની વૃદ્ધિ ન લેખવે, ગણે કર્મ આધિન. ૪૪

જો અંક લે આઠને,	ગુણતાં ઘટે	અકેક;
લેમજ હરજન જાણવો,	રાજે નહિ નિજ	ટેક. ૪૫
નિજ નિજ કારજમાં કુશળ,	એવો સહુ સંસાર;	
થર કારણ પીડા સહે,	તે વીરલા નરનાર.	૪૬
કહિણી રહિણી સુજનની,	સુખરૂપ સૌને હોય;	
સરલપણું ચુકે નહિ,	આવરણુ આવે તોય.	૪૭
દેખી આચરણુ આપણું,	ભૂત્રે સંતતિ ભાન;	
તે પણ તેવું આચરી,	કરે કૃપા અંપમાન.	૪૮
માછળની પ્રજા સહુ,	વરતે વિનય સહિત;	
આલાસ એવો પાડીએ,	નિવડે તોજ વનીત.	૪૯
અતિથિ આવે આંગણે,	દેવું આદર માન;	
ધન્ય લાગ્ય ગણી આપીએ,	ધર સંપત્ત અનપાત.	૫૦
કુટુંબ કૃપા વત્સલ થવું,	સ્વામિ વત્સલ જ્ઞેય;	
નાત દેશ સેવા પછી,	અધિકી સત્તા હોય.	૫૧
જે જે સ્થાને યોગ્ય તે,	નર શોભે તે સ્થાન;	
સ્થાન ભ્રષ્ટ શોભે નહિ,	દહીએ અધિકું માન.	૫૨
દાંત કેશ નળ કે નરો,	સ્વ સ્થાનેજ સોહાય;	
અલગ ઉચ સ્થાને ધરો,	પણુ પદભ્રષ્ટ જણાય.	૫૩

સાર ઝોજથી સોંપીયે,
 ઉમંગે આગળ પડી,
 નેત્ર દોષે દેખીયે,
 નિર્મળ નેત્રે નિરખતા,
 સુણેલ ઝોટું સો વસા,
 એક તરપ્રી આધાર વિણ,
 સાઠે વરસ શ્રવણ કર્યું,
 કહેણી રહેણી લિખતા,
 દયા દાને દંભી નહિ,
 વરતે સરલ સ્વભાવથી,
 લિંગ લેહમાં આંતરો,
 અભ્યંતર સમ અંત લગી,
 ઈન્દ્રિય વશ વરતાય તો,
 વશ વરતાવ્યે ખંતથી,
 દયા શીલ સંતોષ ને,
 શોભા પામે સર્વથા,
 ઉલટા ગુણ હોય એ થકી,
 આ ભવ અપકિર્તિ લહે,

અધિકાર અનુસાર,
 શોભાવે વ્યવહાર. ૫૪
 વિપરીત આભાશ,
 યથા તથ્ય પ્રકાશ. ૫૫
 દીઠેલ વસવા વીશ,
 શી શિક્ષા શી રીત. ૫૬
 આન્યું ન આતમ જ્ઞાન,
 તે ઠગ ખગ સમાન. ૫૭
 કહેણી રહેણી એક,
 જ્ઞાન વિજ્ઞાન વિવેક. ૫૮
 એ તો બાહ્યાચાર,
 એજ ખરો ઉદ્ધાર. ૫૯
 બને શત્રુ મહાન,
 તો તે મિત્ર સમાન. ૬૦
 નિતિ નિપુણ નર જોડ,
 સદ્ગતિ પામે તેડ. ૬૧
 ભરે ભૂમિ પર ભાર,
 પર ભવ દુઃખ અપાર. ૬૨

કુચુર કુદેવ કુધર્મનો,
 સુચુર સુદેવ સુધર્મમાં,
 પાપ સ્થાન સેવ્યાં સહુ,
 નવ તત્વ નવિ ઓળખ્યાં,
 લક્ષ ચોરાસી જીવની,
 વિવિધ વેર વસાવીયાં,
 કાયા કંચન કામની,
 મહીરા સમ સંસારીને,
 કાયા કંચન કામની,
 તે તજવાથી સહજમાં,
 કાયા કંચન કામની,
 આદ્ય અલ્પંતર ત્યાગી તે,
 નારી નરકનું ખારણું,
 સતિ શિરોમણિ થઈ ઘણી,
 ચયું થાય છે ને થશે,
 તેને તે શો ઝારતો,
 ભુતકાળમાં લોગવે,
 ભવિષ્યમાં લય નવિ રહે,

કર્યાં ભરોસો ખાસ;
 રાખ્યું દીલ ઉદાસ. ૬૩
 નિશ્ચય રહી નચિંત;
 ખટ દ્રવ્ય ખચીત. ૬૪
 પડી નહિ પિછાન;
 રહી અંત અજ્ઞાન. ૬૫
 મહા મોહનાં સ્થાન;
 કરે ખહુ જ્વલાન. ૬૬
 મહા મોહનાં સ્થાન;
 ઉપજે આતમ જ્ઞાન. ૬૭
 મહા મોહનાં સ્થાન;
 મહા લાગ્ય લગવાન. ૬૮
 એ એકાંત ન હોય;
 ગઈ મુક્તિએ જોય. ૬૯
 ઉદય કર્મ આધાર;
 અચળ નિયમ નિર્ધાર. ૭૦
 વર્તમાન સમભાવ;
 એવો કર્મ પ્રભાવ. ૭૧

વિચારપુર્વક જે રસે,
 કર્મ બંધાયે તે રસે,
 અજ્ઞાણતાં સંલેગમાં,
 યસ્તાવાથી પતી રહે,
 જળ ભૂમિ એકજ છતાં,
 દિહલિજ એક રસનાં નહિ,
 વાણી શ્રી વિતરાગની,
 યાત્રતા લેદે મત પડી,
 ગચ્છ ગચ્છાંતર મમતમાં,
 રાગ દ્રેષ્ટ રમંખાણુમાં,
 ગચ્છ ગતાંતર મોહને,
 મૂળ માર્ગ આરાધવો,
 ગચ્છ કદાચહ કરી પરા,
 બંધ શ્રદ્ધા હઠવાદથી,
 જૈન ધર્મ જાણ્યો કહે,
 મે જાણ્યામાં માલ શો?
 એકજ મૂળથી ઉપજ્યાં,
 થક જોશો તે એક છે,

વરતન કોય વિરહ;
 લોગવવાં આણી શુદ્ધ. ૭૨
 થયું વરતન વિરહ;
 કહ્યું વિતરાગી શુદ્ધ. ૭૩
 સ્વભાવને અનુસાર;
 યાત્ર અપાત્ર વિચાર. ૭૪
 અવિરહ શુદ્ધ આચાર;
 પરવર્યા ગચ્છ અપાર. ૭૫
 મૂડી મારગ મૂળ;
 કરી કરણી પ્રતિકૂળ. ૭૬
 તજ સજ સમભાવ;
 એજ મોક્ષને દાવ. ૭૭
 ધરો સનાતન ધર્મ;
 બંધાયે છે કર્મ. ૭૮
 મમતામાં સુંઝાય;
 મૂળગી સુડી જાય. ૭૯
 ડાળાં ડાળી અનેક;
 વીર પ્રભુથી નેક. ૮૦

पर्युःसृष्टुनां पर्व ते, निवृत्ति निधान;
 ये अवसर प्रवृत्तिने, हेतुं न धटे स्थान. ८१
 वेर विरोधथी वीरभी, मैत्री लावनेो दाव;
 यडी अवणीये आतमा, पुणे पर्वनेो लाव. ८२
 स्थानक स्थानं निवृत्तिनुं, धरवाने शुभ ध्यान;
 कथाय विकथा त्यां नडि, थवा नाणवुं लान. ८३
 तल्लो द्वाष निर्दोष थवा, पर्व आदोयणु आग;
 आनपान पट सुषणु, नाच्यो नुच्यो समाज. ८४
 हेभा हेभी इडीयो, गृहीये जे विपरीत;
 पुष्यं पर्व अधिराजनेो, मणे न लाभ जरीत. ८५
 प्रतिकमलुना हेतुओ, समजणुथी सचराय;
 पुर्व द्वाष दुरे जठ, आश्रव ओछो थाय. ८६
 संवत्सरनी आणरे, लेवुं जभा उधार;
 सरवैयुं संलाणीने, सुधारयो व्यवहार. ८७
 यति धर्मोदय अंतरे, पडे प्रतिला जहार;
 वचनेो ते वितरागनां, उतारे लव पार. ८८
 धर्मोदय अंतर नडि, जोधे जोध विशेष;
 ते वंताना वचनथी, टणे न आत्म कलेप. ८९

प्रतिगिणं पडी हृदयमां,	प्रसरे रंग प्रदेश;
तोत्र श्रवण साक्ष्यता,	नडि तो लाल न देश. ६०
चित्त शान्ति आतुरता,	वकता प्रत्ये लाव;
आता डोय ओ लक्षणे,	लडे श्रवणनो लाव. ६१
चित्त शान्ति इयी हृदयमां,	सिद्धांत सुणुवा लाव;
मनन करीने आचरे,	तोत्र श्रवणनो लाव. ६२
चित्त अंयण इयी नडिं,	अंतर रडे अलाव;
श्रवण करी शुं भेगवे,	मनुष्यपशुनो लाव. ६३
दण्युं वट्टुं वांय्युं सुणुयुं,	सक्षण वरतने थाय;
विना ओडे शुन्यनी,	किंमत केम गशाय ? ६४
दण्युं वट्टुं वांय्युं सुणुयुं,	सक्षण वरतने थाय;
पुष्पचंद्र वरतन विना,	मिथ्या भडेनत जाय. ६५

टोडरो.

आत्मा मुनि लडित शशि, विजया दशमी नेक;
 पुष्प अंथ पूरण थयो, पयु संक्षेपे छेक.

શ્રી વીશ વિહરમાન ભગવાનને નમસ્કાર

મનહર છંદ.

દીર	બુગમંદીર,	બાહુ સુબાહુ સુબત,
વયંમ	રીખવાનંદ,	પ્રભુ ખ્યારા બાણીએ.
નંત	વીરજનાથ,	સુરને વિશાળ પ્રભુ,
જધર	ચંદ્રાનન,	ચંદ્રબાહુ બાણીએ.
યંગદેવ	હશ્વર,	નેમ નેમેશ્વર સ્વામી,
ર સેન	મહાસદ્ર,	પ્રભુજી પ્રમાણીએ.
થવંતા	દેવજશ,	વીશમા અભૂત વીર્ય,
વી દેહ	ક્ષેત્ર વિષે,	વાંડં ગુણુ બાણીએ.

શ્રી વંતમાન ચોવીસીને નમસ્કાર

મનહર છંદ.

ખવ અભૂત	અને,	સંલવ અલીતંદન,
મતિ	પદમપ્રભ,	સુપારથ સ્વામી છે.
દ્રપ્રભ	શ્રી સુવિધિ,	શીતળ ને અંશનાથ,
સુ પુજ્ય	શ્રી વિમળ,	શીવગત ગામી છે.

અનંત ધરમ શાન્તિ, કુંથુ અર મલિનાથ,
 શ્રી મુનિસુવૃત્ત સ્વામી, અચલ આરામી છે.
 તમી નેમ પાર્શ્વનાથ, ચોવીસમા વર્ધમાન,
 ત્રીકરણ શુદ્ધે વાંડ, એ અંતર જામી છે.

પડિકમાણુ વિષે સમ્રાય.

(જાથ છે જગત આદ્યું—એ રાગ)

પડિકમાણું કરીને રે હું મારી માણું (એ ટેક)
 શ્રી શ્રી મંદીર સ્વામી, આપ છે અંતર જામી,
 વાંડ છું હું શીર નામી રે, મંદીરસ્વામી—પડિકમાણું કરીને રે
 સામાયક શુદ્ધ કરી, સમભાવ ચિત્તે ધરી,
 નિર્જરા નિરજરી રે, મંદીર સ્વામી—પડિકમાણું રે
 ચોવીસથો સ્તત્વી કરી, વંદણા ભાવથી ભરી,
 સમકીર્ત શુદ્ધ ધરી રે, મંદીર સ્વામી—પડિકમાણું રે
 ખાર વૃત્ત તણા દોષ, આજોવ્યા મેં નિરદોષ,
 અતિ કરી અક્રશોષ રે, મંદીર સ્વામી—પડિકમાણું રે
 અઠારે પાપનાં સ્થાન, તેનું પણ થયું ભાન,
 રખડાવે છે નિદાન રે, મંદીર સ્વામી—પડિકમાણું રે

મિથ્યાત્વને પરં કરી, બહુયાજૂના આઠે અરી,
 સુ સરણા ચાર ધરી રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણું.૫
 ચઠિદ સ્થાનકે જીવ, વિરાધું છું હું સદૈવ,
 તજી ભાન જીવા જીવ રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણું.૬
 સમણ સુત્ર વિચાર્યું, ધાર્યા જેવું તે મેં ધાર્યું,
 છાંડ્યા જેવાને નકાર્યું રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણું.૭
 અરિહંત સિદ્ધ સંત, ગુરૂ આદિ ભગવંત,
 સ્ખમાવ્યા ધરીને ગંત રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણું.૮
 ઝીજી જીવ તણા જથથા, હુણ્યા હુણ્યાવા મેં વૃથા,
 માફ માગી છે સર્વથારે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણું.૯
 ચર્મ ધ્યાન ધર્યું ચિત્ત, લાગી ઠાઉસગે પ્રીત,
 રાકી ઈંદ્રિયો અજીત રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણું.૧૦
 આહાર સંસા અનાહી, અહો રાત્રીએ સવાહી;
 પચણાણે મરીયાહી રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણું. ૧૧
 સમે સમે ગાંધું પાપ, બાણી દેખી રહ્યા આપ;
 માફ કરો જપું બપ રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણું. ૧૨
 આવશ્યક અહોનિશ, ફરજ શ્રાવક શિષ્ય;
 ઉપદેશ્યું જગદીશ રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણું. ૧૩

મંદીર સ્વામી-પડીકમણું.૫
 મંદીર સ્વામી-પડીકમણું.૬
 મંદીર સ્વામી-પડીકમણું.૭
 મંદીર સ્વામી-પડીકમણું.૮
 મંદીર સ્વામી-પડીકમણું.૯
 મંદીર સ્વામી-પડીકમણું.૧૦
 મંદીર સ્વામી-પડીકમણું. ૧૧
 મંદીર સ્વામી-પડીકમણું. ૧૨
 મંદીર સ્વામી-પડીકમણું. ૧૩

આજ સુધી દોષ થયા, શુભ ભાવે આજોવીયા; ૧૪
 ક્ષમા માગું હોય રહ્યા રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમાણું.
 હવે નહિ થવા દોષ, ચિત્તમાં રાખું અંકોષ; ૧૫
 યુષ્પચંદને સંતોષ રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમાણું.

અંત સમયની ક્ષમાપના.

જાય છે જગત ચાલ્યું-એ રાગ.

જગતના જીવ પાસેરે,	હું માપી માગું-(એ ટેક.)	
ત્રસને સ્થાવર જીવ,	હણા હણાવ્યા સદૈવ;	
કંઈકને પડાવી રીવ રે,	હું માપી માગું.	૧
અનાદિ ભવ આસરે,	સંજંધે જોડાઈ ખરે;	
વેર તો વસાવ્યાં અરેરે,	હું માપી માગું.	૨
ચોનિ જે લક્ષ ચોરાસી,	અવતરીને અલ્યાસી;	
નારકીયી ગયો ત્રાશીરે,	હું માપી માગું.	૩
વિકલ ઈંદ્રિય સુધી,	કીધાં પાપ વિશુ બુદ્ધિ;	
આલોચણુથી વિશુદ્ધિ રે,	હું માપી માગું.	૪
તિર્થંચ પંચેંદ્રિપણુ,	સમગ્ર અમળ હણુ;	
કીધી હિંસા કૂરપણુ રે,	હું માપી માગું.	

મનુષ્ય જનમે આજ,	મળી ધરમની સાજ;	
સત્ય જે જૈની સમાજરે,	હું માપી માણું.	
વર્ષ જેંતાલીસ સુધી,	કેજવી જાણોની બુદ્ધિ;	
નીતિ સાથે જ્ઞાન વૃદ્ધિરે,	હું માપી માણું.	
ડર રાખી જગદીશ,	કરી શિક્ષા તજી રીસ;	૮
માફ કરો સહુ શિષ્ય રે,	હું માપી માણું.	
સગાં સંબંધી સંઘાતે,	મત ભેદ વાત વાતે;	૯
વિરોધ પાડ્યા મેં જાતેરે,	હું માપી માણું.	
સંબંધમાં આવ્યા કોય,	અત્ય જનો હુલ્યા હોય;	૧૦
ક્ષમા સહુ કરો તોય રે,	હું માપી માણું.	
ગચ્છ ગચ્છાંતર પ્રત્યે,	વસ્ત્યો વિરૂદ્ધ મતે;	૧૧
જાણી મારા દોષ સત્ય રે,	હું માપી માણું.	
અશુભ આશ્રવ સ્થાન,	સેવ્યા જે જે તજી ભાન;	૧૨
આલોચણુને નિદાન રે,	હું માપી માણું.	
આયુષ્યના અંત સુધી,	કરી કરમની વૃદ્ધિ;	૧૩
કરવા તેની વિશુદ્ધિ રે,	હું માપી માણું.	
દરદ અસાધ્ય જાણી,	કરવા છેલ્લી કમાણી;	૧૪
શુદ્ધ ભાવદીસ આણી રે,	હું માપી માણું.	

સકામ મરણ સારું, સમાધિ બોધ વિચારું; ૧૫
 શુભ ગતિનું જે બારું રે, હું મારી માથું. ૧૫
 ભવો ભવ તથા દોષ, આલોચ્યા તજીને રોષ,
 પુંપચંદને સંતોષ રે, હું મારી માથું. ૧૬

દોહરો.

ઉદય વેદની કર્મનો, વેદો એં સમભાવ;
 થઈ નિર્જરા આ સમે, આયુષ્ય કર્મ પ્રભાવ. ૧૭

શ્રી મહાવીર પ્રભુની આરતી.

શ્રી સિદ્ધારથ નંદન, પ્રભુશ્રી ત્રીશક્તાના જાયા,
 પ્રભુ શ્રી ત્રીશક્તાના જાયા,
 શુભ નિપત્ત દીધું નામ પ્રભુનું,

(૨) વર્દીમાન સુખદાયક.
 જય જય જય મહાવીર. (૧)

બાળપણે ગિરિરાજ ચગાવી, સુરપતિ સમજાયા,
 પ્રભુ સુરપતિ સમજાયા,
 અતુલ્ય બળ પ્રભુ જન્મથી પાસ્યા,

(૨) કંચન વર કાયા,
જય જય જય મહાવીર. (૨)

સિંહ લંછન સુકોમળ અંગો, હાંસે હુલરાયા,
પ્રભુ હાંસે હુલરાયા,
દેવ દેવી દરશણથી રીઝી,
(૨) બહુ વિધિ ગુણ ગાયા,
જય જય જય મહાવીર. (૨)

ગાળ કીડામાં દેવ હરાવી, ભૂતળમાં આપે,
પ્રભુ ભૂતળમાં આપે,
ઉંદ્ર વચન પ્રમાણુ કરી દેવ,
(૨) મહાવીર પદ આપે,
જય જય જય મહાવીર.

ત્રીશંવરસ ગૃહવાસ વિલસતાં, અલિત્રહ ઉર આવે,
પ્રભુ અલિત્રહ ઉર આવે,
અવત્સર દધ દાન પ્રભુજી,

(૨) સંયમ ચિત્ત લાવે.

જય જય જય મહાવીર. (૫)

અડગ ધ્યાનથી ઉચ્ચ તપસ્યા, વરસ ધાર વિચરે,

પ્રભુજી વરસ ધાર વિચરે,

કર્મ અરિને જીતી,

(૨) દેવળ જ્ઞાન વરે.

જય જય જય મહાવીર. (૬)

કૌંદ્રાદિક સદુ દેવ મળીને, કલ્યાણીક ઉગવે,

પ્રભુનું કલ્યાણીક ઉગવે,

નાદ દશ દિશે,

(૨) વધામણું સૂચવે.

જય જય જય મહાવીર. (૭)

તે જડીત સિંહાસન, આમ છત્ર ધારી,

પ્રભુજી આમ છત્ર ધારી,

અતિશયની એ શોભા,
 (૨) પ્રભુતો નિશ્ચય અણુગારી.
 જય જય જય મહાવીર.

ત્રિગરા ગઠની રચના, સમવસરણ શોભે,
 પ્રભુજી સમવસરણ શોભે,
 અતિશય પ્રભુતા દેખી,
 (૨) ચિત્ત દર્શન લોભે.
 જય જય જય મહાવીર.

અમિય રસ વાણીથી, ઉપદેશ પ્રભુ આપે,
 ઉપદેશ પ્રભુ આપે,
 ભવિને પાત્ર પ્રમાણે,
 (૨) ચારિત્રમાં સ્થાપે.
 જય જય જય મહાવીર.

અતુર્વિધ તિર્થ સ્થાપીને, અહિંસા વર્તાવે,
 પ્રભુજી અહિંસા વર્તાવે,

૩૫૨

લેદ ... ટાળીને,

(૨) સમભાવ સમજાવે,

જય જય જય મહાવીર. (૧૧)

સિદ્ધાંત પ્રકાશી, આત્મજ્ઞાન આપે,

પ્રભુ આત્મ જ્ઞાન આપે,

અનુભવતાં ભવિષ્યન,

(૨) કર્મોને કાપે.

જય જય જય મહાવીર. (૧૨)

ધર જૌતમ પ્રખદામાં ઝીલે, ઉપદેશ વાણી,

પ્રભુની ઉપદેશ વાણી,

સૌની ભાષામાં સમજે,

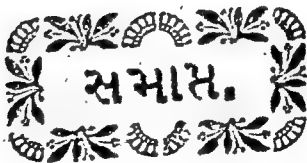
(૨) દેવ મનુષ્ય પ્રાણી.

જય જય જય મહાવીર. (૧૩)

૨ વર્ષની વયમાં પાળી, પ્રવજ્યાં જહેંતાલી,

પાળી પ્રવજ્યાં જહેંતાલી,

શોધ મંદીરે પહોંચ્યા,
 (૨) દિન શુભ દીવાળી,
 જય જય જય મહાવીર. (૧)
 વીર પ્રભુની આરતી આ, જે ભાવે ગાશે,
 ભવિ જે ભાવે ગાશે,
 યુધ્ધ પ્રભુ પરતાપે,
 (૨) સુખ સંપત્તિ થાશે,
 જય જય જય મહાવીર. (૧)



॥ अथ ऋजनावली लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरिहंत सिद्ध साधु नमुं, निचो
शिस निवाय ॥ ऋजन कथुं मै प्रेमसुं,
बुंवा देउं वणाय ॥ १ ॥ पंचपद ध्याउं
सदा, गुणसहु कह्या न जाय ॥ थोडासा
प्रगट करू, ते सुणजो चितलाय ॥ २ ॥

॥ अथ चौवीस जिन स्तवन लिख्यते ॥

मतजुलो हरीका नाम, जपो तुम ईश्व-
रकी माला ॥ एदेसी ॥ तुम जपो प्रजुका
नाम, जप्यासे कटै कर्मजाला ॥ ए आं. ॥
आदि अजित संभव अग्निनंदन, सुमति
सुमत धारा ॥ कोइ पदम सुपार्थ, चन्द्र

(२)

सुबोध, जिन, सितल सुखकारा ॥ सी. ॥
जिनंदजी, ॥ सी० ॥ तु० ॥ १ ॥
श्रेयांस बासपूज्य, विमलही कृपाला ॥
कोइ अनंत धर्म सान्ती कुंथु अरी,
स्याम मेरे दयाला ॥ स्याम. ॥ जि. ॥
॥ स्याम. ॥ तु. ॥ २ ॥ मल्ली सुनी-
सुव्रत नमिजिन, रिष्टनेम निहाला ॥ पार्श्व
प्रभु और वृद्धमानकुं, ध्याय मनां महाला
॥ ध्याय. ॥ जि. ॥ तु. ॥ ३ ॥ चोवीस जि-
नको नित्य जेसे, होगा निसतारा ॥
कोइ लिखमो पैय जरणे करजोडी, चाकर
चर्णारा ॥ चा. ॥ जि. ॥ चा ॥ तु. ॥ ४ ॥ इति ॥
॥ अथ आदिजिन स्तवन ॥ राग प्रजाती ॥

ओर जयो अब जाग प्राणी, आदि
 जिनंदजीको रटन करो ॥ आदि नाम
 आदेस्वर दाता, रिखव जिनंदन नाम
 खरो ॥ ओ. ॥ मरुदेव माय नाचनों नंदन,
 तिण कूखे अवतार धरो ॥ ओ. ॥ इखु-
 वांग भूमि नगर प्रभुको, देश कोशलको
 राज करो ॥ ओ. ॥ चैत बदि एकमके
 दिवसे, जन्म थयो प्रभुजी केरो ॥ ओ. ॥
 देव इन्द्र सव प्रभुजीकेरा, मोछव कर दिल
 हर्ख धरयो ॥ ओ. ॥ देह कंचन वर्णी
 प्रभुजीकी, पांचसे धनुष सिध्यात कह्यो
 ॥ ओ. ॥ चैत बदि अस्टमीके दिवसे, प्र-
 भुजी दिल बेराग धरो ॥ ओ. ॥ चार

सहस्र परवार सहित प्रभु, संयम साहिव
 आप वरयो ॥ जो. ॥ प्रथम अहार श्रे-
 यांस घर लिनो, ते धन सफल जमार
 करयो ॥ जो. ॥ आदिकाठी प्रभु धन-
 मेरे स्वामी, नव्य जिवांरो निस्तार करयो
 ॥ जो. ॥ माता मुक्त पिता देवगतीमें,
 धन २ वां धन स्वाम जणयो ॥ जो. ॥
 फागण बदि एकमके दिवसे सर्व ग्यान
 जिनराज वरयो ॥ जो. ॥ तीन लक्ष अर्जा
 गुणाखानी, नित उठ ध्यान सुजान धरो
 ॥ जो. ॥ सहस्र चोरासी संत सुग्यानी,
 दर्श प्रभुजीको नित्य वरो ॥ जो. ॥ ग-
 णधर चोरासी प्रभुजीके आगल, मुक्तपु-

रीमें डेरो करयो ॥ जो. ॥ लिखमो सु-
 राणो नित्य रटे प्रभु, सत्य गुरुके ए सण
 लियो ॥ जो. ॥ इति ॥

॥ अथ अजितजिनस्तवन ॥ राग टप्पो ॥

विजे स्वामकुं हमारी बंदनारे ॥ अ-
 जितनाथकुं हमारी बंदनारे ॥ ए आंकणी ॥

भवदुख भंजन स्याम निरंजन तोडत
 कर्मनां फन्दनारे ॥ बी. ॥ नगरी अयोध्या

पीता जितशत्रु, जन्में आप जिनंदनारे

॥ बी. ॥ मात विजयादेने ऊदरे उपना, प्र-

भुजी आप दिनंदनारे ॥ बी. ॥ नक्षत्र

रोहणी रास वृषभकी, सोवर्णा वर्ण अंगनारे

॥ बी. ॥ बहोतर वर्ष लख आउखो पायो,

जिन घनस्यामसुरिंदनारें ॥ बी. ॥ संसार
सागर असार जानके, लिनो संयम सुभ्रं
मनारे ॥ बी. ॥ माहा बदि नवमी दिवस
चलेरो, दिक्षा ली जिनंदनारे ॥ बी. ॥ सप्त
वणके निचे बैठा, ग्यान पायो जिन पं-
चमारे ॥ बी. ॥ गणधर निनाणु एक लख
साधु, तीन लख आर्जा बंदनारे ॥ बी. ॥
पीता ईशानकल्पनी मांही, माता मुक्त
सुभ्रमनारे ॥ बी. ॥ लिखमो सुराणो
ध्यान धरे प्रभु, निचो सीस निवायतारे
॥ बी. ॥ इति ॥

॥ अथ संचवजिन स्तवन ॥ राग खंजाच ॥
वतादे सखी कोन गली गयो स्याम

॥ ए देशी ॥ सुगण जिन तजिो जिने-
 स्वर स्याम ॥ ए आंकणी ॥ मिंगसर सुक
 जन्म पडवाने, सावळी नगरी गांव ॥ सु. ॥
 पीता जितारथ माता सेन्याजन, उन्हीको
 नंदलाल ॥ सु. ॥ साठ पूर्व लख आउखो
 जिनको, संभव थाहरो नाम ॥ सु. ॥ पर-
 णोडा परवार सहस्रो प्रभु, मेरो तोय चर्णा
 चीत ध्याम ॥ सु. ॥ दिक्ता असार संसार
 जाणली, जगको छोडयो काम ॥ सु. ॥
 एकसो दोय गणधर प्रभु आगल, सबही
 गुणको ठाम ॥ सु. ॥ लाख पूर्व लग सं-
 यम पालो, तप बारे सिधान ॥ सु. ॥
 पन्द्रह सहस केवली प्रभु आगल, पांचु

ग्यान निधान ॥ सु. ॥ केवल पाम्यो प्रभु
 अतिय हर्ख मोय, साल वृक्ष निचे ग्यान
 ॥ सु. ॥ मात पीता प्रभु मोक्ष सिधाये
 तोरा, धन उनको नाम ॥ सु. ॥ लि-
 खमो जजनकरे प्रभु तोरा, राजगढे
 गांम ॥ सु. ॥ प्रभु जजनकर अतिय ह-
 र्खमु, मनवंगित हो काम ॥ सु. ॥ असाढ
 सुकल बारसके दिन, प्रभुगुण किनो ग्राम
 ॥ सु. ॥ इति ॥

॥ अथ अजिनंद जिन स्तवन ॥
 रामचंद्र जब युं उठ बोले, डिगो मो-
 रचो ह्यारो ॥ एदेशी ॥ प्रभुका दर्स लगे
 मोय प्यारो ॥ एअंकणी ॥ चवन वैशाख

सुकृ चोथने, अयोध्या नगर मंजारो ॥
 कर जोडीके वीनवुं प्रभु, मे चाकर चर्णा-
 रो ॥ प्रभु. ॥ पीता जितसंवर घरमोछ्व,
 प्रभुजी लियो अवतारो ॥ मात सिद्धारथ
 कीय कुखमे, अंजेनंद कुमारो ॥ प्र. ॥ नक्षत्र
 पुनर्वस रास मिथुनकी, लंछन बंदर वारो
 ॥ पचास पूर्व लख आउखो जिनको, वी-
 नतडी अवधारो ॥ प्र. ॥ राज अवसथा
 पुख जोगवे, सहस्रो जेना परवारो, संसार
 नागर असार जानके, लिनो संयम जारो
 । प्र. ॥ माघ सुदि वारसने दिक्षा, अ-
 योध्या नगर मंजारो ॥ देव इंद्र सब मोहो-
 ठव करते, धन २ थाहरो अवतारो

॥ प्र. ॥ वृद्ध प्रवालके निचे बेठा, पांचू
 ग्यान अधारो ॥ इणचव और परचवामे,
 सणो चाहुं थाहरो ॥ प्र. ॥ एक लाख
 पूर्व लग संयम, चोथा जिनजी पाल्यो ॥
 चोथा जिनका गुण गांवता, हर्षत हियो
 हमारो ॥ प्र. ॥ येकसो ईग्यारे गणधर
 बंदु, बारम्बार हजारो ॥ संत तीन लाख
 प्रभुजी आगल, गुणकी खान चंडारो
 ॥ प्र. ॥ सासण बडो मेरे प्रभुजीको, ह-
 र्खित हियो हमारो ॥ मोक्ष पहुंचे जग
 अलवेश्वर, तेतीस दिन संधारो ॥ प्र. ॥
 नामे लिखमो असमे, में चाकर चरणारो ॥
 हाथजोडके करूं विनती, बारम्बार ह-

जारो ॥ प्रभु. ॥ असाढ सुळ तेरसके
दिवसे, हुलसत हियो हमारो ॥ नोंहरे वेठा
थका, किनो मंगलाचारो ॥ प्रभु. ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति जिन स्तवन ॥

॥ राग स्याम कल्याण ॥

सुरत परवारी जाउ सुमती जिनंदा
॥ ए टरे ॥ मात सुमंगला पिता मेघराया,
जिन जन्म्याहै नरिंदा ॥ सु. ॥ वैशाख
सुळ अष्टमीने जन्म्या, मोछ्बी किये देव-
इंदा ॥ सु. ॥ रासी सिंघ केरो लंठन, राता
बर्ण मुनिंदा ॥ सु. ॥ कंचन नगरी सुंदर
दिपे अति, गोडी पंचम जिनंदा ॥ सु. ॥
वैशाख सुळ नवमीने दिक्का ली, सेवकरे

सब बंदा ॥ सु. ॥ वृद्ध प्रिठांगुनाणा निचे
 केवल, हर्ष करतहै गणीदा ॥ सु. ॥ पांच
 लख तीस सहस्र आजीते, लख बीस स-
 हस्र संता ॥ सु. ॥ चैत्र नवमी शुक्ल मोक्ष
 सिधाये, तीन लोक हर्षदा ॥ सु. ॥ माता
 मोक्ष पिता ईशाने, गुण गावे सब बंदा
 ॥ सु. ॥ चालीस पुर्व लख, आउखोजि-
 नको, महा मोटा सुरिदा ॥ सु. ॥ लि-
 खमो कर जोडीने विनवे, बहोत हर्ष
 सुखकंदा ॥ सु. ॥ तोरा भजन करणें सेती
 प्रभु, हो शिवपुरका वासिदा ॥ सु. ॥ इति ॥

॥ अथ पद्मजिन स्तवन ॥

ठठा पद्म जनेस्वरास कोई, कोसंबी

नगरी गांव ॥ अछा म्हारा प्रभुजी, को-
 संबी, कोसंबी. ॥ पुत्र घररायको ॥ में
 सीस निवाउं, हारे हां जलजी प्रभु सीस
 निवाउं, समकितं द्रढ करजो माहरी
 ॥ ए आंकणी ॥ मात सुचिमा चीत्र ठेस
 कोई, कन्या जिनकी रास ॥ अछा,
 कन्या. ॥ रातो रंग अंगको ॥ में० ॥
 कातिक सुदि वारस नेस कोई, जन्म,
 अछा, जन्म लियो जिनराय ॥ बहु जीव
 त्पारवा ॥ में० ॥ मोठव करवा कराणैस
 कोई, आये अछा आये इंद्र देव ॥ हर्ष
 बहोतो कियो ॥ में. ॥ कातिक वदि तेर-
 सनेस कोई, दिहा, अछा दिहाली जि-

नराज ॥ कर्म फंद तोडवा ॥ में. ॥ सोम-
 देव घर पारणोस प्रजु किनो, अन्ना किनो
 स्याम सुग्यान ॥ अहार कियो खीरको
 ॥ में. ॥ संयम साथे मुनिस्वरास कोई,
 सहस्र, अन्ना सहस्र जना परवार ॥ दिहा
 उन आदरी ॥ में. ॥ उत्रा वृक्षके नियचे
 कोई, केवल, अन्ना, केवल पायो जिन-
 राज ॥ चैत्र शुक्ल उतरे ॥ में. ॥ सठोत्र
 सौगणी जिनवर आगेस कोई, सोहत,
 अन्ना, सोहत हे महाराय ॥ सिवपुर पा-
 मिया ॥ में. ॥ तीन लाख तीस सहेस संत
 कोई, हर्दम, अन्न, हर्दम खातिर वास ॥
 ध्यान तुमरो घरे ॥ में. ॥ चौ लाख बीस

सहेस साधवी, प्रगट, अष्टा, प्रगट तपे
 सुग्यान ॥ सिंघ जुं गुंजता ॥ में. ॥ सिद्ध
 गमण परवार आठसे. त्रण, अष्टा, त्रण
 मुनिस्वर साथ ॥ अंतर निज आपका
 ॥ में. ॥ मिसगर कृष्ण ईग्यारसनेस कोई
 मोक्षे, अष्टा, मोक्ष पहंचे जिनराय ॥ नवी
 समजायके ॥ में. ॥ इशान पिता माता
 मोक्षहीस कोई, वंश, अष्टा, वंश ईद्वान्गे
 नाथ ॥ वन्दु कर जोडने ॥ में. ॥ तीस
 लाख पूर्व आउखोस कांई धनधन, अष्टा,
 धनधन महा धनस्याम ॥ वंदु जिनरायने
 ॥ में. ॥ केवल नाणी वारा सहस कोई
 गिणाती, अष्टा, गिणातयिस गिणाय ॥

जिव बहू तारीया ॥ में. ॥ एक लख पूर्व
 सोलेहीस कोई, दिहा, अन्ना, दिहा ली
 जिनराय ॥ पैय लिखमों चणे ॥ में. ॥
 जात सुराणो असबंस कोई, तोय, अन्ना,
 तोय चर्णा चित ध्याम ॥ रुं चित लाय-
 के ॥ में. ॥ सावण सुळ पडवायनेस कोई,
 घरे, अन्ना, घर बेठे गुणग्राम ॥ हर्ष चित
 मायके ॥ में. ॥ इति ॥

॥ अथ सुपार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥
 मन विंदराविंद चाल वसोरे, मानतो
 घटो चाहे लोग हंसोरे ॥ ए देशी ॥ मन
 सुपार्श्वनाथ चजोरे, हर्ष धरो मनरलीयां
 करोरे ॥ ए आंकणी ॥ जेष्ट शुक्ल वारस-

न जन्म्या, देव इंद्र मोछवजो कियोरे
 ॥ मन. ॥ देवी इंद्राणी गावे बजावे, हर्षकरे
 मन चाव घणोरे ॥ मन. ॥ पिता प्रति-
 ष्ठराय घरमोछव प्रश्वी, रयरञ्ज मात
 जणयोरे ॥ मन. ॥ बणारसी नगरीमें मं-
 गल गावत, नरनारी सब हर्ष करयोरे
 ॥ मन. ॥ नक्षत्र विशाखा स्वस्ती लंछन,
 अंग स्वर्णके रंग थयोरे ॥ मन. ॥ दो-
 यसो धनुष काया प्रभुजीकी, बीस पुर्व
 लख आउखोरे ॥ मन. ॥ परणोडा पर-
 वार सहस्रो प्रभु, राज करयो बहु सुख
 दियोरे ॥ मन. ॥ संसार सागर असार
 जाणके, दिहा ली प्रभु हर्ष करारे ॥ मन. ॥

एक सहस्र मुनी साथ निकला, त्रण
लख साधु ग्रंथ जणोरे ॥ मन ॥ पीता
गमन इशान देवता, माता मुक्तपुरी जो
बरीरे ॥ मन ॥ एक पुर्व लख दिहा
पाली, आखिर सीवपुर डेशे करचोरे
॥ मन ॥ लिखमो अर्जकरे करजोडी,
जव जव सणां चाहूं तोरेरे ॥ मन ॥
श्रावण शुक्ल छट दिवस, घर बेठे जजन
करचोरे ॥ मन ॥ इति ॥
॥ अथ चंद्रजिन स्तवन ॥ राग टुमरी ॥
प्रभु गुण गाउंगा में जिनवर गुण
गाउंगा ॥ गवि परवारी में चंद्र प्रभु ध्या-
उंगा ॥ छवी परवारी ॥ ए आंकणी ॥

चैत्र कृष्ण पंचम चवन विमाना ॥
 ध्यान धरत मेंही हर्खाउंगा, मेंही हर्खा-
 उंगा ॥ में प्रभु. ॥ पीता महासेन माता
 लहमणा ॥ जिनके चर्णाबीच, ससि नि-
 वाउंगा ॥ सीस. ॥ में. ॥ लंछन चंद्र वृ-
 श्चिक रासी ॥ स्वेतवर्णा, देखत हर्खाउंगा
 ॥ देखत. ॥ में प्रभु. ॥ काया धनुष प्रभु
 डोडसे कहिये ॥ हर्ख करी प्रभु तुम गुण
 गाउंगा ॥ तु. ॥ में प्रभु. ॥ दस लख
 पूर्व आउखो जिनको ॥ में तोय चर्णा
 बीच ध्यान लगाउंगा ॥ ध्यान. ॥ में प्रभु. ॥
 पोह कृष्ण तेरसनें दिक्का ॥ करजोडीके
 तुम पद गाउंगा ॥ तु. ॥ में प्रभु. ॥ मीष्ट

(२०)

त्रोजन प्रभु पारणो किनो ॥ सोमदत्त
कहे खरि बहराउंगा ॥ खी ॥ में प्रभु ॥
फागुन कृष्ण सप्तम केवल ॥ मोछव करत
महाजन साहुंका ॥ महा ॥ में प्रभु ॥
नाग वृद्धके निचे केवल ॥ महासेन कहे
दर्शन पाउंगा ॥ द ॥ में प्रभु ॥ गणधर
त्रण ओर नेवे कहिये ॥ संत अही
लख नित्य उठ घ्याउंगा ॥ नित्य ॥
॥ में प्रभु ॥ अस्मी सहस्र त्रण लख
साधवी ॥ मन वच सुद्धकर सीस निवा
उंगा ॥ सी ॥ में प्रभु ॥ जादव कृष्ण
सप्तम मोहे ॥ चन्द्र प्रभुके चार्णा चिं
लाउंगा ॥ चार्णा ॥ में प्रभु ॥ माता मोरु

पीता गमन ईशाने ॥ हर्ष धरी प्रभु तुम
 पद पाउंगा ॥ तु. ॥ में प्रभु. ॥ डेढ पुर्व
 लख संयम पाल्यो ॥ सीद्ध थया प्रभु को
 मन घ्याउंगा ॥ को. ॥ में प्रभु. ॥ लिखमो
 पैय हर्ष घर गावे ॥ गुर पुज्य डालकुं
 सीस निवाउंगा ॥ सी. ॥ में प्रभु. ॥ इति ॥

॥ अथ सुबुधिजिन स्तवन ॥

सुबुधि जिनंदन सुबुधिके दाता ॥

कुबुधि उवारण तुही विधाता ॥ ए आं-

कणी ॥ सुबुधि जनेस्वर सुबुधिके बंदन,

सुग्रवि राय तणो तुं नंदन ॥ लंछन म-

गर रास जो धनकी, रामादे जो माता

॥ सु. ॥ दोय लक्ष पूर्व आउखो, स्वेत

वर्ण नगरी काकंदी ॥ मिगसर कृष्ण पं-
 चमीने जन्म्या, मंगल गावे राणी इंदकी
 ॥ घरररररर गर्जत बादल इंद्र मेह व-
 र्षाता ॥ सु. ॥ मिगसर कृष्ण छठने दिहा,
 सिवपूरकी बांदी पाबंदी ॥ कातिक सुकृ
 तीजने पाचुं, ग्यान थये जिनवरजी ॥
 फररररररर ध्वजा तीन लोक हर्षाता
 ॥ सु. ॥ गणधर अठ्यासी दाय लख साधु,
 तपे महा मुनीराई ॥ एक लख बीस स-
 हस्र आर्जा, बंदत हर्ष अथाई ॥ हररररररर
 हाथ जोडता निचौ सीस निवाता ॥ सु. ॥
 चाद्रव सुकृ नवमीने मुक्ती, गये नवां जि-
 नराई ॥ संतकुमर देवी जो देवता, मात

पीता गति पाई ॥ हरररररर हर्ष करूं
 में मन वच सुद्ध गुण गाता ॥ सु. ॥ लि-
 खमो सुराणो ओसवंसमें, पूज्य चर्ण चि-
 तलाई ॥ जव जव में हुं सर्णा चाहूं अर्ज
 सणो सुनीराई ॥ तन मन दिल और
 हुलसे हिवडो, घर बेठे गुण गाता ॥ सु. ॥
 श्रावण कृष्ण एकादसीके दिन, हर्ष हर्ष
 गुण गाई ॥ बादलकेरी गायो बेठां जिन
 चर्णा चितलाई ॥ सु. ॥ इति ॥

॥ अथ सीतलजिन स्तवन ॥

सीतलजिन सीतलथये प्रभु, में चाकर
 चर्णाकेरा ॥ ए आं. ॥ सोवण वर्णो स-
 रीर तुम्हारो, रूप अनुपम हे तेरा ॥ सी. ॥

ऋदिलपुर जोये नगर तुम्हारा, बालप-
 णाका हे डेरा ॥ सी. ॥ माघ कृष्ण द्वा-
 दसने जन्म्या, हर्ष करतहे वहोतेरा ॥ सी. ॥
 इंद्र देव आये ऋदिलपुरमें, मोठव करवाकुं
 तेरा ॥ सी. ॥ छपन कुंवारी मंगल गावे,
 हर्षतहे हिवडा मेरा ॥ सी. ॥ इति ॥

दसवां जिनंदजीसे प्रीति लगीहे, नित
 समस्यां सुख दायाजी ॥ ए. आ. ॥ ऋव-
 दधि तारण दुख निवारण जिनचर्णा
 वितलायाजी ॥ द. ॥ मात नंदापुत्रा
 भीता दिठरथ जन्म्या त्रीलोकी रायाजी
 ॥ द. ॥ वाजा अनेक रंगका वाजे हर्ष
 अंग नहीं मायाजी ॥ दस. ॥ रासी ध-

नकी श्रीवृद्ध लंछन नवे धनुषकी काया-
 जी ॥ द. ॥ संसार सागर असार जा-
 एके खोटी जानी जग मायाजी ॥ द. ॥
 माघ कृष्ण छठने दिहा असोक तरुलकी
 छायाजी ॥ द. ॥ करजोडीके करूं विनती
 सण तुम्हारी आयाजी ॥ द. ॥ गणधर
 बियासी एक लख साधु विहार निर्वद
 गुण गायाजी ॥ द. ॥ एक लख खट स-
 हस्र आर्जा सबकुं सीस निवायाजी ॥ द. ॥
 पोष कृष्ण बिलवके निचे ग्यान पंचमा
 पायाजी ॥ द. ॥ माता पिता संतकुमर
 देवता सुर्ग सुखके माह्याजी ॥ द. ॥
 वैशाख कृष्ण दुजके दिवसे मोह गये

जिनरायाजी ॥ द. ॥ लिखमो सुराणो
ओस बंसमें जिन चर्णा चित लायाजी
॥ द. ॥ घर बेठे में प्रभु गुण गाया हर्ष
अंग नहीं मायाजी ॥ द. ॥ आसोज कृष्ण
हुजके दिवसे सितलना गुण गायाजी
॥ द. ॥ अरिहंत सिद्ध पुज्य सासणकुं
वारंवार सीस निवायाजी ॥ द. ॥ इति ॥
॥ अथः श्रेयांसजिन स्तवन ॥ राग वसंत ॥
श्रेयांस जनेस्वर जग परमेश्वर, वीष्णु
रायरो नंदनोए ॥ श्रे. ॥ फागुण कृष्ण
वारसकुं जन्म्या, उदरे तो विष्णुवीराणारे
ए ॥ श्रे. ॥ चोसठ इंद्र और देव सबी
मील, मेरूगिरीपे ले गयेए ॥ श्रे. ॥ मो-

छव कियो व्हां अतिय हर्खसुं, अनाद
 कालकी रीतियाए ॥ श्रे. ॥ छपनकुंवारी
 मंगल गावेहो, हर्खमनु देव इंदहीए ॥ श्रे. ॥
 सिंहपुर नगरमें जन्म प्रभुको, वंस ईकांकु
 अवतराए ॥ श्रे. ॥ श्रवण नक्षत्र प्रभुजी
 केरो, लंछन गेंडे वारोईए ॥ श्रे. ॥ वर्षा
 सोवर्णासो रूप अनंतो बलतो अनंत अ-
 थायोईए ॥ श्रे. ॥ अस्सी धनुष देह प्र-
 भुजीकी, राज करत जिनरायोए ॥ श्रे. ॥
 सुख संसारका असार जानके, आदरयो
 संयम सारोईए ॥ श्रे. ॥ सहस्र सूर संयम
 साथे लिना, फागुण अंधेर त्रयोदसीए
 ॥ श्रे. ॥ सतहतर गणधर संत चोरोसी

सहस्र, अर्जा एक लख त्रण सहस्रए ॥ श्रे. ॥
 माघ अमावस केवल पायो प्रभु, तिहु वृ-
 क्कने हेठेइए ॥ श्रे. ॥ चौरासी लक्ष वर्षनी
 उमर, पाई श्रेयांस जनेस्वराए ॥ श्रे. ॥
 श्रावण तजि कृष्ण पक्षमें, मोक्ष गये जि-
 नरायाए ॥ श्रे. ॥ मात पीता संतकुमर
 जो कुमरी, देवगतीके माह्या जोए ॥ श्रे. ॥
 लिखमो सुराणो अस वंसमें, सर्ण लियो
 प्रभु थारोईए ॥ श्रे. ॥ आसोज कृष्ण
 चौथके दिवसे किनो मंगलचारोईए
 ॥ श्रे. ॥ इति ॥

॥ अथ वासुपूज्य जिन स्तवन ॥

मित्र नहीं हंसो थारो ए सुंदर माहरी

॥ ए देशी ॥ ऋज वासुपुज्य निजरायो ए
 सुगण सखी ॥ ऋज. ॥ ए अंकणी ॥ ज-
 यवंती सुत वारमो जनेस्वर, तात वासपु-
 ज्य रायो ॥ चवदस फागुण कृष्णने जन्मा,
 त्रिलोकीरो रायो ए ॥ सु. ॥ ऋ. ॥ चंपा
 नगरीको राय सुहामण, वारमोछे जिन-
 रायो ॥ इंद्र देव सब मोठव किनो, मंगल
 गावे नरनारोए ॥ सु. ॥ ऋ. ॥ वपन कुं-
 वारी मंगल गावे, माताके हर्ष अपारो ॥
 तात वासुपूज्य बाटत बघाइ, घरघर मंग-
 लचारोए ॥ सु. ॥ ऋ. ॥ लंछन महिस्व देह
 राते रंग, रूप अनंता पिछानो ॥ सतर ध-
 नुषकी देहजो उंची गुण अनंता जानोए

॥ सु. ॥ ज. ॥ लक्ष बहोतर वर्षकी आयु,
पाइये जिनरायो ॥ करजोडीके करुं जो
बिनती, हर्ष अंग नहीं मायोए ॥ सु. ॥
॥ ज. ॥ संसार सागर असार जानके,
आदरयो संयमसारो ॥ छवसो मनु जिन
साथ थयेहे, संयम ले प्रजु लारोए ॥ सु. ॥
॥ ज. ॥ माघ सुक्ल दुजके दिवसे, पाडल
वृक्ष निचे आये ॥ केवल पायो अतिय हर्ष
मोय, मोछव किये इंदरायोए ॥ सु. ॥
उणंतर गणधर जिनजी आगे, बहोतर
सहंस मुनीरायो ॥ एक लक्ष आर्जाकु ध्याउं,
सबकुं सिस निवायोए ॥ सु. ॥ मात पिता
संतकुमर जो कुमरी, देवगतिके माह्यो

॥ आगंतर वे मोक्ष सिधासी, धन २ थे
 जिन जायोए ॥ सु. ॥ लिखमो सुराणो
 ओस बंसमें, जिन चर्णा चित लायो ॥
 गुर पुज्य डालनीकुपट सप्तम, लुल लुल
 सिस निवायोए ॥ सु. ॥ न. ॥ इति ॥

॥ अथ विमल जिन स्तवन ॥

नजो क्युनी राधा कृष्ण, फेर पठ-
 तावोगे ॥ ए देशी ॥ नजो क्युनी वि-
 मल जिनंदकुं, फेर पछतावोगे ॥ ए आं. ॥
 पांचाल देश कम्पिलपूर नगरी, राय तणे
 गुण गावोगे ॥ गुणतो गायसे बंदा, पार
 लंघ जावोगे ॥ पा. ॥ जी पा. ॥ न. ॥
 साध सुकृ तिजके दिवसे, जन्म प्रभुने

पायाहेजी ॥ प्रभु गुण गाता बंदा, शिव मुख
पावोगे ॥ सी. ॥ जी सीव. ॥ न. ॥ इंद्र-
देव सब मोठव करके, माता संग सुला-
याहेजी ॥ एण जिनंदने नजता बंदा स-
मकित पावोगे ॥ स. ॥ जी स. ॥ न. ॥
पीता कृतवर्म माता स्यामा बंश ईकाकु
थायेहेजी ॥ एणे जिनंदने नजता बंदा,
सुद्धगति जावोगे ॥ सु. ॥ जी सु. ॥ न. ॥
छपन कुमारी मंगल गाये, नाथ त्रिलोकी
जायेहेजी ॥ बीमल जिनंदकुं नजता कर्म
खपावोगे ॥ क. ॥ जी क. ॥ न. ॥ बाराह
लंछन साठ धनुषकी देह, जिनवरने पाइ-
हेजी ॥ एणे जिनंद. नजता, मुक्त सि-

धावोगे ॥ सु. ॥ जी सु. ॥ ज. ॥ स्वर्ण
 वरणों सरीर बल और, रूप अनंत अ-
 थायोहेजी ॥ जजन करेसु अवागमन
 मिटावोगे ॥ अ. ॥ ज. ॥ संयम लिनो
 सहस्र जनासु, यह संसार असारोहेजी
 ॥ धन्य जो मेरे नाथा, पार लंघावोगे
 ॥ पा. ॥ ज. ॥ पोह सुकू छठके दिवसे,
 केवल जिनंदा पायोहेजी ॥ केवल पाये
 बंदा, सिवपूर जावोगे ॥ सी. ॥ ज. ॥
 सत्तावन गणधर आगे, धर्म देव सिख
 रायेहेजी ॥ अडसठ सहस्र साधु, नित
 उठ ध्यावोगे ॥ नि. ॥ ज. ॥ एक लक
 आठसो श्रमणी, गुणकी खान चंडारो-

हेंजी ॥ कर्म तुटणका रसता, गुर पासे
 पावोगे ॥ गु. ॥ जी गु. ॥ न. ॥ लिखमो
 सुराणो अस बंसमें, जिनजीके गुण गा-
 येहेंजी ॥ धर्म देवकुं नजता, अमरगति
 पावोगे ॥ अ. ॥ जी अ. ॥ न. ॥ आ-
 सोज कृष्ण दुजके दिवसे, घरबेठे गुण
 गायेहेंजी ॥ सर्णतो गुरके जाता, मुक्ती
 पावोगे ॥ सु. ॥ जी सु. ॥ न. ॥ इति ॥

॥ अथ अनंतनाथ जिन स्तवन ॥

मेरे गिरधारीजीसें कोनसी लडी
 ॥ ए देशी ॥ अनंत जिनंदजीसें विन-
 तडी हैसो अनंत जिनंद ॥ ए आ. ॥
 नगरी अयोध्या देव रमणसिम, ओपम

बहुत बडी ॥ चवन कल्याण श्रावण
 कृष्ण सप्तम, नक्षत्र चव रेवती ॥ हैसो अं. ॥
 तात सिंहसेन मात सुजसा, संत कुमार
 गती ॥ जन्म लियो प्रभुजी इण घरमें,
 तेरस वैशाख वदी ॥ है. ॥ एकसो अष्ट
 जल कलस पखाली, चोसठ इंद्र देवही ॥
 नरनारी सब मंगल गावे, त्रिहं लोक हर्ष
 धरी ॥ है. ॥ वंश इक्ष्वाकुं राज योगव्या
 त्रिहं ग्यान गर्व धरी ॥ चवदे स्वपन प्र-
 भुनी माता जो देख्या, कह्यो पती आ-
 पणेकूंही ॥ है. ॥ लंगन सिंचाणो वर्ण
 सोवरणसो, अनंत गुण अनंत बली ॥
 एक सहस्र अष्ट गुण द्विपे, धन धन्य

स्याम धनी ॥ है ॥ संसार सागर अ-
 सार जानके, संयम नेहधरी ॥ बैशाख
 कृष्ण चवदसके दिवसे, संयम सुख बरी
 ॥ है ॥ एण तिथीमें केवल पायो, पढ़
 मास एहीजही ॥ अश्वस्थ वृद्धके निचे
 बैठा ग्यानी, थये जिनजी ॥ है ॥ तीस
 वर्ष लख आयुजो पाइ, गणधर आघ-
 सोही ॥ चैत्र कृष्ण सात्युंके दिवसे मोक्ष
 गये जिनजी ॥ है ॥ छसठ सहस्र संत
 जिन आगे, गुण निधान बरी ॥ वासठ
 सहस्र श्रमणी जिन आगे, धन र ध्यान
 धरी ॥ है ॥ लिखमो पैय जणे घर बेठे,
 धन र नाथधनी ॥ में हुं दीन तुमजो

दयाला, अधम उंघारणही ॥ है ॥ आ-
सोज कृष्ण अस्टमीके दिन, दर्वाजेके
माही ॥ लुल २ बंदन करूंजो स्वाम मै,
सुनो प्रभु विनतडी ॥ है ॥ इति ॥

॥ अथ धर्मजीन स्तवन ॥ राग पीलू ॥

धर्म जिनंद प्रभु धर्मके धोरी, आय
लियो अब सर्ण में तेरो ॥ ध. ॥ माघ
सुकु तिजनें जन्म्या, मोख देवा कियो
घनेरो ॥ ध. ॥ मात सुव्रता पुष्प नक्षत्र,
तात जानु राजा थयो तेरो ॥ ध. ॥ पे-
तालसि धनुषकी देही आउखो दस लख
वर्षाही केरो ॥ ध. ॥ सोनो बणों सरिर
प्रभुको, अनंत रूप अंग सोचत तेरो

॥ ध. ॥ संसार सागर असार जानके,
 संयमभुं नेह किनो नेडो ॥ ध. ॥ माघ
 सुकृ तेरस दिहा ली, लोच करयो पंच
 सुष्टीया केरो ॥ ध. ॥ दहीवन वृद्धके निचे
 बैठा, साध संतको वृन्द जलेरो ॥ ध. ॥
 पोह पून्युं दिन केवल पाभ्यो, चंवर दुलत
 अरि हर्ष बहुतेरो ॥ ध. ॥ जेष्ठ सुकृ पंच
 चमीके दिवसे मोक्ष, पहुंचो स्याम हे मेरो
 ॥ ध. ॥ गणधर पेटालीस चोसठ सहस्र
 साधु, में चाकर चर्णाही केरो ॥ ध. ॥
 मात पीता संतकुमारजो, कुमरी परचव
 सिवपूर होयसी डेरो ॥ ध. ॥ हाथ जोड
 प्रभु भिनती करतहुं, जव २ सणों चाहुं

तेरो ॥ ध. ॥ आसोज सुकल वारसकेदिवसे,
वीनवें लिखमों दासहै तेरो ॥ ध. ॥ इति ॥

अथ सांतिजिन स्तवन ॥ राग कव्वाली ॥

वांकी कवान वाले २ ॥ ए चाल ॥

जिनंद गुण गाले २ प्रभुके गुनानुं गाले

॥ ए आं. ॥ सांति सुजान सोलवा जि-

नंदहे, स्वाम धर्मके उध्योतकुं ॥ पर देने

वाले २ ॥ जि. ॥ चादव मासकृष्ण पख

तीथि सप्तमें, जन्मे जो धर्मकुं ॥ उध्योत

करने वाले २ ॥ जि. ॥ हथणायपूर नग-

रमें हे, जन्म बास रंग सोवर्णसो ॥ अनंत

रूप वाले २ ॥ जि. ॥ अचराके नंदनं अ-

श्वसेन तात, गति संत कुमारही ॥ दोनुं

पाने वाले २ ॥ जि. ॥ चालीस धनुष देही हे
आत्मगुल, आय एकलक्ष वर्षकी ॥ उमर
पाने वाले २ ॥ जि. ॥ जेष्ठ बदि चवदस
दिनके माह संसारकु असार जान ॥ दिहा
लेने वाले २ ॥ जि. ॥ पोष सुदि नवमी
नंदिकी छांह केवली थये नवी ॥ जीव ता-
रण वाले २ ॥ जि. ॥ गणधर छतसिहे वा-
सठ सहस्र साधु इकसठ सहस्र साध्वी ॥
बहुत गुणवाले २ ॥ जि. ॥ लिखमो सुराणो
अस वंस राजगढ माह प्रभुके ॥ चणकुं
नित्य नमनेवाले २ ॥ जि. ॥ इति ॥

॥ अथ कुंथुजिन स्तवन ॥

धन २ नेम नाथ नगवान पशुके वंद

बुडाने वाले ॥ ए देसी ॥ धन २ कुन्थु नाथ
 जिन राजजी ॥ शिवपूर पहुंचाने वाले २
 ॥ सिद्धगतिके देने वाले ॥ धन. ॥ ए आ. ॥
 तात थये सुरराय, माताहे श्रीनाम, वंदि
 चउदस बेशाखमें, जन्म धराने वाले ॥ ध. ॥
 गजपुर सहर सुजान कुन्थु देस महमान,
 तीस धनुष देही जान ॥ धन प्रवीयन ता-
 रन वाले ॥ धन. ॥ लंठन बकरो जान,
 स्वर्ण बर्णी स्यान ॥ बेशाख पंचमी माह,
 प्रभु दिक्षा लेने वाले ॥ धन. ॥ तिथि नवमी
 सुज बार, सुद्ध चैत्र मासके माह ॥ मिलक
 तणजो गंह, जिन केवल पानेवाले ॥ ध. ॥
 संत सहस्रहे साठ, श्रमणी ठेसे उपरांत ॥

गणी पैंतीस सुगर्भान, धन जो सासण-
 के रखवाले ॥ धन. ॥ रात्री थये निर्वाण,
 पडवा बदि बेशाख ॥ प्रभु महामोटा गु-
 नखान, तुम मुक्ती देनेवाले ॥ धन. ॥ लि-
 खमो सुराणो नाम, ओस वंसके माह ॥
 मोहे गुरु मीले गण स्वाम, तुमके गुण
 गानेवाले ॥ धन. ॥ इति ॥

॥ अथ अरिजिन स्तवन ॥

कहां तेरे कानका मोती, कहांवे जा-
 तका गोती ॥ ए देसी ॥ अरि जिन स्वाम
 तुं मेरा, सर्णमें आ लिया तेरा ॥ हथणापूर
 नगर हे नारी, जन्मे अरि स्वाम अवतारी
 मिंगसर सुदि दसमकिं जन्मे, देव इंद्र

आगये छिनमें ॥ सुदर्शन रायहें, रेवती
 देवी है माता ॥ तीस धनुषकी देही, वर्ण
 स्वर्णके सेही ॥ संसार असार जाणयोहे,
 दिक्षा ली बैराग आणयोहे ॥ कार्तिक
 सुदि द्वादसी माही, आभ्रवृक्ष हेठे थे
 सांइ ॥ केवल पावियो जिणराया, देव
 इंद्रादि हर्खाया ॥ मिंगसर सुदि छठ तीथी
 मांही, सिवपूरमें जा रहे सांइ ॥ पीता म-
 हेंद्रही देव, मात सुद्धगातिकी सेव ॥ ते-
 तीस गणधर सुर्यानि, मुक्त पहुंचे टाम-
 हमान ॥ पचास जो सहस्र संतनहें,
 आर्जा साठ सहस्रहीहे ॥ लिखमो प्रभुके ये
 गुन गाता, नित्य उठ गुरकुं घ्याता ॥ इति ॥

॥ अथ मल्ली जिन स्तवन ॥

अटारियांपे गिरयोरे कबूतर आधी-
 रात ॥ ए देशी ॥ मल्ली जिन बंदु हाथ
 जोरीके सिसनायरे ॥ ए आं. ॥ पीता
 कुंजरजा राणी प्रजावती माय ॥ म. ॥
 इस्त्रीलिंग पायो लंठन कलसको थाय
 ॥ म. ॥ नील वर्ण प्रभुको पचीस धनुष-
 की काय ॥ म. ॥ सिंगसर सुदि इग्या-
 रस अश्वनी जन्म कहाय ॥ म. ॥ मोठव
 करवाने देव इंद्र गये आय ॥ मल्ली. ॥
 मंगल बहु गावे उपन कुमारी नरनार
 ॥ म. ॥ नगरी प्रभु मिथुला देश पायोहे
 विदेह ॥ म. ॥ सुदि माघ इग्यारस दि-

काली जिनराय ॥ म. ॥ एण तीथि एण
 मासे केवल पायो मुनिराय ॥ म. ॥ ग-
 णधर अठाविस चालीस सहस मुनिराय
 ॥ म. ॥ पीचपन सहस श्रमणी नित्य
 उठीके ज्यो ध्याय ॥ म. ॥ पीचपन स-
 हस बर्षा उमर पाइये जिनराय ॥ म. ॥
 निर्वाण थये जिन फागण दवादसी माह
 ॥ म. ॥ लिखमो तुमं ध्यावे नित्य उठ
 जिन गुण गाय ॥ म. ॥ इति ॥

॥ अथ मुनीसुव्रत जिन स्तवन ॥

अस्सी धमक पर खेल मन मोयला,
 जुगमें जिवणा थोडाजी ॥ ए देसी ॥ विस-
 वा जिनंदजिनै ध्याय मन मोयला, जी-

वने कर्म दवायाजी ॥ ए आं. ॥ पीता
 सुमीत्र मात पद्मावती जिनकी कुक्षे जा-
 याजी ॥ रंग बधावा बंटत अनंता मोछव
 बहोत करायाजी ॥ बी. ॥ जेष्ट कृष्ण अ-
 स्टमीके दिवसे जन्म जिनंदने पायाजी ॥
 मगध देश राजग्रही नगरमें मोछव होत
 सवायाजी ॥ बी. ॥ इंद्रदेव सब मोछव
 करते नरनारी हर्षावेजी ॥ उपन कुंवारी
 मंगलगावे बाजा अनेक बजावेजी ॥ बी. ॥
 बीस धनुस काया प्रभुजीकी आत्मगुलें
 बतायाजी ॥ लंठन काठवो स्याम वर्ण
 जिन रूप अनंत अथायाजी ॥ बी. ॥
 सत्री सुखानें असार जानके संयम आ-

दर लायाजी ॥ फागुण सुकृद्वादसीके दिन
 दिहा ली जिनरायाजी ॥ बी. ॥ फागण
 कृष्ण द्वादसके दिन चंपक निचे आया-
 जी ॥ केवल पायोहे जिनंदजी देव इंद्र
 हर्षायाजी ॥ बी. ॥ गणधर अठारे संत
 तीस सहस सबकुं सीस निवायाजी ॥
 मात पीता महेंद्र गतिमें, दुजे अब सुख-
 दायाजी ॥ बी. ॥ जेष्ठ वदि नवर्माके दि-
 वसे मोक्ष गये जिनरायाजी ॥ लिखमो
 सुराणो हाथ जोडके बारबार सीस ना-
 याजी ॥ बी. ॥ आसोज कृष्ण नवमी
 दुजीकुं जिनपद घरमें गायाजी ॥ सप्तम
 पाट श्रीकु गन्तीकेरे डाल अग्या सुख

दायाजी ॥ बी. ॥ इति ॥

॥ अथ नमि जिन स्तवन ॥

अजनतो बनता नाहिंओ जिवरो से-
 लानी ॥ ए देसी ॥ नमि जिन अजले
 चाईरे मुक्त निशानी ॥ ए आं ॥ मात
 तो प्रभुजी केरी बीप्रा जो रानी ॥ बीजे
 नृप तात जिनको जिनघर ज्यानीरे
 ॥ न. ॥ श्रावण कृष्ण अष्टमी जन्मेहे स-
 वामी ॥ देश तो विदेह कहिये मथुरा म-
 ह्मानीरे ॥ न. ॥ नरनारी इंद्र देवा हर्षे
 सुग्यानी ॥ छपन कुंवारी मंगल गावे म-
 धुर वानीरे ॥ न. ॥ देह प्रभुजी केरी पं-
 द्रह धनुषांनी ॥ राज पंच सहस वर्षा किनो

अंतरजामीरे ॥ न. ॥ दिक्षा तो लिनी
 प्रभुजी छांडे कुटंब रानी ॥ वर्षी तो दान
 दिनो सवी अंतरजामीरे ॥ न. ॥ वकुल
 वृक्ष नीचे आयेहें स्वामी ॥ माघ इग्या-
 रस सुकृ थये पंचग्यानीरे ॥ न. ॥ सतरा
 तो गणधर जिनके गुणकी जोखानी ॥
 संत तो बीस सहस्र सत्या एक चालीरे
 ॥ न. ॥ बेशाख कृष्ण दसमी स्वाम नि-
 र्वानी ॥ लिखमो प्रभुनें घ्यावे धनमेरे
 स्वामीरे ॥ न. ॥ इति ॥

॥ अथ रिष्टनेम जिन स्तवन ॥

तुम नेमनाथ जगवाना, अब कृपामोषे
 लाना ॥ कर कंचन पार लंघाना ॥ तु. ॥

मात सिवादे जाया, कोइ तात समुद्रबजि
राया ॥ सोरीपूर नगर मुहाना ॥ तु. ॥
श्रावण सुदि पंचमहमाना, जन्म्या जिन
जग हुलसाना ॥ आये इंद्र देव और दाना
॥ तु. ॥ नरनारी बजंतर बजावे, उपन
कुंवारी मंगल गावे ॥ सब हर्षत बालक
स्याना ॥ तु. ॥ संख लंछन प्रभु केरो,
में दास थयो प्रभु तेरो ॥ में बालक हुं
नादाना ॥ तु. ॥ रंग स्याह प्रभुकेरो, बल
रूप अनंतो तेरो ॥ धन्य स्याम मेरे सु-
र्ग्याना ॥ तु. ॥ संसारना सुख विसारा,
प्रभु लास्या थानें खारा ॥ संयम ले गिर-
र जाना ॥ तु. ॥ वेडसद्रम निचे आया,

अमावस्या दिवस सवाया ॥ आसोजा पंच-
 चम ग्याना ॥ तु. ॥ इग्यारह गणधर सोहे,
 मुनी अठारे सहस मन मोहे ॥ महागु-
 णकी खान सुजाना ॥ तु. ॥ जिन आप
 थये निर्वाणों, श्रावण सुदि पक्ष प्रमाणो ॥
 आठुंनै मोक्ष सिधाना ॥ तु. ॥ सब सर्ण
 तुम्हारी चावे, लिखमों प्रभुका गुण गावे ॥
 मेरी नाथा और निजाना ॥ तु. ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्व जिन स्तवन ॥

मत महीडो विगाडे मेंडुं मथुराकी
 कानां गुजरी ॥ ए देशी ॥ मत दिवस
 गमावे पार्श्वजिन अजले पार उतारसी
 ॥ ए आं. ॥ मात वाम. दे तात अश्वत्थेन,

जन्म लियो जिनराई ॥ मन मोयल
॥ जन्म ॥ देव इंद्र और देवी तो आइ
मोछव करणें ताईजी ॥ मत ॥ छपन कु-
वारी मंगल गावेजी, हर्खत सब नरनारी
॥ मन ॥ ह ॥ बणारसी नगरी अतिय
सुहामणीहे देश काशीके माहीजी ॥ म ॥
हस्त नवकी देह प्रभुजीकी बलतो अनंत
अथाय ॥ म ॥ व ॥ रूप अनंतो नील
वर्णगे वंश इक्ष्वांकु मांहीजी ॥ मत ॥ पोष
कृष्ण दसमीकुं संयम, आदारियो जिन-
राइ ॥ म ॥ आ ॥ चार ग्यान संयमकी
बेल्या सब जिनवरके मांहीजी ॥ मत ॥
धातकी द्रुम चैत्र कृष्णपक्ष, चौथ तिथि-

(१३)

के माही ॥ म. ॥ चो. ॥ पांचु ग्यान नि-
धान थये जिन महा मोटा जिनराइजी
॥ मत. ॥ दस गणधर प्रभुजीके तो आ-
गल, बंदत हर्ष अथाई ॥ म. ॥ वं. ॥
सोला सहस्र संत जिनंदतणा बंदु मन
चितलाइजी ॥ मत. ॥ मात पीता महेंद्र
गतिमें, देव योनीके माही ॥ मन. ॥ दे. ॥
सावण भुक्त अस्टमके दिवसे आप थये
निर्वाणीजी ॥ मत. ॥ लिखमो सुराणों
ओस बंसमें, घर बैठे गुणगाये ॥ मन. ॥
॥ घ. ॥ हाथ जोड पुज्य डालके सणें निचो
रीस निवांईजी ॥ मत. ॥ इति ॥

॥ अथ ब्रह्ममान जिन स्तवन ॥

कालहे सखी ईन ठोर बंसुरी जुल वि-
सारी ॥ ए देशी ॥ तात सिधार्थ राय
मात त्रशलादे तिहारी ॥ चैत्र कृष्ण पक्ष
मांह जन्म जो लिनो मुरारी ॥ नाम है
वीर जिनंदनों प्यारे २ ॥ सबकोइ करते
सेव ॥ कंडलपूर पूर्व देशमें प्यारे २ ॥
जन्में हेंगे जिनेस ॥ वीनती मानिये हो
जगनाथ ॥ ए आं. ॥ इंद्र देव सब आय
महोछव किने जो चारी ॥ छपन कुंवारी
नरनार मंगल गावत हर्ष धारी ॥ हर्ष
करत त्रीहं लोकमें प्यारे २ ॥ बांटे व-
धाइ देव ॥ चौबीसमें जगनाथकी प्यारे २

(५१)

॥ नित्य उठ करजो सेव ॥ वी. ॥ लं-
ढन सिंधको जान रूप अनंत अपारी ॥
अनंत बली जगनाथ देह रंग सुवर्ण वारी
॥ हस्त सातकी देही है प्यारे २ ॥ बंदो नित
हमेश ॥ संसार असारही जानके प्रभु २
॥ संयम लियो जिनेस ॥ वी. ॥ साल
द्रुम निचे आय पंच ग्याना जो धारी ॥
वैशाख सुक्ल पख दिवस दसमीं सुनकारी ॥
केवल पा सुक्ती गये प्यारे २ ॥ चौबीसमां
महादेव ॥ सात प्रीता स्वर्ग गये प्यारे २
॥ बारमां देवी देव ॥ वी. ॥ गणधर इ-
ग्यारे गुणखान सुक्त गये है निर्बानी ॥
संत चवदा सहस्र आर्जा छतीस हजारी ॥

केइयक मुक्तीमें गये प्यारे २ ॥ केइ और
गतिया मांय ॥ लिखमो सुराणो ध्यावता
प्रभु २ ॥ निचो शिश निवाय ॥ बी. ॥ इति ॥
॥ अथ जिन वर्ण सुगण स्तवन ॥
धनष तोरन धर्न ञज मन धनष तो-
रन धर्न ॥ ए देशी ॥ प्रम गुरको सर्न,
ञज मन प्रम गुरको सर्न ॥ ए आं. ॥
चन्द्र सुबुधि दोय जिनका, मुक्क उनका
वर्न ॥ ञ. ॥ पदम वासुपूज्य जिन तना,
रक्त जिनका वरन ॥ ञ. ॥ मल्ली पार्श्व
नील वर्ण, वंदत जिनका चरन ॥ ञ. ॥
सुनी सुव्रत रीष्ट स्याम रंगे, चर्न जिनका
वंदन ॥ ञ. ॥ सेख सोलै नित्य वंदु, देह

कंचन वर्न ॥ न. ॥ चौबिस जिनकी क-
रत पूजा, भाव पूजा करन ॥ न. ॥ सिध
और आचारज उपाध्या, सर्व साधु बंदन
॥ न. ॥ त्रिहु नारी रिप जै जस, मधव
मांतीक बंदन ॥ न. ॥ डाल गणी सोत्रै
जिनंद जिम, लिखमो करता बंदन
॥ न. ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेसकी ढाल लिख्यते ॥
तुंही तुंही याद आवै दर्दमै ॥ ए देशी ॥
युंही २ कर्म बंधावे सुफतमें ॥ युं. ॥
॥ ए आं. ॥ वीर जनेसर नीन २ न्नाषी,
साचा हाल सुनाया गोयमसे ॥ युंही. ॥
धर्म हेत जोय जीव हणै वे, नीच गतिकुं

जावे कर्मसे ॥ गुं. ॥ पथर मंगाय तामीर
करावे, जिव हणावे मंदिरसे ॥ गुं. ॥ पृ-
थ्विकाय हण प्रतमा बणावे, केसर घसी
लगावे चंदनसे ॥ गुंही. ॥ अपकाय हण
सनान करावे, अछा तरह नुहावे जलनसे
॥ गुंही. ॥ तेउ काय हण धुपज खेवे, पीछे
चोग लगावे फुलनसे ॥ गुंही. ॥ खुलै
मुखवै तवन पढैवे, बाउ काय हणावै जि-
जनसे ॥ गुंही. ॥ छउं कायाका चुर क-
रैया, मुख पुजा रचावै दर्व्यनसे ॥ गुंही. ॥
लिखमो कहे सत गुरके सणै, साचा हाल
सुनावै मित्रनसे ॥ गुंही. ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेशकी ढाल दुजी लिख्यते ॥
 हंसारे ओलख्यो नहीं जिन धर्म अग्यानी
 तुं रह्योजीरे ॥ हंसारे अबही गुरू सणों
 पाय कबु नहीं विगड्योजीरे ॥ हंसारे
 पांच प्रमेश्वर नाम अज्या मुक्ती लहेजीरे
 ॥ हंसारे आठुं दे फोज खपाय गुरारे
 साजसुंजीरे ॥ हंसारे पांचु बैरी जीत मु-
 क्तफल पावसीजीरे ॥ हंसारे सुगुरूनी
 अग्या पाल सिद्ध सिधायसीजीरे ॥ हं-
 सारे लिखमो चाषे एम बीर अग्या चा-
 लियेजीरे ॥ हंसारे मात तात अरू नाह
 सज्जन कोइ नहींजीरे ॥ हंसारे सज्ज-
 नहै जिनधर्म सिद्ध मिलायसीजीरे ॥ हं-

सारे चेत सकैतो चेत एहवी विघतो मि-
लीजीरे ॥ हंसारे उतम गुर सुध जात
सुद्ध संगत मिलीजीरे ॥ इति ॥

॥ अथ पुज्य डालचंदजी महाराजके ॥

॥ गुणांकी ढाल लिख्यते ॥

मुर्ज थाने पुजसा नर मोतयिनको
थाल ॥ जराक मोडा उगजो ॥ कंध
दिसावर जायवो ॥ आज मेरो कं ॥
संग चलुंगी मेरी ज्ञान वो पिया तोरे
संग चलुंगीरे ॥ ए देशी ॥ थाहारे दर्सको
चाय, वो सतगुर मोनें थाहारे दर्सको
चाय ॥ ए आ. ॥ सहेर लाडनूं आपहो
यें हूं राजगढ माह ॥ अंतरायके वसथकी

कैसे दर्स होजाय ॥ वो सत. ॥ सतगु-
 रको दर्सन जलो साचा जिनका वैन ॥
 सतगुरके दर्सन बीना घरी परै नहीं चैन
 ॥ वो सत. ॥ मुन्निति की रीतहै ध्वांस
 अन विनाह ॥ थें जिन सांसण सेहरा
 महा मोटा मुनीराय ॥ वो सत. ॥ सास-
 ण अधिको दिपतो संत बहु बुद्धवान ॥
 पंच महाव्रत पालवै सवही गुणकी खान
 ॥ वो. ॥ सहेर उजीण मालवै ओस वंस
 श्रीकार ॥ जात पिपाडा दिपती तुम सां-
 सणके सिणगार ॥ वो. ॥ डालचंद्र त्रिहु
 तणै सप्तम बैठे पाट ॥ संत सत्यां बहु
 विनवे धर्म ध्यानका ठाठ ॥ वो. ॥ लिखमो

सुराणो विनवे निचो सिस निवाय ॥ जे
थाहारा दर्सन होवैतो लुल २ लागुं पाय
॥ वो सत. ॥ इति ॥

॥ अथ डालचंदजी महाराजके गुणांकी ॥
॥ डाल दुजी लिख्यते ॥

डालगणी नित बंदसांजी बंदत होत
आनंद ओ महारा सतगुरुजी ॥ १ ॥
जन सासणमें दिपतारे सोचता जेम जि-
नंद ओ महारा सतगुरुजी ॥ २ ॥ संत
सत्यांबीच दिपतारे जेम देवांबीच इंद ओ
महारा सतगुरुजी ॥ ३ ॥ ध्यानधरे नित
थाहारे करसी वे खेवो पार ओ महारा
सतगुरुजी ॥ ४ ॥ पंच महाव्रत पालवैरे

बेकायानां पिहर ओ महारा सतगुरुजी
॥ ५ ॥ बारह भेदे तपस्या करेरे कृतेरे
संयम-सार ओ पहारा सतगुरुजी ॥ ६ ॥
परीसह सहण समर्थछेरे सत्तावीस गुणकी
खान ओ महारा सतगुरुजी ॥ ७ ॥ वि-
यालसि दोस टालीयनेरे अहार पानीरा
लेणहार ओ महारा सतगुरुजी ॥ ८ ॥
वावन अणाचार टालवैरे ॥ सांसण अ-
तिय सोजाय ओ महारा सतगुरुजी ॥ ९ ॥
निरलोत्री निरलालचीरे नुतोडा नही जाय
ओ महारा सतगुरुजी ॥ १० ॥ मोल
लियो लेवे नहीरे सामर्थ तारणहार ओ
महारा सतगुरुजी ॥ ११ ॥ नव वाडा

सहितहीरे पालेबे ब्रम्हचार ओ महारा सत-
तगुरुजी ॥ १२ ॥ गूण अनंतही सोन-
तारे बएर्या न मोसुं जाय ओ महारा सत-
गुरुजी ॥ १३ ॥ लिखमो सुराणो विन-
वेरे लुललुल लागूं पाय ओ महारा सतगुरुजी
॥ १४ ॥ फागण वदि एकादसीरे दर्वा-
जैकै मांह ओ महारा सतगुरुजी ॥ १५ ॥
गिरवांका गुण गावियारे मनमें हर्ख अ-
थाय ओ महारा सतगुरुजी ॥ १६ ॥ इति ॥
॥ अथ श्री श्री महाराजधिराज पुज्य ॥
॥ ड. लचंदजीनो स्तवन लिख्यते ॥
मेरे घटकी घघरया रंगसे जरी
॥ ए देशी ॥ प्रभु थाहारे दर्सकी चाह

लगीरे ॥ प्र. ॥ ओस बंस अरू नगर उज्जी-
णी २ ॥ पिपाडो प्रभु जात खरीरे ॥ प्र. ॥
॥ १ ॥ नवकी साल प्रभु जन्म तुम्हारो २ ॥
सुन्न तिथी अरू सुन्न वार घरीरे ॥ प्र. ॥
२ ॥ साल तेवीसकी संयम आदरयो २ ॥
सुन्न मन दिल वैराग घरीरे ॥ प्र. ॥ ३ ॥ साल
घोपन के पाट विराजे २ ॥ गणनायक सिर-
ताज सहीरे ॥ प्र. ॥ ४ ॥ गतसि गुण करी
अतिसय सोझे २ ॥ सुन्न गुणवान भंडार
घरीरे ॥ प्र. ॥ ५ ॥ ब्रह्मचार नव बाडीसु पाले
२ ॥ बाल जती बुधवान सहीरे ॥ प्र. ॥ ६ ॥
पंच आचार पलावे अरू पाले २ ॥ पांचु इंद्री
दमी जो सहीरे ॥ प्र. ॥ ७ ॥ पंच महाव्रत

(६८)

॥ ध्या. ॥ जवदधी त्यारोजी ॥ सु० ॥
॥ म. ॥ ज. ॥ हो. ॥ संत सत्या सिरमोड
॥ सु. ॥ म. ॥ ज. ॥ दर्सन दिज्योजी
॥ सु. ॥ म. ॥ द. ॥ होजी थारी सेव कर
सुर इंद्र ॥ सु. ॥ म. ॥ द. ॥ नीत उठ ध्या-
उंजी ॥ सु. ॥ थाने ॥ नी. ॥ हो. ॥ तिरण
तारणरा जहाज ॥ सु. ॥ थां. ॥ नी. ॥ गुण
अति जारीजी ॥ सु. ॥ थांरा ॥ गुणहो ॥
मुक्ती पंथ दातार ॥ सु. ॥ थांरा ॥ गु. ॥
लिखमो ध्यावेजी ॥ सुग्यानी थाने ॥ सीस
निवावेजी ॥ हो. ॥ सासणरा सिणगार ॥
सुग्यानी हुतो ॥ सीस निवाउंजी ॥ इति ॥

॥ समाप्त ॥



तीर्थेश्वर-महिमा

दोहा

श्रीगुरु चरण मनाय के, गणपति को शिरनाय ।
सरस्वती जननी मेरी, बेठो हिरदे आय ॥ १ ॥
भीषमजी की बुद्धि को, नहीं है पारावार ।
एक पंथकूं भूलके, तेरे दिये निकार ॥ २ ॥
मैं तो बुद्धिहीन हूं, इनके ग्रन्थ अपार ।
तटही लखि मैंने लिख्यो, इनको अत्याचार ॥ ३ ॥
बाल-वृद्ध-विद्वद्सभा, सबको नावों सीस ।
कपटि कुटिल मैं बहुत हूं, जडहूं विश्वा वीस ॥ ४ ॥
पुनि कविता आवे नहीं, सब मिलि करो सहाय ।
भूल चूक जो कहीं पढ़ो, दीजो सबे बनाय ॥ ५ ॥

कवित्त

जीव कहीं मारे तो पाप एक लागे सही,
 मरते कों वचावे तो अठारे का फेरा है;
 दान शाला खोले तो छकाय की हत्या लगे,
 प्रतिमा की पूजा में ही आन पाप घेरा है ।
 मान-क्रोध राग द्वेष निर्दयता भरी खूब,
 जैसे कोई चारेसुं भरत भुसेरा है;
 काबुल के काका जमाई सारी सिन्धही के,
 महावीर स्वामी प्रभु पंथ एक तेरा है ॥१॥

—+—
 भजन (१)

सुनो तुम तेरा पंथी भाई,
 क्यों जीव दया विसराई ! (टेर)
 सूत्र सपत्ते तुम नहीं मानों,
 टीका निर्युक्ति नहीं जानो;
 पहिले जीव का भेद बखानो,
 पीछे पुद्गलकूं पहिचानो ।

[३]

सबकी प्रलय समझलो पहिले,
फिर कीजो चतुराई
नाहि, पोल सभी खुलजाई, क्योँ० ॥१॥

स्वास प्रलय पहिले समझावो,
पीछे मिनट प्रलय पै आओ;
घड़ी प्रलय का रस्ता लाओ,
घंटे की सीधी दिखलाओ;
पहर प्रलय का करो खुलासा,
नहीं तो पढ़लो आई ।

सब अकड़ देऊ वितराई ॥ क्योँ० ॥२॥
दिवस प्रलय का होना जानो,
पीछे दिवस रात्रि को मानो;
इसी तरह सब युग कर मानो,
फिर सबकी योनि पहिचानो;
फिर आयु योनि ते बांधो,
ये सब करो उपाई ।

क्योँ मरे जाओ इतराई ॥ क्योँ० ॥३॥

[४]

जीव सबों में रहता कैसे ?

उसका पालन होता कैसे ?

पुद्गल करे जीव की रक्षा,

जीव करे के पुद्गल की रक्षा;

जीव जीए के पुद्गल जीए,

ये सब सीखो जाई ।

नहीं सरम तुम्हें कलु आई ॥ क्यों० ॥४॥

भजन (२)

सुनो तुम तेरापंथी साधो,

क्यों पोट पाप की वांधो ? (टेर)

जीव ले जीव जीव को रचता,

जीव विन जीव कोई नहीं वचता;

तुमरी अकल गई सब मारी,

तुम से तो अच्छी है नारी;

बिना बात क्यों अकड़ो भैया,

साधपना कलु साधो ।

क्यों पोट पाप की वांधो ॥ १ ॥

[५]

जो अनादि का चलता गेला,
उसमें तुमने दिया झमेला;
तुम से, भला कसाई जानो,
जिसका खास यही है वानो;
जिभे करावे पास ओर के,
पैसा देता आधो ।

क्यों पोट पाप की बांधो ॥ २ ॥

इतनी दया उसे भी आवे,

नहीं आप तलवार चलावे;

निबल जीव को पिटता देखे,

न्याय सभी उसका वो पखे;

छुड़ा देय उसको जलदी से,

नहीं घंटा लगता आधो ।

क्यों पोट पाप की बांधो ॥ ३ ॥

तुमने उसको मात किया है,

ये रस्ता केसा लीया है.

मरते को वचाना पाप समझते,
 जीव दया से बिलकुल हटते;
 सोच समझकर अपने दिल में,
 दया धरम को साधो ।
 क्रयों पोट पाप की बांधो ॥ ४ ॥

ख्याल (३)

थली के तेरे पंथी साधु, जीव दया को नहीं माने,
 बने हैं जैनी जैनकी मर्यादा कलु नहीं जाने । (टेर)
 नहीं सूत्र से काम कलु भी, ठुपरी खूब उड़ाते हैं ।
 मरते को वचाना पाप समझते, मनमानी धुन गाते हैं ॥१॥
 प्रतिमा पूजा लिखी सूत्र में, उनको नहीं सुनाते हैं ।
 उलटी सीधी बात बनाकर, दुनिया खूब रिझाते हैं ॥२॥



शेर

जाके पूछे जो कोई, सब सूत्र के आधार से;
 शास्त्र की बातों को उलटी, कर दिखाते प्यार से ।

प्रतिमा पूजा, जीव दया के, नामसे नफरत उन्हें;
 'घणी खमा' ओर 'पूज्यता' को ईश्वर बनके सुने
 शंका करता जो कोई जाकर,
 उस पर ओघा वे ताने । बने हैं जैनी० ॥ १ ॥
 साधु होकर झूठ बोलना, किसी शास्त्र की नहीं सलाह
 सूत्रों का कुल अर्थ पलट दिया,
 झूठ सरासर देखो भलाह ।

पत्थर को तो नाव बना कर, बैठे हैं साधुजी मलाह;
 साधु जी कहें पार लगी अब,
 श्रावक लोग कहें जलदी लगाह ॥

शेर

संसार सिन्धु अपार है, यहां धर्म से लगती सही;
 वहां पाप का बोझा भरा, और नाव पत्थर की वही ।
 मलाह को दीखे नहीं, फिर दंभ की विजया लही;
 ये नाव तो के दिन तिरिगी ? अब न डूबी अब सही ।
 जिस जिस को ये लेकर डूवे, जो कोई इनकी माने ।
 बने हैं जैनी० ॥ २ ॥

जिस साधुमें राग द्वेष हो, उस साधु का क्या हे पता ?
साधुमार्ग से प्रीति करते, औरो में रहे खोट वता ।
जो ये नाम भूल के रक्खा, तो मंजूर करो अपनी खता,
दर्शन करने आप चलो और, श्रावकों को सब दीजे वता ॥

शेर

मरते हुए को वचाने में, धर्म गर कुछ समझते;
शास्त्र को नहीं उलटते, फिर ना किसी से अटकते ।
शास्त्र में जो समझते तो, धर्म से क्यों सटकते ?
मोक्ष सीधी होइ जाती, नरक में क्यों लटकते ?
सीधी गेल बताते हमतो, माने चाहे नहि माने ।

वने हैं जैनी० ॥ ३ ॥

ये लड्डु दो दिन के भैया, आखिर रोटी खानी है;
सीधी रोटी ऊपर पानी, येही मोक्ष निशानी है ।
राग द्वेष को जल्दी छोड़ो, प्रेमप्रीत मन लानी है;
झूठ का विलकुल त्याग बताते, साधुजन सुझानी है ॥

शेर

जो कहा डर के कहा और थोड़े लफ्जों में कहा;
 झूठ अक्षर कुछ नहीं, फिर सच भी थोड़ा कहा ।
 डर तो है मरने का मुझको, मारने से डर रहा;
 वे धर्म को समझे नहीं कुछ, पाप घटमें अह रचा ।
 मालमस्त अन्धे क्या ज्ञाने, जाके लागी सो जाने ॥
 वने हैं जैनी० ॥ ४ ॥

—+—
 ब्याल। ४)

घर छोड़ा और मुँह मुड़ाया, साधुपना कुछ साधो तुम;
 सभी को छोड़ो राग और द्वेष झूठ सब त्यागो तुम ।
 शास्त्र गुरु कोई जरूर करलो, येही सलाह हमारी है;
 ये मत समझो कि लोक में, इज्जत जाय हमारी है ॥
 'चैत्य' शब्द के आप कहो कि, सो सो अर्थ बताते हैं ?
 कोश बताओ, नहीं तो झूठी क्यों फर्माते हैं ॥

—+—
 शेर

नाम 'दूदक' जो तुम पाया, नहीं ये सूत्र में देखा;
 जैन के नाम पर तुमने, लगादीनी है ये रेखा ।

जैन के नाम से नफरत, करी ये क्या गजब किया ?
साध मारग बना लिया, हक असली उठा दिया ।
सीख मानलो यही हमारी, क्यों सब जन्म गमाते तुम।
सबी को छोड़ो० ॥ १ ॥

जैनशास्त्रका जो कुछ रस्ता, वो सब भूल गए भैया;
मुँको बांधा पेटमें चल रहा इंजन का पैया ।
धर्म कर्म सब कूँ खो बैठे, नाचे हैं ताता थैया;
कपटका बोझा भरा बहुत है, अब नहीं तिरनेकी नैया ॥
शेर

निशीथ के चोथे उदसे दंड रखना लिख रहा;
तुम पे ये दीखे नहीं पाखंड ये कीया कहा ?
आज्ञा में धर्म है सो तुम नहीं चलते कभी;
जैन का क्या धर्म है ? घरकी खबर लीजो कभी ।
जो कुछ आज्ञा दी है जैनमें, नहीं मानी विलकुल भीखम
सबी को छोड़ो० ॥ २ ॥

वार गुणे अरिहंत विराजे, पाठ कहां तुम दरसाया;
मन कल्पित सब पंथ चलाया, वक्ते हो मन का भाया ।

भाष्य चूर्णि निर्युक्ति टीका, अर्थ से चित्त चुराया है।
चोरी कीनी देव गुरु की, ये सब धब्बा खाया है ॥

शेर

सूँह तो पाटे से बँधा और कान में डोरा दिया;
दैत्य का सा रूप कीया, खास बाना धर दिया ।
प्रतिमा से नफरत तुम्हें, तसवीर क्यों खिचवा रहे;
तसवीर को खिचवा रहे, ये क्या गजब करवा रहे ।
जैन शास्त्रका रस्ता छोड़ा, न्यारा झंडा गाड़ा तुम ।
सर्वा को छोड़ो ॥ ३ ॥

भगवती सूत्र का शतक बीसमा

जंघाचारण और विद्याचारण;

करी वंदणा उन प्रतिमा की, दोनों लीनी जाके सरण ।
जीवाभिगम में विजयदेव ने, पूजा प्रतिमा की कीनी;
विजयदेव के अधिकार में, सतरह तरिया से कीनी ॥

शेर

विजयदेव के पूछने पर देवतों ने ये कहा:—
‘तुमने जो पूजा करी कल्याणमंगल ले रहा ।’

प्रश्नव्याकरण के पाठ में 'पूजा' अहिंसा नाम है;
 पूजा अहिंसा जब कही फिर, हिंसा का क्या काम
 और बहुत से प्रमाण देखो, सोच समझ हठ छोड़ो तु
 सभी को छोड़ो ॥ ४ ॥

गजल (५)

देख सतजुग निबल राजा
 जंग कलजुग ने ठानी है;
 हुआ है पंथ इक ऐसा,
 दया बिलकुल न मानी है (टेर)
 बने हैं पात्र साधुजी,
 देवों जो सब हमें दीजो;
 नहीं देना किसी को कुछ,
 यही एक बात ठानी है ॥ १ ॥
 अगर मारे कसाई जों,
 कहीं बकरे को आकरके;
 बचाओ मत कहीं उसको,
 यही उनकी कहानी है ॥ २ ॥

[१३]

अगर गैया जलै घर में,
किसी के, जलने दो उसको;
अठारह पाप जो सेवे,
जिसे गैया वचानी है ॥ ३ ॥

खायेगी घास और पानी
करे मैथुन की तैयारी;
जने वचा कहीं वच्ची,
वे भी ले घास पानी है ॥ ४ ॥

लगेगा पाप उसही को,
कि जो इसको वचायेगा;
तेरेपंथी का ये मत है,
यही उनकी निशानी है ॥ ५ ॥

नहीं कुछ शास्त्र में समझे,
लिफाफा कोरा है बिलकुल;
दया से है उन्हें नफरत,
पाप में देह सानी है ॥ ६ ॥

समझलो बात सबे उनकी,
 कि क्या विद्या कमाई है;
 असल रस्ते को खो बैठे,
 नरक की बात ठानी है ॥ ७ ॥



गजल (६)

तेरापंथी के साधुजी,
 ये क्या तुम बात गाते हो ?
 बनाये सूत्र जिन आगम,
 उन्हें चूका बताते हो (देर)
 दिया था दान बरसी का,
 अगर कोई भी आजावे;
 लिनी दीक्षा व जंगल में,
 चले जाना बताते हो ॥ १ ॥
 विप्र वन में भी जा पहुँचा,
 वस्त्र आधा उसे दिया;

इसीसे दुःख उन पाया,
और चूका दिखाते हो ॥ २ ॥

करी सूर्याभने पूजा,
तरह सतरे से प्रतिमा की;

भवान्तर मोक्ष वतलाई,
लिखी जब क्यों छिपाते हो ? ॥३॥

करी द्रौपदि ने जो पूजा,
कहो मिथ्याती तुम उसको;

लिया समकित कहां उसने,
उसे क्यों नहीं बताते हो ॥ ४ ॥

अगर गाड़ा चला आवे,
निचे वचा जो मरता हो;

कहो साधु वचावे नहीं,
ये क्या तुम गीत गाते हो ? ॥ ५ ॥

दरद श्रावक के चलता हो,
कि साधु हाथ नहीं फेरे;

[१६]

नजीर दीनी है जो तुमने,
ये दिन में रात लाते हो ॥ ६ ॥

रोग सबही को लगता है,
कि साधु साफ ही कहदे;
जहांपर वैद बैठा हो,
वहां तुम क्यों न जाते हो ? ॥

मगर बच्चा है लावारिस,
जभी गाढे से वो मरता;
बचाना तुम मना करते,
वहां क्या पाप लाते हो ? ॥ ७ ॥

लगाते हो यही फिक्रा,
हमें क्या गर्ज दुनिया से ?
लिखी होगी जैसी जिसकी,
वैसी तुम मोत गाते हो ॥ ८ ॥
पूछे हैं अब तुम्ही से ये,
लगे कोई रोग जब तुमको;

यही फिक्का पढ़ो हरदम,
दवा क्योकर कराते हो ? ॥ ९ ॥

जीव अपना सा सब देखो,
नहीं दीखे तो हमसे कहो;
दीया हम दिनमें जोरेंगे,

आप चश्मा लगाते हो ॥ १० ॥

गजल (७)

गुरु कपटी करे कोई,
नरक पहिले समझलेना;

धर्म और कर्म सब छोड़ें,

दया का कुछ पता है ना (टेर)

मजब तो बहुत से देखे,

मगर ये आज ही देखा,

पता लगता नहीं इसका,

कि इसको क्या मजब कहना ॥ १ ॥

रहम रखते नहीं कुछ भी,

बने जल्लाद ही बैठे,

[१८]

कृथा सब कत्ल की गावे,
सुनो तो जाके सुनलेना ॥ २ ॥

अगर मारे कोई किसको,
उसे जाकर बचावे जो,
उसे ही पाप लागेंगे,
अठारे को समझ लेना ॥ ३ ॥

अगर गरदन किसी की पे,
चले तलवार चलने दो;
जले जो आग में कोई,
इन्हें कोई मत बचा लेना ॥ ४ ॥

मती भूखों को दो भोजन,
मती दाने कबूतर को,
मती प्यासे को दो पानी,
देओ जो सब हमें देना ॥ ५ ॥

मती गायों को दो चारा,
मती नंगों को दो कपड़ा,

अगर दोगे कहीं जो तुम,

हमारा हुक्म है कि ना ॥ ६ ॥

कहीं देना पड़े दक्के,

दवावट से किसी की से,
'तस्स मिछामि और दुकडं'

यही एक मंत्र पढ़देना ॥ ७ ॥

गती नीचीको पायेंगे,

संग भक्तों को लीने हैं,
चलो भाई संग सब श्रावक,
हमें कुछ रोटी दे देना ॥ ८ ॥

खबर ये कुछ नहीं उनको,

कि क्या रोटी वहां रक्खी है !
दीया हो यहां किसीको कुछ,
तो वहाँ जा करके लेलेना ॥ ९ ॥



[२०]

दोहा

तेरापंथी साधजी, रिस मत हूजो देख ।
जैसी पोथी आपकी, वैसो कीनो लेख ॥
ये तो थोड़ी सी बनी, आगे बनरही ओर ।
भोजन थारी भर रही, कीनो पेलो कोर ॥



JAINISM—IN EUROPE

Alexander Gorden's opinion
General precepts,

BY

TAPSIWJI SRI KEWAL RISHIJI AND MUNI
SRI AMOLAKH RISHIJI

“Quoted from *Gain Hitechhu*.”

PUBLISHED BY,

LALA MANCHAND PRAGRAJ DADRIWALA,
Secunderabad Deccan,
Palton No. 6.

Printed at the Ambika Press,
Gowliguda, Hyderabad Deccan.

यूरोपमें-जैन धर्म

तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी और
बालब्रह्मचारी मुनिश्री अमोलख ऋषि
जी के सहोधसे.

'जैनहितेच्छु' मासिक पुस्तकसे ग्रहणकर

सिकन्दरावाद (दक्षिण हैदरावाद)

पलटन नं० ६ निवासी

लाला-मामचंद परागराज दादरीवालेने

प्रसिद्ध किया

मूल्य-जैनस्विकार

वी० २४४१, विक्रम १९७१, इस्वी १९१४

श्री अंबिका प्रेस, गौळीगुडा, हैदरावाद (दक्षिण)

प्रस्तावना

“सत्यमेव जयते”

जो सच्चा होता है वो सदा सच्चा ही बना रहता।
 और वो सत्य प्रेमीजनों को प्राप्त भी होता है,
 वे वो प्राणोंसे भी अधिक प्यारा कर अङ्गीकार
 करते हैं, कदापि कोई उसे असत्य के परदेसे छि-
 पौ तो वो छिपता नहीं है, थोड़े ही काल बाद स-
 प्रेमी सज्जनों उस परदे को अलग कर सत्यकी
 यं प्रकाशी रश्मि को सर्व के दृष्टिगत करते हैं-
 ससे वो सत्य सदा जयवन्त बना ही रहता है, इ
 आर्य्य भूमण्डलमें पराचीन कालमें जैनधर्म-
 यमान्य तों क्या? परन्तु सर्वमान्य अद्विती-
 न रहा था, वो अर्वाचीन (मध्यकाल)में का-

लादि के प्रभावसे मन्द प्रकाशी होने लगाया, उसे पुनः सत्यप्रेमी जनोंने प्रकाश में लाने जो तब हा मन से पर्यत्न किया तो वो अभि पहिले की तरहही प्रकाश मय होने लगाहै, यह देखे सुझे बडाही हर्ष होनाहै कि सत्यहै—'सत्यमेव जयते'

इस समय में इस हिन्दभूमि से भी अधिक प्रकाश विद्याका युरोपादि क्षेत्रों मे होताहुया प्रत्यक्ष जाना जाताहै, पश्चिमत्य विद्वानों सत्यके शोकीन बन जोजोविशेष सत्यसमय उनको जाननेमे आताहै उसे बडेही प्रेमपुर्वक स्वीकार करने लगेंहैं: जिसका एकपूरावा अमदावादनवासी भाइवाडीलाल मोतीलालशाह कीतरफसे प्रसिद्ध होता "जैन हितेच्छु" मासिक पुस्तक के १५वें वर्ष के १२ वे अंक में नरेदृष्टि गांचर होने से में

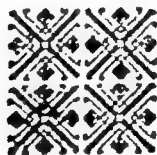
रा मन बडाही हर्षितहुवा, और इसका विशेष
 प्रसार लाभका कारण जाण गुजराती भाषा में
 छपेहुवे अर्थकों हिन्दी भाषा में बना कर प्रसिद्ध
 करने केलिये दिल्लीजिल्लेके दादरीग्राम के निवा-
 सी धर्मप्रेमी लाला रामचन्द परागराज कि जो
 अभी सिकन्द्राच की छटे नंबर कि पलटन में का-
 रकूनहैं उनके सुपरत किया, उनोंने इसे सभार स्वी
 कार छपवाकर सत्य धर्मर्थियों को जो असूल्य
 लाभदिया है, इस केलिये उन्हे धन्यवाध दिया
 जाताहै.

अमोलऋषि



अलेकझान्डर गॉर्डन, नाम के एक पाश्चात्य विद्वान महशय जैनधर्म का स्वीकार कर जैनधर्म के सम्बन्ध में कटाक्ष लिखनेवाले "मेन्चेस्टर गार्डी अन" पत्र के एक लेखकने "धीवेजीटेरीअ नमेसेन्जर अेन्ड हॅल्थ रिव्यु" नामके पत्रद्वारा एक बहुतही गंभीर और बोधकर्ता जवाब प्रगट किया है वो अक्षरसः यहां प्रगट करनेमे आत है.

वाडीलाल मोतीलाल शाह



The Jains of India as Vegetarians



By Alexander Gordon.

हिन्दूके जैनो वनस्पत्याहारी तरीके
लिखनेवाले-अलेकझानुर गॉर्डन

A short time ago reference was made in the Manchester Guardian's "Miscellany" column to the Jains of India, who are described as "heretical and ultra-humanitarian sect of Hinduism," and also that "its founder was contrary with Buddha.

थोडेदिन पहिले 'मैन्चेस्टर गॉर्डन' पत्र
परचुरण विषयोंमें हिन्दू के जैनो के सम्बन्ध

इसारा किया था, और जैनों को पाखण्ड मतवाले तथा जीवदया के सिद्धान्त को हृदसे ज्यादा तान के लेजानेवाली हिन्दु धर्म की एक शाखा रूप बताये थे, और ऐसालिखा था कि-जैनधर्म के स्थापक बुद्धके समकाल में हुवे हैं.

These words suggest a most adverse criticism, particularly from the Vegetarian point of view, which is my reason for sending this article to the Vegetarian Messenger.

इन शब्दों में बहुत वे वाजवी टीका करने में आइ है, खासकर के वेजीटेरीयन दृष्टिविन्दु से तो यह टीका बहुतही विपरीत है, और इसके लियेही मेरा यह लेख वेजीटेरीयन मेसेन्जर में भेजा है

Regarding the statement, "its founder was

contemporary with Buddha" it will perhaps interest some of the many Messenger readers to know that Jainism was thoroughly established as a religious and philosophical system many years before the advent of Buddha. According to the teachings of the Jains, the universe is for the evolution of all living beings, and consequently all forms of life are regarded as sacred by them—"live and let live" being their guiding principle. The ideal of the Jain philosophy is the physical, mental, moral and spiritual perfection of man. This is the essential goal of every living being, hence the Jain's great respect for all manifested forms of life, and such an ideal is embodied in one of their greatest sayings "Ahimsa Paramo Dharmah"—"Noninjury to life is the highest religion." "Ahimsa (not to kill) is the first of the five principles of morality in Jainism. Compassion is the root of all virtue to the Jains consequently all their affairs of life are based on the principle of "Daya" (love.) They

have an intense detestation towards any form of blood—shedding, because any such degrading action disturbs the conditions to ensure the right progress of the soul in the course of its spiritual evolution.

“जैनधर्म के स्थापकों बुद्धके वक्तमेंथे” इस कथन के सम्बन्ध में इस पत्र के कितनेक वांचनेवालों को वाकैफ करना अच्छा होगा कि बुद्धके बहुत वर्षों पहिले जैनधर्म और जैनदर्शन सम्पूर्ण तौरसे जमाहुवा था, जैनधर्म का शिक्षण ऐसा है कि इस विश्वके सर्वजीवों की उत्क्रान्ति (उंच दिशा प्रप्तकरने) केलियेही है, और इससे जैनधर्म सबजाति के जीवों को पवित्र समझते हैं, और उनका मुद्रालेख “तुम जीतेरहो और दूसरों को जीनेदो” ऐसा है, शारीरिक, मानसिक, नैतिक औ

र अध्यात्मिक सम्पूर्णता येही जैनफीलसुफी की उत्कृष्ट भावना है, हरेकजीवों का खास लक्षविन्दू भी येही माना गया है, और इसी सेही जैनों तनाम व्यक्तजीवों को बडी मान दृष्टि से देखते हैं, और "अहिंसा परमो धर्मः" ऐसे उनके महान् सूत्रमें यह भावना रक्खी गइ है, किसी भी जीतेहुवे प्राणी को मारनेसे के इजा करनसे हिंसा होती है, क्रोध लोभ काम गर्व और प्रमाद (वेफिकरी) के कारण से मनुष्य दूसरे जीवोंकी हिंसा कर डालता है, परन्तु जोवो आपनी आत्मा पर ऐसा अंकुश रक्खोकि आर्थात् जो ऐसी तरिका 'संयम' करेकि-जिससे बिकारों उसपर कीसी प्रकार की असर कर सकें नहीं, तो वो अहिंसा को प्राप्त करता है,

To kill or injure any living being is to commit "Himsa" When man is governed by wrats, greed, lust, pride and carelessness he is prone to kill other living beings, which, from the Jain standpoint is committing "Himsa," but if man controls himself so that he is not dominated by passions, he embraces "Ahimsa." The Jains teach that the spiritual evolution of man is utterly impossible whilst he kills, or ever injures other living beings; thus they strongly assert that those who injure others injure themselves also. To the Jains it is, therefore, obvious that when a man kills another being and eats its flesh he spiritually generates heartlessness before he kills the other living being

जैनों कहते हैं कि दूसरे जीते हुए प्राणी को मारना किंवा इजा करना जहाँ तक चल रहेगा वहाँ तक मनुष्य की आत्मिक उत्क्रान्ति (SPIRITUAL EVOLUTION) होना बिल्कुल ही असंभव

है; और इस शिक्षण के आधारसे वीचजन देकर कहें
 तहें कि-जो दूसरों को इजा करता है वो उसके द्वा
 रा अपनको भी इजा करता है, जैनों को यहवा
 न स्पष्ट-खुली समझ से आती है-जो मनुष्य दूस
 रे प्राणी को मारता है, और उसका मांस खाता
 है उस मनुष्यका आत्मा निर्दय होजाता है!

Those who argue that man is superior to the animals, because of a mistaken belief that they are for his sole use, make a tragic mistake they are not aware of the fact that through thinking such actions which involve the killing of animals for the purpose of gratifying a depraved sense of taste, they are generating most harmful conditions which retard not only the spiritual development of the victim, but their own spiritual evolution. All flesh eaters, by their very sense of taste, literally regard soul and matter as one because the eating of a dead body cannot in the

slightest degree benefit man's souls. An attribute belonging to a matter cannot be converted into an attribute of soul, and vice versa, for tangibility, taste, smell, colour, are attributes of matter and cannot become attributes of soul. Hence the jain's practise Vegetarianism in a very strict sense, even to the point of not unnecessarily killing, with intent, any insect. Extreme as this ideal may be to the Western mind, I understand the late James Allen, of Ilfracombe, founded a brotherhood the members of which literally carried out this principle as strictly as possible.

“जानवरों मनुष्यों केलियेही हैं” ऐसीभूल से भरोहूइ मानता के आधार से जो ऐसी दलील करतेहैं कि-मनुष्य जानवरों से श्रेष्ठहै, वो एकक रूणा उत्पन्न होवे ऐसीभूलकरतेहैं, उनको इससत्य का भान नहीं है-उनके कलुपित जिभ्याके स्वाद केलिये प्राणियों को मारने का विचार मात्रकरने

से भी वो ऐसा घातिकी संयोग उत्पन्न करते हैं कि-वो संयोगो उनके भोगमें आतोहुवे प्राणी की तैसेही आपकी आत्मिक उत्क्रान्ति को इखल करते हैं, सब मांस आहारीओं जिभ्या सवादके कारण से आत्मा को और जडपदार्थों को एक रूप में मानते हैं; परन्तु जडपदार्थों का गुण कभी जीव का गुण बन शक्ताही नहीं है, और जावका-गुण सो जडपदार्थ का गुण बनशक्ता नहीं है, कारण कि-स्पर्श, गन्ध, रस, रंग, सब जडके गुणों हैं और वो गुणों कभी आत्माके गुणबनशक्ते नहीं हैं, इसलिये जैनों खुस्त बनस्प त्याहारी पना पालते हैं, यहां तक कि-वो किसीछोटेसे प्राणीको भी खास कारण सिवाय और इरादा पूर्वक मारते

नहीं हैं, यह भावना भलांही पश्चिम के लोको को हृदसे ज्यादा आलुम होवो परन्तु में जानताहूँकी इल्फ्राकोम्य के वतनी स्वर्गस्थ जेइम्स अलनेस्था पन क्रियाहूवा "बन्धुसामज" के सभासदीं येही सिद्धान्त बनसके उतनी चीवट-खांतसे पालतेथे-

The Jains teach that the killing of animals involves the hindering of the evolution of the killer and killed on the path of the spiritual progress of all souls. Such is the foundation of the Jain religion, and to its true followers no morality, no religion, is higher than the precepts of Ahimsa, therefore the rightly claim to be absolute believers in the universal Brotherhood of all Living Beings. "Thou shalt not kill" is found in almost every known religion, and when its full import is acknowledged and applied to all living beings in the sense of the term "Do unto others as you would that they should"

do to you," there will be found the Jaina Doctrines of Ahimsa, which is the bases of all religious ideals on account of its being the root cause of all good in the world, and which also comprises all virtuous actions and moral principles of all the religions of the world. Thus, in practising the Jain principle of Ahimsa, all Vegetarians pay homage to this Highest and Purest Principle of Virtue.

जैनधर्म ऐसा शिक्षण देता है कि प्राणियों को मारने से मारने वाला और मरने वाला दोनों की आत्मिक उत्थिति में दखल नहीं चढ़ता है, जैनधर्म का पाया (नीम) ऐसा है, और इस धर्म के अनुयायियों अहिंसा व्रत करते किसी भी नीति या किसी भी धर्म को महान् गिनते नहीं हैं, इसलिये प्राणी मात्र के सर्वजनिक 'बन्धु मण्डल' के सच्चे सच्चे ज्ञान ने वाले तरीके का उनका दावा वाज-

वी है. 'अहिंसा करना मत' ऐसा (वाइयलका)
 शिक्षावचन प्रायः सब प्रसिद्ध धर्मों में देखने में
 आता है, और जिसवक्त इस शिक्षावचन का गु-
 प्त-रहस्य स्वीकारने में आता है और सब प्राणि-
 यों पर लगाने में आता है उसवक्त, "जो चलन तु
 मारे लिये होता हुआ देखने को, तुम चहाते हो, वै-
 सा ही चलन दूसरे के साथ करो" ऐसे (क्राश्रिय
 न धर्मके महावाक्यमें जैनधर्मका 'अहिंसा' शिक्ष-
 ण छिपा हुआ मालुम पडता है 'यह अहिंसा शि-
 क्षण ही सब धर्मिक भावना का पाया है. कार-
 ण कि-दुनिया के सब अच्छे काम इसमे ही होते
 हैं. और दुनिया के तमाम धर्मके सब नैतिक सि-
 द्धान्तों तथा सदुणी कृतव्यों का इसीमे समावेश
 होता है. इस से समझ में आवेगा कि जैनांक अ-

हिंसा सिद्धान्तके पालन करने में सबवजीदेरी
अनो [वनस्पति आहारियों] मात्र सर्वोत्तम औ
र पवित्र में पवित्र सद्गुणों के सिद्धान्तों को ही पू-
जते हैं.

A well-known doctrine to be found in the religions of the East is that of re-birth, and it is also found in the philosophy of the Jains. In order that man may continue to live he is obliged to destroy life, but the less and lower manifestations of life he destroys, the less harmful Karmas he creates. This is the foundation of the very strict Vegetarian rules of the Jains who teach that there are eight classes of energies [karmas] unnatural to the pure soul. To reduce the activities connected with these karmic energies is the Jain's object in life, and following up

the principle of Ahimsa, hospitals for old and maimed animals have been erected in many towns and cities in India for these creature to be fed and carefully tended until the time of their natural death.

पहिले के धर्मों में पुनर्जन्मों का सिद्धान्त प्रसिद्ध है, और यह सिद्धान्त जैन फाल्गुनी से भी है. जीवन निश्चय के लिये मनुष्यों से एक या दूसरे जीवोंकी हिंसातो होजाती है, परन्तु जितने कमी प्रमाण में हिंसाहोवै, और ज्योंकमी इन्द्रियों वालेजीव की हिंसा से चलासकें तैसेक. सो नुकसान कारक कर्म बन्ध को कर्ता होताहै. जैनों के चुस्त वेजीटेरीअन कानूनों का पायाय ह हैं, वो ऐसा शिक्षण देतेहैं कि-आठप्रकार के कर्म हैं वो गृहात्मा को लगते नहींहैं, जिससं क-

संबन्ध होवे ऐसी प्रवृत्ति जैसे बने वैसे कमी करनी, येही जैन जीवन का आशय है. अहिंसाके सिद्धान्त को अनुसरके-जैनोंने हिन्दके बहूत से शहरोंमें बुड़े और अपङ्ग जानवरों के लिये पींजरापोलों का स्थापन किया है. वहां ऐसे जानवरों को खान पान कराने में आता है और छुद्रती रीत से मृत्यु आवे वहां तक उनकी बरोबर बरदास उठाने में आती है.

Also, their institutions, manners, customs, worship and ceremonial are based upon the absolute recognition of the fact that non-injury is the highest religion, with the result that Vegetarianism in the strictest sense of the word is one of the chief tenets of Jainism, which is primarily a religion of the heart. It is clear that this religion

of the Jains is built up upon love, and it can truly be said of them that they have fully realised the practical way of leaving the "Christ-like" life as presented to the Western world in the great seer Swedenborg's statement—

इतनाही नहीं परंतु जैनों कि विविध संस्थाओं रीवाजों रीत भाँत पूजाविधि और दूसरी विधियों सब अहिंसा येही परम धर्म है। ऐसे सिद्धान्त के पाये के ऊपरही रचाहुवा है, इसके परिणाम से चुस्त वेजीटेरीअन पना यह जैनधर्म का मुख्य सिद्धान्त होगया है, और येही धर्मप्रेम के पाये परबन्धाहुवा है, और उनके सम्बन्ध में सत्यतासे कहसक्ते हैं कि — "क्रिस्ट जैसा जीवन, पश्चिम के लोकों को महान् गुप्तदृष्टा स्वीडन बोर्डे इन शब्दों में चताया था।

"जीवन का धर्म यह है कि सयका भलाकरना"

VEGETARIANISM AND
TENDER-HEARTEDNESS
Towards Living Beings.
AUM.

अहिंसा उपदेश के दाखले

1 Man is to treat the dumb animals with kindness: "A righteous man regardeth the life * of his beast." (Bible: Prov. xii: 10)

(१) अर्थात्-मनुष्यों को उचित है कि अवाचक (मुके) प्राणियों के साथ दयालुता का वरताव करना चाहिये, नेक अच्छे मनुष्यों को अपने पाले हुये पशुका भी ख्याल रहता है. [बाइबल]

2 Animals are not to be slighted. (Bible Eccles. iii: 18, 19, 20, and 21.)

(२) अर्थत्-जीवोंकी हिंसा नहीं होना चाहिये [बाइबल)

3 "Thou shalt not kill." (Bible: Ex. xx: 13)

(३) अर्थत्-त्वं हिंसा मत कर (बाइबल)

4 "Ma himsyat sarva bhutani" i. e. Tor-
ture not any living being. (Veda Sruti.)

(४) - "महिंसात् सर्व भूतानि" किसी भी प्रा-
णी को मारो मत (वेदश्रुति)

5 'A tmavat sarva bhutani yah pasyati sa
pasyati' i. e. He who looks upon all living beings
like himself, sees God. (Veda Sruti.)

(५) "आत्मवत् सर्व भूतानि पश्यति सः पश्यति"
अर्थात्-अपनी आत्मा समान सब जीवोंको जो
देखताहै. वोही आँखोंवालाहै [वेदश्रुति]

6 "Ahimsa paramo dharmah" i. e. Cessation
from torture (to living beings) is highest religion
(of man)—(Upanishad.)

(६) "आहिंसा परमो धर्मः" अर्थात् परमधर्म

वोही है कि जहां किंचित मात्र हिंसानहो.

7 "Prana dauat param danam na bhutam na bhavishyati" i.e. There has not been nor will be a greater gift than the gift of life *(Bhishma-charya: Mahabharat)

(७) प्राण दानत् परम दानम् । न भृतो न भविष्यति, अर्थात्-प्राणदान देने के जैसा दान और नहुवा और नहोगा [भीष्माचार्य-महाभारता]

8 "I observe the precept to refrain from destroying the life* of beings." BudahistDharma

(८) अर्थात्-हिंसा नहीं करने की शिक्षा को मैं मन्नन करता हूं। (बौध धर्म)

9 Intoxicating liquors and drugs are prohibited. I observe the precept to abstain from using intoxicants." (Buddhist Dharma)

(९) अर्थात्-नशा पेदा करने वाला पानी भौ-

र दवाइ कि सनाहै नशा नहीं करने, काशिक्षा
में मनन करताहू [बौध धर्म]

10 Love and do good to all mankind alike without difference of caste, colour or creed. All are equally loved by God." A new commandment I give unto you, that ye love one another; as I have loved you, that ye also love one another. Bible: St. John xiii. 34.)

(१०) अर्थात्-सर्व मनुष्यों के साथ प्रेम और मेहरवानी का धरतावा कर, जात रङ्ग इत्यादिका भेद नरक्ख कर इश्वरका सबोंपर एकसा प्यारहै यह उमदा हुकम में तुझेदेताहू कि तूं सबके साथ प्यार कर, जैसामें तेरेसे प्यार करताहू ऐसीतरह तूंभी सब के साथ प्यारकर.

And when you spread forth your hands, I will
 bind my eyes from you, yea, when ye make many
 prayers, I will not hear your hands are full of
 blood -[HUSIA.]

अर्थात् ईश्वर कहते हैं जिस वक्त तुम [विनंति करने के
 लिये तुमारे हाथ ऊंचे करोगे उस वक्त मैं मेरी आँ
 खों तुमारी तरफ से दूसरी तरफ फिरा लेखुंगा
 और विनंति पर मेरी विनंति करोगे तो भी मैं
 ध्यान न देऊंगा, क्योंकि तुमारे हाथ (जीवों को
 धारने से) रक्त-लोही से भरे हुए हैं (हुसीया शा
 ह्जका आठवा अध्याय)

The true spirit of religion comforts as well as
 comprises the soul.

अर्थात्—सच्चे धर्मिष्ठ पन से आत्मा को दिला
 सा और शान्ति मिलती है वासर.

Religion what treasures untold, reside in that
 heavenly word

More precious than silver and gold all this
 earth can afford.

र
में
wi
ar
I
ha
B

अर्थात्—“धर्म” इस स्वर्गीय शब्द में कितना
अकथ्य खजाना समाया हुआ है, सोना रूपा
दि पृथ्वी के सर्व पदार्थों से भी बहुत मुल्यवाना
है।

It is better to be unborn than untaught; for
ignorance is the root of all evils

अर्थात्—नहीं पढ़ने से नहीं जन्मनाही अच्छा
है, क्योंकि—अज्ञानताही दुःखों का मूल है।

Our passions play the tyrants in our breast
pers.

अर्थात्—हमारे मनोबिकारका हमारे दिलों पर
साम्राज्य रहता है।

Have your conscience as your guide.
तुम्हारी सद असद बिवेक बुद्धि को अपना
रहबर बनाओ।

Do unto others as you would be done
others should do.

दूसरोंके साथ ऐसा बरताव करा जैसा के तुम
तुम्हारे साथ दूसरोंका बरताव हवा चाहते हो।

